

परंपरा और प्रगति संचेतना



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य केवल विद्या देना नहीं, बल्कि ऐसे चरित्रवान नागरिक तैयार करना है जो राष्ट्र का गौरव बढ़ाएँ। यहाँ शिक्षा के साथ संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रीय भावना का भी विकास हो। युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भर और आत्मगौरव से परिपूर्ण बनाना ही मेरा स्वप्न है।”



प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी
कुलपति



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय द्वारा विश्वविद्यालय की बौद्धिक व सांस्कृतिक विरासत, शैक्षणिक व अनुसंधान उपलब्धियों तथा अन्य सकारात्मक पक्षों के प्रभावी प्रस्तुतिकरण एवं व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु एक हिन्दी पत्रिका 'संचेतना' का प्रकाशन आरंभ किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के उल्लेखनीय कार्यों को विविध हितधारकों तथा जनसामान्य तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि अपनी स्थापना के मूलभूत लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु बीएचयू की प्रगति तथा सफलता गाथा से इससे जुड़े सभी लोग अवगत हो सकें। इस कार्य में 'संचेतना' एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित हो सकती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल होगी। संचेतना की संकल्पना, सम्पादन तथा इसे साकार रूप प्रदान करने में शामिल सभी सदस्यों को मैं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

अजित चतुर्वेदी

(अजित कुमार चतुर्वेदी)

संपादकीय..

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय सम्पूर्ण भारत का शैक्षिक और सांस्कृतिक दीपस्तंभ है। महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की दूरदर्शिता और अथक परिश्रम का प्रतिफल यह विश्वविद्यालय आज एक ऐसे ज्ञान-तपस्थान के रूप में खड़ा है, जो केवल शैक्षणिक डिग्री पाने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज के निर्माण को आकार देता है। संचेतना पत्रिका के माध्यम से हम बीएचयू की उस परंपरा और प्रगतिशील सोच को रेखांकित करना चाहते हैं, जिसने शताब्दी से अधिक समय से देश को विचार, विज्ञान, कला और संस्कृति के क्षेत्रों में अनगिनत रत्न दिए हैं। चाहे चिकित्सा विज्ञान हो, इंजीनियरिंग, समाजशास्त्र, साहित्य, या दर्शन – हर क्षेत्र में बीएचयू के विद्यार्थियों और विद्वानों ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आज जब भारत नए विश्व में एक प्रमुख छवि व स्थान में दिखता है, बीएचयू की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यहाँ के छात्र-छात्राएँ न सिर्फ तकनीकी और व्यावसायिक दक्षता प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिक मूल्यों और रचनात्मक सोच से भी समृद्ध हो रहे हैं। यह विश्वविद्यालय विविधता में एकता का जीता-जागता उदाहरण है, जहाँ देश के कोने-कोने से आए विद्यार्थी मिलकर एक साझा सांस्कृतिक और शैक्षिक धरोहर का निर्माण करते हैं। संचेतना पत्रिका विश्वविद्यालय तथा उसके सदस्यों की इन्ही विशिष्टताओं तथा विकासात्मक यात्रा को रेखांकित तथा प्रसारित करने की सद्दिच्छा का परिणाम है। इस पत्रिका के माध्यम से हम आपके सामने विश्वविद्यालय की उपलब्धियाँ, छात्रों की सफलता की कहानियाँ, नए अनुसंधान, और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य है कि यह पत्रिका न केवल सूचनाओं का आदान-प्रदान करे, बल्कि हमारी समृद्ध परंपरा और उज्ज्वल भविष्य के बीच एक सेतु का काम भी करे।

हम आशा करते हैं कि संचेतना पत्रिका का प्रवेशांक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की गौरवशाली परंपरा और उसकी निरंतर उन्नति को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने में सफल होगा।



(अनुराग दवे)

संकेतना: परंपरा और प्रगति

विश्वविद्यालय की आधिकारिक पत्रिका

प्रथमांक: जुलाई 2025

(अर्द्धवार्षिक)

संरक्षक

प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी

कुलपति

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

प्रो. अनुराग दवे

आचार्य प्रभारी (बाह्य सम्प्रेषण)

संपादक

चन्द्रशेखर ग्वाड़ी

सहायक सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

सदस्य

डॉ. राजेश सिंह

जनसम्पर्क अधिकारी

डॉ. शिव प्रकाश त्रिपाठी

हिंदी अधिकारी

उप-संपादक

निर्मल चन्द्र

आवरण सज्जा एवं डिजाइन

मिथिलेश कुमार

संपादकीय सहयोग

आकाश जायसवाल

अंकित कुमार

प्रखर गाँधी

आदित्य कुमार गोंड

प्रतीक कुमार

आदित्य राज सोनकर

रुचि कुमारी

सत्यम सौरभ

सर्वाधिकार सुरक्षित

© सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय

प्रकाशक :

सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

वाराणसी, उ. प्र. - 221005

E-mail: probhu@bhu.ac.in

Tel.: 91-0542-2368598, 2369608

अनुक्रमणिका

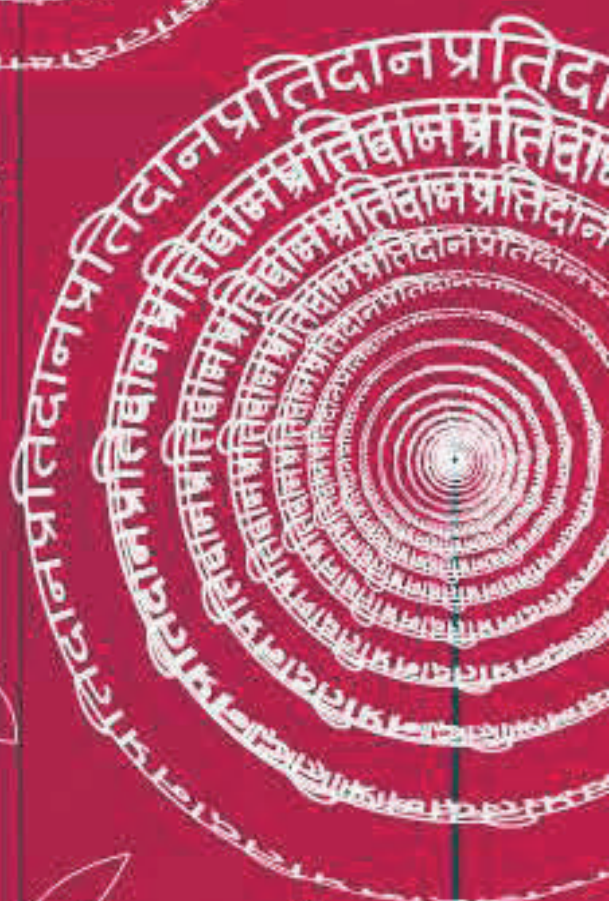
संपादकीय

विषयवस्तु सूची

कुलपति का संदेश

1. विस्तार का बिन्दु, कला संकाय : मातृ संकाय	प्रो. प्रदोष मिश्रा	6
2. बीएचयू के इस विद्यार्थी ने दी थी बिगबैंग सिद्धांत को चुनौती प्रो. जयंत विष्णु नार्लीकर: जीवन, योगदान और बीएचयू से नाता	प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे	12
3. परंपरा की नींव पर तकनीक को पंख ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार का जीवंत केंद्र सयाजी राव गायकवाड़ केन्द्रीय ग्रंथालय	डॉ. डी. के. सिंह	19
4. छात्र कल्याण की एक अनुकरणीय पहल विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक विकास के लिए छात्र कल्याण प्रकोष्ठ के सार्थक प्रयास	प्रो. अनुपम कुमार नेमा	25
5. विश्वविद्यालय में खेल सुविधाओं का विकास विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद्	प्रो. बी. सी. कापरी	32
6. प्रतिदान विश्वविद्यालय की विकास यात्रा को गति दे रहा पुरा छात्रों का योगदान	प्रो. रमेश चंद	38
7. वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन	प्रो. आदित्य त्रिपाठी	42
8. जन्तु विज्ञान विभाग की साइटोजेनेटिक्स प्रयोगशाला		50
9. बीएचयू की वह प्रयोगशाला जिसने दुनिया को दी 60 से अधिक प्रजातियाँ		54
10. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का दक्षिणी परिसर	प्रो. वी. के. मिश्रा	58
11. दीक्षांत संबोधन	श्री जय चौधरी	64

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों, कथनों एवं तथ्यों के लिए समस्त उत्तरदायित्व लेखक का है।



ह

अ

श

का

पं

त

धा

त

संचेतना

विस्तार का बिंदु

कला संकाय: मातृ संकाय



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का कला संकाय भारत की अकादमिक और सांस्कृतिक विरासत का एक प्रमुख प्रतीक है। यह संकाय न केवल विश्वविद्यालय का सबसे प्राचीन संकाय है, बल्कि अपने विशाल स्वरूप के कारण भी विशेष महत्व रखता है। इसकी गौरवशाली परंपरा बीएचयू के विकास के साथ-साथ भारत में उच्च शिक्षा के व्यापक इतिहास से गहराई से जुड़ी हुई है। सौ वर्षों से भी अधिक की अपनी समृद्ध यात्रा में कला संकाय ने राष्ट्र के बौद्धिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक विमर्श को निरंतर दिशा प्रदान की है।

कला संकाय की जड़ें 1898 में थियोसोफिस्ट और समाज सुधारक डॉ. एनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित सेंट्रल हिंदू कॉलेज (सीएचसी) की स्थापना में निहित हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध वाराणसी नगर में स्थित यह संस्थान भारतीय संस्कृति और परंपरा को आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के साथ समाहित करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। यह उपनिवेशकालीन भारत के उस दौर में एक साहसिक प्रयोग था, जब देश में सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय जागरण और बौद्धिक स्वतंत्रता की आकांक्षा अपने उत्कर्ष पर थी। डॉ. बेसेन्ट के इस

संस्थान में नैतिक शिक्षा, भारतीय दर्शन के पुनरुत्थान और राष्ट्रीय चेतना के विकास पर विशेष बल दिया गया था। सीएचसी शीघ्र ही शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध होने लगा और देश के विभिन्न भागों से छात्र यहाँ शिक्षा प्राप्त करने आने लगे। सेंट्रल हिंदू कॉलेज के अनेक आदर्श और शैक्षिक दृष्टिकोण बाद में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा उसके अंतर्गत कला संकाय को भी विरासत में प्राप्त हुए।



1911 में स्थापित हिंदू विश्वविद्यालय समिति ने 27 नवम्बर 1914 को सेंट्रल हिंदू कॉलेज का अधिग्रहण किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना बी.एच.यू. अधिनियम संख्या XVI, 1915 के अंतर्गत हुई, जो 1 अप्रैल 1916 से प्रभावी हुआ। इसके पश्चात एक घोषणा की गई कि 1 अक्टूबर 1917 से सेंट्रल हिंदू कॉलेज को विश्वविद्यालय द्वारा पोषित एक कॉलेज माना जाएगा। इस प्रकार विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ 1 अक्टूबर 1917 से सेंट्रल हिंदू कॉलेज को अपना प्रथम अंगीकृत महाविद्यालय बनाकर औपचारिक रूप से प्रारंभ हुई। सेंट्रल हिंदू कॉलेज को कमच्छा स्थित अपनी पुरानी इमारत से विश्वविद्यालय परिसर में स्थानांतरित किया गया, जब उसकी नई इमारत 1921 में पूर्ण हुई।

इस प्रकार कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का सबसे प्राचीन संकाय है। कला संकाय को 'मातृ संकाय' कहा जाता है, क्योंकि विश्वविद्यालय के कई अन्य संकाय और विभाग इसी से विकसित हुए हैं। यह ऐतिहासिक वास्तुकला और आधुनिक सुविधाओं का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। संकाय का पुस्तकालय, व्याख्यान कक्ष और सांस्कृतिक मंच परंपरा और नवाचार के समन्वय को दर्शाते हैं, जिससे इसका विश्वविद्यालय के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान सुनिश्चित हुआ है। कला संकाय के प्रारंभिक वर्षों में संस्कृत, दर्शन, भारतीय साहित्य और शास्त्रीय अध्ययन की सशक्त उपस्थिति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारतीय परंपराओं को संरक्षण और पोषण देने के प्रति महामना मालवीय जी की प्रतिबद्धता इस संकाय की प्रारंभिक शैक्षणिक दिशा में परिलक्षित होती है। डॉ. गंगानाथ झा, डॉ. बाबू राजेन्द्रलाल मित्रा जैसे प्रतिष्ठित विद्वान और शिक्षक विश्वविद्यालय से जुड़े, जिन्होंने इसके बौद्धिक आधार की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही स्थापित, अंग्रेजी विभाग देश के सबसे प्राचीन विभागों में से एक है। जॉयगोपाल बनर्जी और आर.एस. शर्मा जैसे अग्रणी विद्वानों ने इसकी शैक्षणिक दिशा को निर्धारित किया, जो अब साहित्य, भाषा और सांस्कृतिक अध्ययन तक विस्तृत हो चुकी है। यह विभाग देश के सबसे पुराने और सबसे बड़े अंग्रेजी विभागों में से एक है, जहाँ शिक्षक विविध भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों से आते हैं और भाषा, साहित्य तथा सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में विविध पाठ्यक्रमों की पेशकश करने में सक्षम हैं। यह विभाग अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता, नवाचारी शिक्षण पद्धतियों, आधुनिक शोध और बहुलतावादी स्वरूप के कारण एक विशिष्ट स्थान रखता है। विभाग में शैक्षणिक अनुसंधान गहन, जीवंत और व्यापक है, जो भारतीय लेखन, उपनिवेशोत्तर साहित्य, लोककथा एवं जनजातीय अध्ययन, दलित साहित्य, दिव्यांग अध्ययन, अनुवाद अध्ययन और जेंडर अध्ययन जैसे विविध क्षेत्रों को समाहित करता है। बच्चों का साहित्य, सांस्कृतिक अध्ययन, पशु अध्ययन, फ़िल्म अध्ययन, भारतीय सौंदर्यशास्त्र और भाषा साहित्य भी अनुसंधान और प्रशिक्षण के प्रमुख क्षेत्र हैं।



दर्शनशास्त्र विभाग अपनी जड़ें वर्ष 1904 में खोजता है, जब यह विभाग डॉ. एनी बेसेंट द्वारा स्थापित सेंट्रल हिंदू कॉलेज में कार्यरत हुआ। प्रारंभिक मार्गदर्शकों में प्रो. अम्बिका चरण उकील और प्रो. फणी भूषण अधिकारी शामिल थे। विश्वविद्यालय

की स्थापना 1916 में होने के पश्चात दर्शन शास्त्र विभाग बीएचयू का हिस्सा बना और 1921 में नए परिसर में स्थानांतरित हुआ।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, जो बाद में भारत के उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति बने, विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के विद्वान के रूप में कार्यरत रहे और 'सयाजी राव चेरर ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन एंड कल्चर' के माध्यम से विभाग के शोधकार्य का मार्गदर्शन किया। डॉ. एस. के. मैत्रा, डॉ. बी. एल. अत्रेय, और डॉ. टी. आर. वी. मूर्ति जैसे स्वातिप्राप्त दार्शनिकों ने भारतीय और पाश्चात्य दर्शन—विशेष रूप से अद्वैत वेदांत, अरविंद दर्शन और बौद्ध दर्शन—में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभाग ने बीएचयू की पहली डी.लिट. (Doctor of Letters) उपाधि डॉ. बी. एल. अत्रेय को 1931 में प्रदान की।

पंडित मदन मोहन मालवीय ने भारतीय इतिहास और संस्कृति की समझ के लिए अरबी, फारसी और उर्दू जैसी भाषाओं के महत्व को पहचाना। इसी उद्देश्य से 1917 में उन्होंने बीएचयू में अरबी, फारसी और उर्दू का एक संयुक्त विभाग स्थापित किया। इस विभाग के पहले अध्यक्ष प्रसिद्ध कवि और विद्वान मिर्जा मोहम्मद फैज़ बनारसी बनाए गए, जिन्होंने

रूप में पढ़ाई जाती थी। अंततः 1972 में बीएचयू में उर्दू को एक स्वतंत्र विभाग का दर्जा मिला, जो विभाग के लिए एक महत्वपूर्ण अकादमिक उपलब्धि थी।

संस्कृत विभाग की स्थापना 1919 में की गई थी। इसकी स्थापना का उद्देश्य वैदिक एवं शास्त्रीय संस्कृत साहित्य के गहन अध्ययन के माध्यम से प्राच्य विद्या, संस्कृति और दर्शन की रक्षा एवं समृद्धि करना था। यह दृष्टिकोण पंडित मदन मोहन मालवीय की भारतीय परंपरागत ज्ञान परंपराओं के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से प्रेरित था। यह विभाग वेद, भारतीय दर्शन, संस्कृत व्याकरण, भाषाविज्ञान, शास्त्रीय साहित्य और काव्यशास्त्र सहित विविध विषयों में शिक्षण और शोध कार्य करता है। यह पूर्वी और पाश्चात्य विचारधाराओं के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है ताकि वैश्विक समरसता और सह-अस्तित्व को बढ़ावा दिया जा सके। यह विभाग संस्कृत ग्रंथों में निहित वैज्ञानिक और दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर विशेष बल देता है—विशेष रूप से पारिस्थितिक चेतना, सामाजिक-धार्मिक जीवन और मूल सामाजिक मूल्यों के विकास के संदर्भ में। विभाग संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार तथा इसके विशाल साहित्यिक क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

कला संकाय का हिंदी विभाग भारत के सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित हिंदी विभागों में से एक है, जिसकी स्थापना विश्वविद्यालय की स्थापना के तुरंत बाद हुई थी। हिंदी भाषा और साहित्य की कक्षाएँ क्रमशः 1920 और 1924 में प्रारंभ हुईं। इस विभाग का अग्रणी कदम पाठ्यक्रम में भारतीय और पाश्चात्य आलोचना सिद्धांतों का समन्वय है, जो समय क्रम में अन्य संस्थानों के लिए मानक बन गया। इसका अध्ययन क्षेत्र साहित्य, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान, साहित्य समालोचना और साहित्य का इतिहास है, जिसमें समकालीन प्रासंगिकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

बाबू श्याम सुंदर दास, पं. रामचंद्र शुक्ल और पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसी महान हस्तियों ने हिंदी विभाग की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. पी.डी. बड़वाल और डॉ. शिव प्रसाद सिंह जैसे विद्वानों ने पांडुलिपि संपादन और सर्वेक्षण-आधारित अनुसंधानों के माध्यम से विभाग की शोध

परंपरा को आगे बढ़ाया। यह विभाग पं. मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण से भी गहराई से प्रेरित रहा, जिन्होंने हिंदी के व्यावहारिक उपयोग का समर्थन किया। उनके प्रयासों से हिंदी को उर्दू के साथ न्यायालय की भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। यह विभाग अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षा का एक केंद्र है, जहाँ हिंदी भाषा और साहित्य के पाठ्यक्रम गैर-हिंदी भाषियों को भी प्रदान किए जाते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जापान, वियतनाम और इज़राइल जैसे देशों के छात्र यहाँ अध्ययन कर भारत की वैश्विक सांस्कृतिक पहुँच को सशक्त बनाते हैं।

कला संकाय में मराठी भाषा और साहित्य का शिक्षण वर्ष 1930 से प्रारंभ हुआ था। वर्ष 1977 में स्नातकोत्तर (एम.ए.) पाठ्यक्रम आरंभ किया गया, और 1982 में मराठी विभाग को पूर्ण रूप से स्वतंत्र विभाग का दर्जा प्राप्त हुआ। इससे पूर्व यह भारतीय भाषाओं के विभाग के अंतर्गत कार्यरत था। यह विभाग उत्तरी भारत का एकमात्र ऐसा विभाग है जो मराठी में एम.ए. पाठ्यक्रम संचालित करता है और शोध कार्य भी करता है।

पाली और बौद्ध अध्ययन विभाग, भारत में बौद्ध अध्ययन के क्षेत्र में अग्रणी विभागों में से एक है। बीएचयू में पाली भाषा का शिक्षण 1940 में संस्कृत विभाग में भिक्षु जगदीश कश्यप के प्रयासों से आरंभ हुआ, जो भारत में बौद्ध धर्म के पुनर्जागरण के अग्रदूत थे। 1952 में आचार्य नरेन्द्र देव बीएचयू के कुलपति बने। वे बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध विद्वान थे और उन्होंने विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन के विकास में व्यक्तिगत रुचि लेते हुए एक नए व्याख्याता पद की स्थापना की। डॉ. पी.एस. जैनि को पहली बार स्थायी व्याख्याता के रूप में पाली पढ़ाने हेतु नियुक्त किया गया, जो आगे चलकर बौद्ध अध्ययन के प्रसिद्ध विद्वान बने।



31 जुलाई 1982 को जारी अधिसूचना के तहत संस्कृत और पाली विभाग को दो स्वतंत्र विभागों में



विभाजित किया गया। इस के साथ ही पाली और बौद्ध अध्ययन विभाग की स्थापना हुई। विभाग में बौद्ध अध्ययन केंद्र की स्थापना यूजीसी की "भारत के युगप्रवर्तक सामाजिक चिंतक" योजना के अंतर्गत नवम योजना (2000–2005) के दौरान की गई थी। बौद्ध अध्ययन केंद्र के लिए एक नवीन प्रस्ताव को बारहवीं योजना (2013–2017) के अंतर्गत स्वीकृति मिली।

भारतीय भाषा विभाग कला संकाय के सबसे प्राचीन विभागों में से एक है। वर्तमान में इसमें तीन खंड शामिल हैं: 1943 में प्रारंभ नेपाली; 1945 में प्रारंभ तमिल और 1976 में प्रारंभ कन्नड़। तेलुगु विभाग की स्थापना 1960 में भारतीय भाषाएँ विभाग के अंतर्गत की गई थी। प्रारंभ में तेलुगु भाषा का शिक्षण एकमात्र प्रवक्ता द्वारा किया जाता था। 1961 में बंगला, मराठी, तेलुगु और तमिल भाषाओं को मिलाकर 'भारतीय भाषाएँ' विभाग का गठन हुआ। 1977 में तेलुगु अध्ययन का विस्तार हुआ एवं 1983 में तेलुगु अनुभाग को एक स्वतंत्र विभाग के रूप में स्थापित किया गया।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में इस क्षेत्र में शिक्षण और अनुसंधान प्रदान करने वाले भारत के अग्रणी संस्थानों में से एक है। इस विभाग में प्रो. सी.डी. शर्मा 'गुलेरी', प्रो. आर.डी. बनर्जी, प्रो. ए.एस. अल्तेकर और प्रो. आर.सी. मजूमदार जैसे प्रतिष्ठित विद्वान कार्यरत रहे हैं। प्राचीन इतिहास के समग्र अध्ययन की आवश्यकता को देखते हुए, इस विभाग ने 1957

में पुरातत्त्व विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।

यह विभाग धर्म, लिपिविज्ञान, आर्थिक इतिहास और पुरातत्त्व धातुकर्म जैसे विविध क्षेत्रों में भारतीय अध्ययन (इंडोलॉजी) में अपने योगदान के लिए अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। विभाग द्वारा किए गए महत्वपूर्ण पुरातत्त्विक क्षेत्रीय अनुसंधान (फिल्डवर्क) से प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक की महत्वपूर्ण खोजें हुई हैं। पिछले दशकों में विभाग को कई शोध परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है, जिनमें फोर्ड फाउंडेशन परियोजना, नरहन में यूजीसी द्वारा वित्तपोषित उत्खनन कार्य, और डीएसटी द्वारा प्राचीन खनन तथा धातुकर्म पर आधारित अध्ययन शामिल हैं।

वासुदेव शरण अग्रवाल के मार्गदर्शन में आर्ट एंड आर्किटेक्चर विभाग की स्थापना 1949 में हुई जिसे कालांतर में कला इतिहास विभाग के नाम से नामित किया गया। यह भारत के सबसे प्राचीन सांस्कृतिक एवं कला ऐतिहासिक अध्ययन केंद्रों में से एक है। कला इतिहास विभाग का विकास प्रो. वी.एस. अग्रवाल, प्रो. एस.के. सरस्वती, प्रो. राजतानन्द दासगुप्ता और प्रो. आनंद कृष्ण जैसे प्रख्यात विद्वानों के मार्गदर्शन में हुआ। भारत कला भवन में रखी गई कला सामाग्री के अध्ययन एवं शोध को विस्तार देने में कला इतिहास विभाग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।



ओल्ड सीएससी बिल्डिंग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शारीरिक शिक्षा विभाग की स्थापना प्रारंभ में 1965 में कला संकाय के अंतर्गत डिप्लोमा इन फिजिकल एजुकेशन कार्यक्रम के साथ की गई थी। 1968 में इसे शिक्षा संकाय के अधीन कर दिया गया, किंतु 1972 में प्रो. करन सिंह के नेतृत्व में यह पुनः कला संकाय के अंतर्गत लाया गया। एक समिति की अनुशंसा के आधार पर 1973-74 में बी.पी.एड. (B.P.Ed.) कार्यक्रम आरंभ हुआ, इसके पश्चात 1983-84 में एम.पी.एड. (M.P.Ed.) पाठ्यक्रम प्रारंभ हुआ, और 1986 में पीएच.डी. में नामांकन शुरू हुआ। वर्तमान में शारीरिक शिक्षा विभाग एक आधुनिक भवन में स्थित है, जो यूजीसी (UGC), एनसीटीई (NCTE), और एनएएससी (NAAC) के मानकों के अनुरूप सुविधाओं जैसे व्यायाम शरीर विज्ञान, खेल मनोविज्ञान, फिजियोथेरेपी, योग और मानव प्रदर्शन हेतु सुसज्जित प्रयोगशाला, एक समर्पित पुस्तकालय और कंप्यूटर प्रयोगशाला से सुसज्जित है।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की स्थापना 1973 में कला संकाय के अंतर्गत की गई थी। यह विभाग पत्रकारिता और जनसंचार के साथ-साथ कॉर्पोरेट संचार में पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य रोजगार को सुगम बनाना है।

संग्रहालय विज्ञान विभाग की स्थापना मई 2022 में हुई है, परन्तु संग्रहालय विज्ञान का विषय/शिक्षण 1968 में भारत कला भवन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

के रूप में शुरू किया गया था तथा बाद में इसे 1979-80 में एम.ए. की डिग्री में अपग्रेड किया गया। यह विभाग में नवीन शिक्षण, अनुसंधान और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के दस्तावेजीकरण में सक्रिय रूप से शामिल है। संग्रहालय प्रबंधन पर गहरा प्रभाव डालने वाले सामाजिक-आर्थिक कारकों की चुनौतियों का सामना करने के लिए संग्रहालय और सूचना प्रौद्योगिकी, आधुनिक प्रबंधन सिद्धांत, डिजिटल दस्तावेजीकरण, नवीन संग्रहालय विज्ञान, गुणवत्ता प्रबंधन, संग्रहालय विपणन, सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत, उद्यमिता आदि जैसे प्रमुख क्षेत्रों के व्यापक पहलुओं को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

वर्तमान में कला संकाय तीन व्यापक अध्ययन क्षेत्रों पर केंद्रित है।

प्रथम क्षेत्र के अंतर्गत कला संकाय में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व, कला इतिहास, दर्शन और भारतीय धर्म जैसे विभाग सम्मिलित हैं। ये विभाग अपने-अपने विषयों में शोध और विद्वत्ता के राष्ट्रीय केंद्रों के रूप में लंबे समय से प्रतिष्ठित रहे हैं, और इनमें अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तथा विशिष्ट विद्वान कार्यरत हैं।

द्वितीय क्षेत्र के अंतर्गत संकाय में भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के कई विभाग हैं, जिनमें शोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनमें हिंदी,

संस्कृत, और अंग्रेजी प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त, पाली एवं बौद्ध अध्ययन, बांग्ला, उर्दू और तेलुगु विभाग भी अध्यापन और शोध कार्य में संलग्न हैं। विदेशी भाषाओं के महत्व को देखते हुए एशियाई और यूरोपीय भाषाओं के अध्ययन हेतु विभागों की स्थापना की गई थी। इन विभागों में विदेशी भाषाओं, फ्रेंच अध्ययन, जर्मन अध्ययन, अरबी और फारसी के तहत 11 से अधिक भाषाओं का विभिन्न स्तरों पर शिक्षण प्रदान किया जाता है। ये भाषा विभाग न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं, बल्कि राष्ट्रीय एकता और वैश्वीकरण की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए एक विशिष्ट पहचान बना चुके हैं।

तृतीय क्षेत्र के अंतर्गत समकालीन समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप नए विभागों की स्थापना की गई है। इस क्षेत्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रम शामिल हैं, जैसे कि शारीरिक शिक्षा, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, पत्रकारिता और जन संचार। हाल ही में पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन, कार्यालय प्रबंधन, व्यावहारिक हिंदी और व्यावहारिक अंग्रेजी जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रम विकसित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त कला संकाय में पाँच प्रमुख केंद्र हैं: भारत अध्ययन केंद्र, भोजपुरी अध्ययन केंद्र, मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र, अंतर-सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र और अनुवाद अध्ययन केंद्र। ये केंद्र विभिन्न स्वदेशी और पारंपरिक ज्ञान स्रोतों के मूल्यांकन एवं उनके महत्व पर संवाद को प्रोत्साहित करते हैं।

कला संकाय न केवल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का सबसे प्राचीन संकाय है, बल्कि यह आकार की दृष्टि से भी सबसे विशाल संकायों में से एक है, जिसमें लगभग 350 शिक्षक और लगभग 7,000 छात्र अध्ययनरत हैं। यह संकाय अपनी विशिष्ट संरचना के तहत 26 विभागों में विभाजित है, जो स्नातक, स्नातकोत्तर, शोध (पीएच.डी.) और पश्चात्-स्नातक (डी.लिट्.) स्तर तक विविध शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करता है।

पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान प्रणालियों के बीच सार्थक संवाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह संकाय मानवता की समग्र समझ को विकसित करने वाले नवाचारी विचारों को पोषित करने के लिए प्रतिबद्ध है। अपनी समृद्ध बौद्धिक विरासत को सँजोते हुए, यह संकाय अंतर्विषयक शोध को निरंतर प्रोत्साहित करता है और विचार तथा व्यवहार दोनों स्तरों पर मानव स्वतंत्रता के सिद्धांतों को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है। कला संकाय की एक विशिष्ट विशेषता भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems - IKS) के प्रति इसकी प्रतिबद्धता है। संस्कृत, पाली, भारतीय दर्शन एवं धर्म, और वैदिक अध्ययन जैसे विभाग प्राचीन भारतीय ग्रंथों और दार्शनिक विचारों के

पुनरुत्थान और नवपुनर्पाठ (reinterpretation) पर केंद्रित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के परिप्रेक्ष्य में इन प्रयासों को समकालीन शैक्षणिक परिदृश्य में नई प्रासंगिकता प्राप्त हुई है।

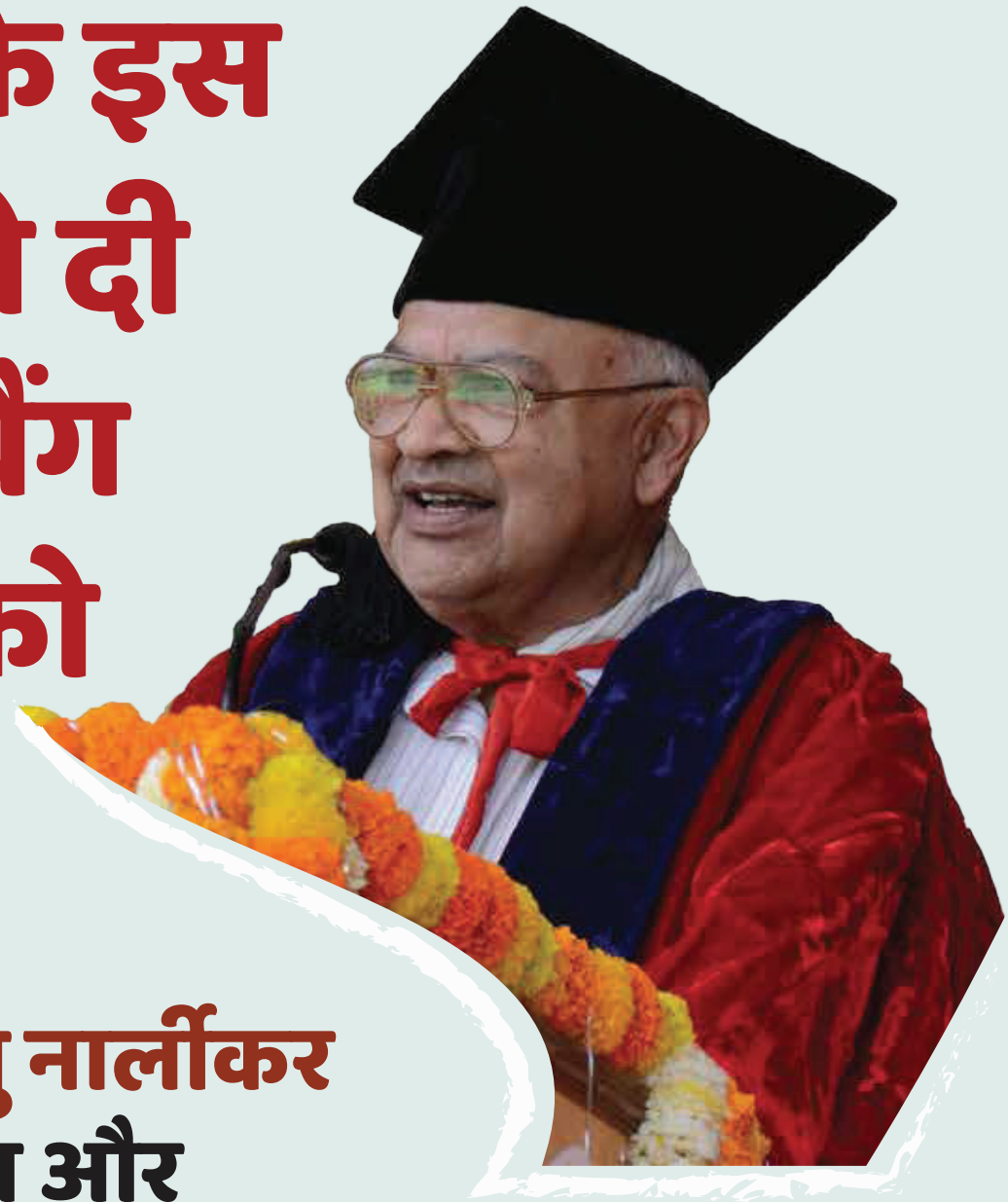
कला संकाय सही मायने में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का वह बिंदु है जहाँ से अनेक विषय, विभाग, संकाय तथा विचार का विस्तार हुआ है। इस संकाय ने अपने मूल उद्देश्य- भारतीय संस्कृति, मूल्यों और प्रगतिशील चिंतन का एक केंद्र बनने के प्रति सदैव निष्ठावान रहते हुए कार्य किया है। भारत की सांस्कृतिक विरासत की समृद्धता को सँजोते हुए यह संकाय एक गतिशील, ज्ञान-आधारित वैश्विक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकसित होता रहा है। इसकी विरासत केवल इसके पाठ्यक्रमों या संरक्षित पुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन पीढ़ियों के विद्यार्थियों में विकसित किए गए आलोचनात्मक दृष्टिकोण और बौद्धिक गहराई में भी निहित है। राष्ट्रवादी आंदोलन की भावना से जन्मे इस संस्थान ने 21वीं सदी में भी भारत की पहचान को गढ़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रो. प्रदोष कुमार मिश्र

**कला इतिहास विभाग
कला संकाय**

बीएचयू के इस विद्यार्थी ने दी थी बिग-बैंग सिद्धांत को चुनौती

प्रो. जयंत विष्णु नालीकर जीवन, योगदान और बीएचयू से नाता



भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत ने आदिकाल से ही वैज्ञानिक जिज्ञासा को प्रोत्साहित किया है। वेद, उपनिषद् और आयुर्वेद में गणित, खगोलशास्त्र और चिकित्सा विज्ञान का गहन और व्यवस्थित ज्ञान संचित है। आर्यभट्ट और भास्कराचार्य जैसे प्राचीन वैज्ञानिकों ने न केवल गणित और खगोलशास्त्र के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान दिया, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा को गौरवशाली ऊँचाइयों तक पहुँचाया। आधुनिक युग में, सी. वी. रमन, जगदीश चंद्र बोस और होमी जहाँगीर भाभा जैसे वैज्ञानिकों ने इसी बौद्धिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए वैश्विक मंच पर भारत की वैज्ञानिक प्रतिष्ठा को सशक्त किया। रसायनशास्त्र के जनक कहे जाने वाले आचार्य

प्रफुल्ल चंद्र रे विज्ञान के जन-जन तक प्रसार के प्रबल पक्षधर थे। उनका स्पष्ट मत था "जब तक वैज्ञानिक अपने ज्ञान को सामान्य भाषा में नहीं समझाते, तब तक वह विज्ञान नहीं कहलाता।" उनका यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि विज्ञान को केवल प्रयोगशालाओं और शोध संस्थानों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि आम लोग भी उसे आसानी से समझ सकें। प्रोफेसर जयंत विष्णु नालीकर इस कड़ी के शीर्ष पंक्ति में हैं, जिन्होंने इस विचार को सार्थकता प्रदान की। उनकी सरल, रोचक और प्रभावशाली लेखन शैली तथा व्याख्याओं के माध्यम से विज्ञान जनसामान्य तक पहुँचा और लोकप्रिय हुआ।

परिचय

प्रोफेसर जयंत विष्णु नालीकर (19 जुलाई 1938 – 20 मई 2025) भारतीय खगोलशास्त्र, भौतिकी और विज्ञान संप्रेषण के क्षेत्र के एक अग्रणी वैज्ञानिक थे। उन्होंने न केवल खगोल-भौतिकी और ब्रह्मांड विज्ञान में अद्वितीय अनुसंधान कार्य किए, बल्कि विज्ञान को आम जनता तक पहुँचाने के लिए भी अत्यंत सराहनीय प्रयास किए। उनका कार्य वैज्ञानिक शोध, शिक्षण और लोकप्रिय विज्ञान साहित्य, तीनों ही क्षेत्रों में समान रूप से उल्लेखनीय रहा। प्रो. नालीकर का जीवन बौद्धिक उत्कृष्टता, सामाजिक प्रतिबद्धता और व्यक्तिगत सादगी का अद्भुत संगम रहा है। वे उच्च वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संवाहक थे और उन्होंने विज्ञान को आम जनता के लिए सरल भाषा में प्रस्तुत कर समाज में वैज्ञानिक चेतना जागृत करने का कार्य भी किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) भारत की सांस्कृतिक एकता और वैज्ञानिक प्रगति का प्रतीक है। इस विश्वविद्यालय ने नालीकर को इंक्यूबेशन सेंटर की तरह शैक्षिक आधार प्रदान किया तथा उनके अंदर वैज्ञानिक चेतना और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित की। बीएचयू का परिसर, जो अपने स्थापना काल से ही सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है, ने उनके बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके पिता की विद्वता और माँ की संस्कृति के प्रति निष्ठा ने जयन्त को एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान किया, जिसमें विज्ञान और संस्कृति का समन्वय था। यद्यपि प्रोफेसर जयन्त नालीकर ने अपने पेशेवर जीवन का अधिकांश समय भारत के अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में व्यतीत किया, परंतु बीएचयू के प्रति उनका भावनात्मक और बौद्धिक जुड़ाव सदैव अटूट रहा। यहाँ की स्मृतियाँ और मूल्यों का प्रभाव उनके चिंतन में हमेशा बना रहा।



बीएचयू के साथ गहरे जुड़ाव की जड़ें

प्रोफेसर जयंत विष्णु नालींकर का काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से जुड़ाव केवल एक संयोग नहीं था, बल्कि यह उनके पिता प्रो. विष्णु वासुदेव नालींकर के जीवन में घटित एक ऐतिहासिक और निर्णायक मोड़ का प्रतिफल था। सन् 1932 की बात है। उस समय विष्णु नालींकर जी, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उच्च शोध कार्य में संलग्न थे। वे खगोलशास्त्र के महान वैज्ञानिक सर आर्थर एडिंगटन के मार्गदर्शन में शोध कर रहे थे और उन्हें आइज़ैक न्यूटन की शिष्य परंपरा का उत्तराधिकारी माना जाता था। एक प्रतिभाशाली गणितज्ञ के रूप में उनके सामने हार्वर्ड या कैलटेक जैसे अमेरिका के प्रतिष्ठित खगोल-विज्ञान संस्थानों में शोध करने के प्रस्ताव थे। वे एक अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक करियर की ओर अग्रसर हो रहे थे, लेकिन तभी एक ऐसा मोड़ आया जिसने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी, और यही मोड़ भविष्य में उनके पुत्र, प्रो. जयंत विष्णु नालींकर, को बीएचयू से जोड़ने का आधार बना। उसी समय महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने इंग्लैंड गए थे। मालवीय जी न केवल एक कुशल राजनैतिक और शिक्षाविद् थे, बल्कि वे बीएचयू के लिए वैश्विक स्तर की प्रतिभाओं की खोज में भी लगे थे। उन्होंने कैम्ब्रिज में रह रहे भारतीय छात्रों और शोधकर्ताओं से भी संपर्क किया। इसी सिलसिले में उनकी मुलाकात प्रो. विष्णु नालींकर से हुई। मालवीय जी उनकी विद्वत्ता और गंभीरता से अत्यंत प्रभावित हुए और उन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यभार सँभालने का प्रस्ताव दिया। हालाँकि, प्रो. नालींकर ने तत्काल कोई निर्णय नहीं लिया। उनका मन अभी भी अनुसंधान के अंतरराष्ट्रीय अवसरों की ओर आकृष्ट था। लेकिन इसी बीच एक पारिवारिक कारणवश उन्हें कुछ समय के लिए भारत लौटना पड़ा। भारत आने पर उन्होंने सोचा, क्यों न बीएचयू को एक बार देखा जाए? उन्होंने विश्वविद्यालय

का दौरा किया। बीएचयू के विशाल परिसर, ज्ञानमयी वातावरण, और शिक्षा के प्रति समर्पित दृष्टिकोण ने उन्हें गहरे स्तर पर प्रभावित किया। इसकी शैक्षणिक ऊर्जा और उसके निर्माण के पीछे महामना की दूरदर्शिता ने उनके मन में एक नई प्रेरणा जागृत कर दी। जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने कैम्ब्रिज लौटने का विचार त्याग दिया और काशी हिंदू विश्वविद्यालय में गणित विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण कर लिया। उस समय वे मात्र 24 वर्ष के थे। इतनी कम आयु में इतना बड़ा निर्णय लेना उनकी दृष्टि और आत्मविश्वास को दर्शाता है। उन्होंने 1932 से 1960 तक बीएचयू में सेवा दी और गणित शिक्षा को मजबूत नींव प्रदान की। प्रो. विष्णु नालींकर के इसी निर्णय के कारण, जयंत नालींकर का बचपन बीएचयू परिसर में बीता। बीएचयू एक ऐसा वातावरण था जहाँ शैक्षणिक उन्नयन, सांस्कृतिक समृद्धि, और वैज्ञानिक सोच का अद्भुत संगम था। यह कहा जा सकता है कि बीएचयू की मिट्टी में ही जयंत नालींकर की वैज्ञानिक सोच के बीज पड़े, जो आगे चलकर उन्हें एक अंतरराष्ट्रीय खगोल-भौतिकीविद् और विज्ञान संप्रेषक के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुए।

प्रोफेसर नालींकर का बीएचयू में आवास



शुरुआती जीवन और बीएचयू की प्रारम्भिक शिक्षा

प्रो. जयन्त विष्णु नालीकर का जन्म 19 जुलाई 1938 को महाराष्ट्र के कोल्हापुर में एक विद्वान परिवार में हुआ था। उनके दादा वसुदेवशास्त्री जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे जो धार्मिक ग्रंथों पर सार्वजनिक प्रवचन भी देते थे। उनके पिता, प्रो. विष्णु वासुदेव नालीकर, गणितज्ञ और सैद्धांतिक भौतिकीविद् थे, जो बीएचयू में गणित विभाग के प्रमुख थे। उनकी माँ, सुमति नालीकर (जो संस्कृत की विदुषी थीं) ने बॉम्बे यूनिवर्सिटी से संस्कृत में एम.ए. की डिग्री ली हुई थी। माँ ने बालक जयन्त को कालिदास और भवभूति के साहित्य से अवगत कराया था। इस शैक्षिक और बौद्धिक वातावरण ने जयन्त के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित किया। उनका बचपन बीएचयू परिसर में बीता, जहाँ उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सेंट्रल हिंदू बॉयज स्कूल (सीएचबीएस) में पूरी की। यह स्कूल बीएचयू से संबद्ध है। जब वह तीसरी कक्षा के छात्र थे तब, उनकी कक्षा की शिक्षिका ने सभी बच्चों से एक



नालीकर जी अपने माता-पिता के साथ

सवाल पूछा: "तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं?" उनका स्कूल बीएचयू परिसर में स्थित था इसलिए अधिकांश बच्चे विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के बच्चे थे। बालक नालीकर ने जवाब दिया कि उनके पिताजी प्रोफेसर हैं। "किस विषय के प्रोफेसर?" शिक्षिका ने पूछा। उन्हें इसका जवाब नहीं पता था। तब शिक्षिका ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम्हारे पिताजी गणित के प्रोफेसर हैं।" उस क्षण उनकी यह कमी कि वे अपने पिता के बारे में पूरा जवाब नहीं जानते थे, तुरंत प्रसन्नता में बदल गई। क्योंकि उनके पिताजी वही विषय पढ़ाते थे, जो उन्हें सबसे प्रिय था। प्रोफेसर नालीकर को गणित और विज्ञान में नैसर्गिक रुचि थी, और उनके पिताजी ने इस रुचि को शीघ्र ही

पहचान भी लिया था। उन्होंने नालीकर को गणित के मनोरंजक पहलुओं से परिचित कराया। यह परिचय उन्होंने या तो स्वयं दिया या उनको ऐसी पुस्तकें प्रदान की जो इन विषयों से परिपूर्ण थीं।

उस समय यह प्रचलन था कि अन्य विश्वविद्यालयों से आने वाले गेस्ट प्रोफेसर अपने मेजबान के घर पर ठहरते थे। इस प्रकार, नालीकर के घर पर प्रख्यात गणितज्ञ जैसे एन. आर. सेन, राम बिहारी, ए. सी. बनर्जी और वैद्यनाथस्वामी जैसे विद्वान आया करते थे। यद्यपि नालीकर उनकी गहन चर्चाओं को पूरी तरह समझ नहीं पाते थे, किंतु उस विद्वतापूर्ण माहौल ने गणित के प्रति उनके मन में जबरदस्त आकर्षण पैदा कर दिया। उनके जीवन का एक निर्णायक मोड़ तब आया जब वह आठवीं कक्षा में थे। उस समय उनके मामा, मोरेश्वर हुजूरबाजार, जिन्हें वो 'मोरूमामा' कहते थे, बीएचयू में गणित में एमएससी करने के लिए आए। उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय की बीएससी परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। बाद में वे बॉम्बे के इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में प्रोफेसर और फिर निदेशक बने।

बनारस में कुछ समय बिताने के बाद, मोरूमामा ने जल्द ही देख लिया कि बालक जयन्त को गणित में रुचि है। उन्होंने यह भी गौर किया कि प्रोफेसर विष्णु ने दीवारों में दो ब्लैकबोर्ड बनवाए थे, जिन पर बच्चे अपनी इच्छानुसार कुछ भी लिख सकते थे या चित्र बना सकते थे। मोरूमामा ने इन ब्लैकबोर्ड्स का एक अनोखा उपयोग खोजा। वे समय-समय पर इन ब्लैकबोर्ड्स पर एक गणितीय समस्या या पहेली लिखते, जिसका शीर्षक होता था 'चैलेंज प्रॉब्लम फॉर



बीएचयू का वह ऐतिहासिक ब्लैकबोर्ड जिसने बालक जयन्त के "प्रॉब्लम सॉल्विंग" अप्रोच को बढ़ाया



बालक जयन्त

जेवीएन'। यह समस्या तब तक बोर्ड पर लिखी रहती थी, जब तक वह उसे हल नहीं कर लेते या हार मानकर उनसे जवाब नहीं माँग लेते। लेकिन यहाँ एक चीज गौर करने लायक है, कि हार मानने की फ्रिक्वेन्सी 100 सवालों में एकाध बार होती थी। जबकि मोरूमामा के ज्यादातर सवाल बालक जयन्त के स्कूल के पाठ्यक्रम से कहीं आगे के थे। वे तार्किक विश्लेषण और 'चतुर समाधान' की माँग करते थे, जो गणित के किसी अनछुए पहलू को उनके सामने उजागर करता था। इन तार्किक समस्याओं ने उनके भीतर कठिन सवालों की चुनौती स्वीकार करने का जज्बा पैदा किया। साथ ही स्कूल में कुछ शिक्षकों ने भी इसके लिए उन्हें प्रेरित किया। वह कभी-कभी मोरूमामा की दी हुई गूढ़ समस्याओं की चर्चा अपने स्कूल के शिक्षक श्री पांडे के साथ भी करते थे।

बचपन में अपने पिता द्वारा दी गई 'मेन ऑफ मैथमेटिक्स', 'द वर्ल्ड ऑफ मैथमेटिक्स', और 'लिविंग बायोग्राफी ऑफ ग्रेट साइंटिस्ट्स' जैसी किताबों ने उनके कोमल मन पर एक अमिट छाप छोड़ी। इनसे उन्होंने समझा कि विज्ञान कोई रटने वाला नीरस विषय नहीं, बल्कि रोमांच और खोज का क्षेत्र है। उनके लिए यह जानना रोचक था कि महान वैज्ञानिक भी पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर कभी-कभी गलतियाँ करते थे। हालाँकि उन्होंने यह भी समझा कि विज्ञान एक स्व-सुधारक तंत्र है, जो अंततः सही

उत्तर तक ले जाता है और यही कारण था कि सही की खोज में उन्होंने विज्ञान को करियर के रूप में चुना।

उनका पसंदीदा विषय गणित था, भौतिकी इसके बाद आती थी। इन दोनों विषयों के अलावा संस्कृत तीसरा विषय था, जो उन्होंने अपनी माताजी के कारण सीखा था। उनके अंदर इसको आगे भी पढ़ने की इच्छा थी, जो उनकी बातों से झलकती है। उन्होंने कई बार कहा था कि काश हमारी यूनिवर्सिटी का सिस्टम इतना लचीला होता कि विज्ञान के छात्र को संस्कृत का कोर्स करने की अनुमति मिल जाती। लेकिन अफ़सोस, मैट्रिकुलेशन के बाद उनको संस्कृत छोड़नी पड़ी क्योंकि संस्कृत वह तभी पढ़ सकते थे जब वे आर्ट्स चुनते।

बीएचयू से 1957 में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद, नार्लीकर ने उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड की ओर रुख किया। वहाँ उन्होंने गणित में 'मैथेमैटिकल ट्राइपोस' की पढ़ाई की और उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 'रैंगलर' और 'टायसन' पदक प्राप्त किए। 1963 में, उन्होंने प्रसिद्ध खगोलशास्त्री सर फ्रेड हॉयल के मार्गदर्शन में खगोल-भौतिकी में पीएचडी पूरी की। कैम्ब्रिज में उनके शोध कार्य ने उन्हें ब्रह्मांड विज्ञान के क्षेत्र में एक उभरते हुए सितारे के रूप में स्थापित किया।

वैज्ञानिक योगदान

जयन्त नार्लीकर और उनका ब्रह्मांड: हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत की रोचक कहानी

क्या ब्रह्मांड का कोई आरंभ है? क्या यह एक दिन समाप्त हो जाएगा? क्या सब कुछ एक महाविस्फोट, जिसे "बिग बैंग" कहते हैं, से शुरू हुआ था? ये प्रश्न आज भी अपनी महत्ता रखते हैं। 20वीं सदी के मध्य में इस विषय पर कार्य करने वाले वैज्ञानिक समुदाय में यह विचार तेजी से लोकप्रिय हुआ कि ब्रह्मांड की शुरुआत एक अत्यंत गर्म और सघन बिंदु से हुई, जिसे बिग बैंग सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। इस बिंदु को "सिंगुलैरिटी" के रूप में जाना जाता है। इस सिद्धांत ने ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास को समझने का एक नया ढाँचा प्रदान किया। ब्रह्मांड के अधिकांश भाग में "डार्क मैटर" और "डार्क एनर्जी" मौजूद हैं, जो अभी तक वैज्ञानिकों के लिए रहस्य बने हुए हैं। हालाँकि, भारत के प्रख्यात खगोलशास्त्री प्रोफेसर जयंत विष्णु

नार्लीकर और उनके गुरु, विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर फ्रेड हॉयल ने इस विचार को चुनौती दी। उन्होंने एक वैकल्पिक सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसे हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत या स्थायी अवस्था सिद्धांत (Steady State Theory) के नाम से जाना जाता है। यह केवल एक वैज्ञानिक मॉडल नहीं था, बल्कि ब्रह्मांड को समझने की एक नई दृष्टि थी, जिसने वैज्ञानिक सोच को नए रास्ते दिखाए और दार्शनिक चिंतन को भी प्रेरित किया।

ब्रह्मांड की शुरुआत या अनादि अस्तित्व?

बिग बैंग सिद्धांत के अनुसार, ब्रह्मांड लगभग 13.8 अरब वर्ष पहले एक अत्यंत सघन और गर्म बिंदु (सिंगुलैरिटी) से शुरू हुआ, जो तेजी से फैलने लगा। यह फैलाव आज भी जारी है। इस सिद्धांत के समर्थन में कई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए, दूरस्थ आकाशगंगाओं से आने वाली रोशनी का "रेडशिफ्ट" (लाल विस्थापन), जो यह दर्शाता है कि ये आकाशगंगाएँ हमसे दूर जा रही हैं, और कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड रेडिएशन (CMBR), जिसे बिग बैंग का अवशेष माना जाता है। ये प्रमाण बिग बैंग को एक मजबूत सिद्धांत बनाते हैं, जो आज कॉस्मोलॉजी का आधार है।

हालाँकि, हॉयल और नार्लीकर ने इस विचार पर सवाल उठाए। उन्होंने पूछा: क्या ब्रह्मांड की कोई शुरुआत होना जरूरी है? क्या यह संभव नहीं कि ब्रह्मांड हमेशा से अस्तित्व में रहा हो और हमेशा रहेगा? हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत ने ब्रह्मांड को एक स्थायी अवस्था में चित्रित किया, जिसमें न तो कोई निश्चित शुरुआत है और न ही कोई अंत। बिग बैंग सिद्धांत में ब्रह्मांड के फैलने से इसका घनत्व कम होना चाहिए। लेकिन हॉयल और नार्लीकर ने प्रस्तावित किया कि ब्रह्मांड में नया पदार्थ लगातार बनता रहता है, जिससे इसका घनत्व स्थिर रहता है। यह सृजन इतनी धीमी गति से होता है (लगभग 10^{-43} ग्राम प्रति सेकंड प्रति घन सेंटीमीटर) कि इसे वर्तमान उपकरणों से मापना असंभव है। इस अवधारणा को "निरंतर सृजन" (Continuous Creation) कहा जाता है। यह विचार उस समय के वैज्ञानिक समुदाय के लिए एक क्रांतिकारी चुनौती थी।

गुरुत्वाकर्षण की नई व्याख्या: नार्लीकर और हॉयल ने गुरुत्वाकर्षण को एक गतिशील और परस्पर संवाद के

रूप में देखा, जो द्रव्यमान और ब्रह्मांड के अन्य हिस्सों के बीच संबंध पर आधारित है। यह आइंस्टीन की सामान्य सापेक्षता से भिन्न था, क्योंकि इसमें गुरुत्वाकर्षण को ब्रह्मांड की संरचना के साथ जोड़ा गया। उनकी गणनाएँ कॉन्फॉर्मल ग्रैविटी (Conformal Gravity) पर आधारित थीं, जो समय और दूरी के पैमाने को लचीला मानती हैं।

भारतीय दर्शन से प्रेरणा

हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत में ब्रह्मांड को अनादि और अनंत माना गया है, जो भारतीय दर्शन की कुछ धाराओं जैसे उपनिषद, सांख्य और जैन दर्शन से गहरा मेल खाता है। भारतीय परंपराओं में ब्रह्मांड को अक्सर एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसमें सृष्टि, स्थिति और प्रलय का चक्र अनंत काल तक चलता रहता है। नार्लीकर ने स्पष्ट रूप से भारतीय दर्शन को अपने सिद्धांत का आधार नहीं बताया, लेकिन उनकी सोच में यह समानता स्पष्ट है। यह सिद्धांत न केवल वैज्ञानिक बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि गैर-पश्चिमी दृष्टिकोण भी वैश्विक वैज्ञानिक विमर्श में योगदान दे सकते हैं।

वैज्ञानिक समुदाय की प्रतिक्रिया

हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत ने वैज्ञानिक सोच को गहराई से प्रभावित किया। हालाँकि, बिग बैंग सिद्धांत आज भी कॉस्मोलॉजी में प्रमुख है। 1960 और 1970 के दशक में जब CMBR की खोज और रेडशिफ्ट के प्रमाण बिग बैंग के पक्ष में मजबूत हुए तो स्थायी अवस्था सिद्धांत की लोकप्रियता कम हुई। इसने वैज्ञानिकों को वैकल्पिक मॉडल विकसित करने के लिए प्रेरित किया। आज क्वांटम कॉस्मोलॉजी, कॉन्फॉर्मल साइक्लिक कॉस्मोलॉजी (जैसे रोजर पेनरोज के मॉडल) और मल्टीवर्स सिद्धांतों में नार्लीकर के विचारों की छाया देखी जा सकती है।

नार्लीकर का सिद्धांत यह भी दर्शाता है कि विज्ञान में असहमति कितनी महत्वपूर्ण है। बिग बैंग सिद्धांत को चुनौती देकर उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय को और अधिक गहन और सटीक प्रमाण खोजने के लिए प्रेरित किया। उनकी यह सोच कि लोकप्रियता सत्य का मापदंड नहीं है, आज भी शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

जयंत नालींकर का योगदान

जयंत नालींकर ने न केवल एक वैकल्पिक कॉस्मोलॉजिकल मॉडल प्रस्तुत किया बल्कि यह भी दिखाया कि भारत जैसे देश से विश्व स्तरीय वैज्ञानिक विचार उत्पन्न हो सकते हैं। उनकी 'The Structure of the Universe' और 'Facts and Speculations in Cosmology' जैसी पुस्तकें न केवल वैज्ञानिकों बल्कि आम जनता के लिए भी प्रेरणादायक हैं। विज्ञान संचार में उनके योगदान ने विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया - विशेषकर मराठी और हिंदी में।

साहस और स्वतंत्र सोच नालींकर का सबसे बड़ा संदेश है। उन्होंने दिखाया कि विज्ञान में प्रश्न पूछना, असहमति जताना और नए रास्ते तलाशना कितना ज़रूरी है। उनकी विरासत हमें सिखाती है कि सत्य की खोज में हमें हमेशा खुले दिमाग और नई संभावनाओं के लिए तैयार रहना चाहिए।

इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (IUCAA)

1972 में वे भारत लौटे और टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफआर) से जुड़े। 1988 में, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने नालींकर को इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (IUCAA) की स्थापना के लिए संस्थापक निदेशक के रूप में नियुक्त किया। पुणे में स्थापित IUCAA ने खगोल विज्ञान और खगोल-भौतिकी में अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर ख्याति प्राप्त की। नालींकर के नेतृत्व में, IUCAA ने न केवल भारत में खगोल विज्ञान के अध्ययन को बढ़ावा दिया बल्कि अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय के साथ सहयोग को भी प्रोत्साहित किया।

2003 में अपनी सेवानिवृत्ति तक, नालींकर ने IUCAA को एक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में स्थापित किया। इसके बाद भी, वे एमेरिटस प्रोफेसर के रूप में संस्थान से जुड़े रहे और युवा वैज्ञानिकों को मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। IUCAA ने भारत में खगोल विज्ञान के क्षेत्र में नई पीढ़ी के शोधकर्ताओं को प्रेरित किया और नालींकर की यह उपलब्धि उनके दीर्घकालिक प्रभाव को दर्शाती है।

विज्ञान लोकप्रियकरण

प्रोफेसर नालींकर का योगदान केवल वैज्ञानिक अनुसंधान तक सीमित नहीं था; उन्होंने विज्ञान को जनसामान्य तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अंग्रेजी, हिंदी, और मराठी में कई पुस्तकें लिखीं, जो जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत करती थीं। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं:

द लाइटर साइड ऑफ गैविटी: इस पुस्तक में गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा को रोचक और सरल तरीके से समझाया गया है।

साइंटिफिक एज: यह पुस्तक विज्ञान के इतिहास और इसके सामाजिक प्रभावों पर प्रकाश डालती है।

कहानी ब्रह्मांड की: यह हिंदी में लिखी गई एक लोकप्रिय पुस्तक है, जो ब्रह्मांड विज्ञान को आम लोगों के लिए समझने योग्य बनाती है।

प्रोफेसर नालींकर ने रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से भी विज्ञान संचार को बढ़ावा दिया। उनके लेख और व्याख्यान समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रूप से युवाओं और छात्रों, को विज्ञान के प्रति प्रेरित करते थे। उनकी यह क्षमता कि वे जटिल वैज्ञानिक विचारों को सरल भाषा में प्रस्तुत कर सकते थे। उन्हें एक असाधारण विज्ञान संचारक बनाती है।

साहित्यिक योगदान

प्रोफेसर नालींकर न केवल एक वैज्ञानिक थे, बल्कि एक कुशल लेखक भी थे। उन्होंने विज्ञान कथा (Science Fiction) के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी विज्ञान कथाएँ न केवल मनोरंजक थीं बल्कि वैज्ञानिक सिद्धांतों को भी रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करती थीं। उनकी आत्मकथा 'चार नगरातले माझे विश्व (मराठी)' ने उन्हें 2014 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिलाया। इस पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन, वैज्ञानिक यात्रा और व्यक्तिगत अनुभवों को जीवंत ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी विज्ञान कथाओं में भारतीय संस्कृति और वैज्ञानिक चेतना का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है। उनकी कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती थीं बल्कि पाठकों को वैज्ञानिक सोच और तर्क की ओर प्रेरित भी करती थीं। उनके साहित्यिक योगदान ने उन्हें एक बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया।

पुरस्कार और सम्मान

- स्मिथ पुरस्कार (1962):** कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उनके उत्कृष्ट शैक्षिक प्रदर्शन हेतु।
- पद्म भूषण (1965):** उनके असाधारण योगदान के लिए महज 26 वर्ष की आयु में।
- एडम्स पुरस्कार (1967):** खगोल-भौतिकी में शोध हेतु।
- शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार (1978):** विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदान हेतु।
- इंदिरा गाँधी पुरस्कार (1990):** विज्ञान के क्षेत्र में उनके कार्य हेतु।
- कलिंग पुरस्कार (1996):** विज्ञान के लोकप्रियकरण हेतु।
- पद्म विभूषण (2004):** भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
- महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार (2010):** महाराष्ट्र सरकार द्वारा।
- साहित्य अकादमी पुरस्कार (2014):** उनकी आत्मकथा के लिए।
- थर्ड वर्ल्ड एकेडमी ऑफ साइंसेज पुरस्कार (2012):** विज्ञान में उत्कृष्टता के लिए।
- विज्ञान रत्न पुरस्कार (2025):** मरणोपरान्त।

व्यक्तिगत जीवन

जयन्त नालींकर का विवाह मंगला नालींकर से हुआ, जो स्वयं एक गणितज्ञ थीं। दंपति की तीन बेटियाँ गीता, गिरीजा और लीलावती हैं, जो वैज्ञानिक अनुसंधान में सक्रिय हैं। मंगला का निधन 2023 में हुआ। नालींकर का परिवार सादगी और वैज्ञानिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहा। उनका जीवन एक संतुलित दृष्टिकोण का प्रतीक था, जिसमें विज्ञान, साहित्य, और सामाजिक जिम्मेदारी का समन्वय था।



सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

नार्लीकर ने विज्ञान को सामाजिक सरोकारों से जोड़ने का प्रयास किया। वे मानते थे कि विज्ञान केवल सत्य की खोज नहीं है बल्कि समाज की बेहतरी के लिए भी है। उनके लेखन और व्याख्यानों में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर भी जोर दिया गया। उन्होंने भारतीय समाज में वैज्ञानिक चेतना को बढ़ाने के लिए हिंदी और मराठी आदि भाषाओं में लेखन किया, जिससे विज्ञान को आम लोगों तक पहुँचाने में मदद मिली।

उनका मानना था कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण सामाजिक कुरीतियों जैसे अंधविश्वास और रुढ़िवाद को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उनके इस दृष्टिकोण को उनके समकालीनों और बाद की पीढ़ियों ने बहुत सराहा। उनकी मृत्यु के बाद कई लोगों ने उनकी इस विरासत को एक सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में देखा। जो भारतीय समाज में वैज्ञानिक चेतना को बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है।

निधन और विरासत

87 वर्ष की आयु में 20 मई 2025 को प्रोफेसर जयन्त नार्लीकर का पुणे में निधन हो गया। उनकी मृत्यु को भारतीय विज्ञान जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति माना गया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घोषणा की कि उनका अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उनके वैज्ञानिक योगदान की सराहना की।

नार्लीकर की विरासत केवल उनके वैज्ञानिक शोध तक सीमित नहीं है। उन्होंने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने, शिक्षा को बढ़ावा देने, और भारतीय समाज में वैज्ञानिक चेतना को जागृत करने में जो योगदान दिया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। उनकी पुस्तकें, IUCAA की स्थापना और उनके द्वारा प्रोत्साहित वैज्ञानिक दृष्टिकोण उनकी अमर विरासत का हिस्सा हैं।

प्रो. जयन्त विष्णु नार्लीकर एक ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने न केवल ब्रह्मांड के रहस्यों को खोजने का प्रयास किया बल्कि विज्ञान को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का भी कार्य किया। उनका बीएचयू के साथ गहरा जुड़ाव, जहाँ उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की और वैज्ञानिक चेतना को आत्मसात किया, उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। उनके वैज्ञानिक योगदान विशेष रूप से हॉयल-नार्लीकर सिद्धांत और IUCAA की स्थापना ने भारत को वैश्विक वैज्ञानिक मंच पर एक नई पहचान दी। उनकी साहित्यिक रचनाएँ और विज्ञान संचार के प्रयासों ने भारतीय समाज में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया। नार्लीकर का जीवन और कार्य एक ऐसी प्रेरणा है, जो हमें विज्ञान, शिक्षा, और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति समर्पण का महत्व सिखाता है।

प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे

**आचार्य
जन्तु विज्ञान विभाग
विज्ञान संस्थान**



परंपरा की नींव पर तकनीक को पंख

ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार का जीवंत केंद्र सयाजी राव गायकवाड़ केन्द्रीय ग्रंथालय

शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं होता बल्कि यह व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास का माध्यम भी होता है। विश्वविद्यालयों में इस उद्देश्य की पूर्ति का केंद्र होता है - 'पुस्तकालय'। यह न केवल पुस्तकों का भंडार होता है बल्कि विचारों का उद्गम स्थल, शोध और

नवाचार की प्रयोगशाला तथा ज्ञान के विस्तार का माध्यम भी होता है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के केन्द्रीय पुस्तकालय की भूमिका इस दृष्टिकोण में सर्वोपरि है। सयाजीराव गायकवाड़ पुस्तकालय, एक जीवंत ज्ञान केंद्र है जो देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी शोधार्थियों को आकर्षित

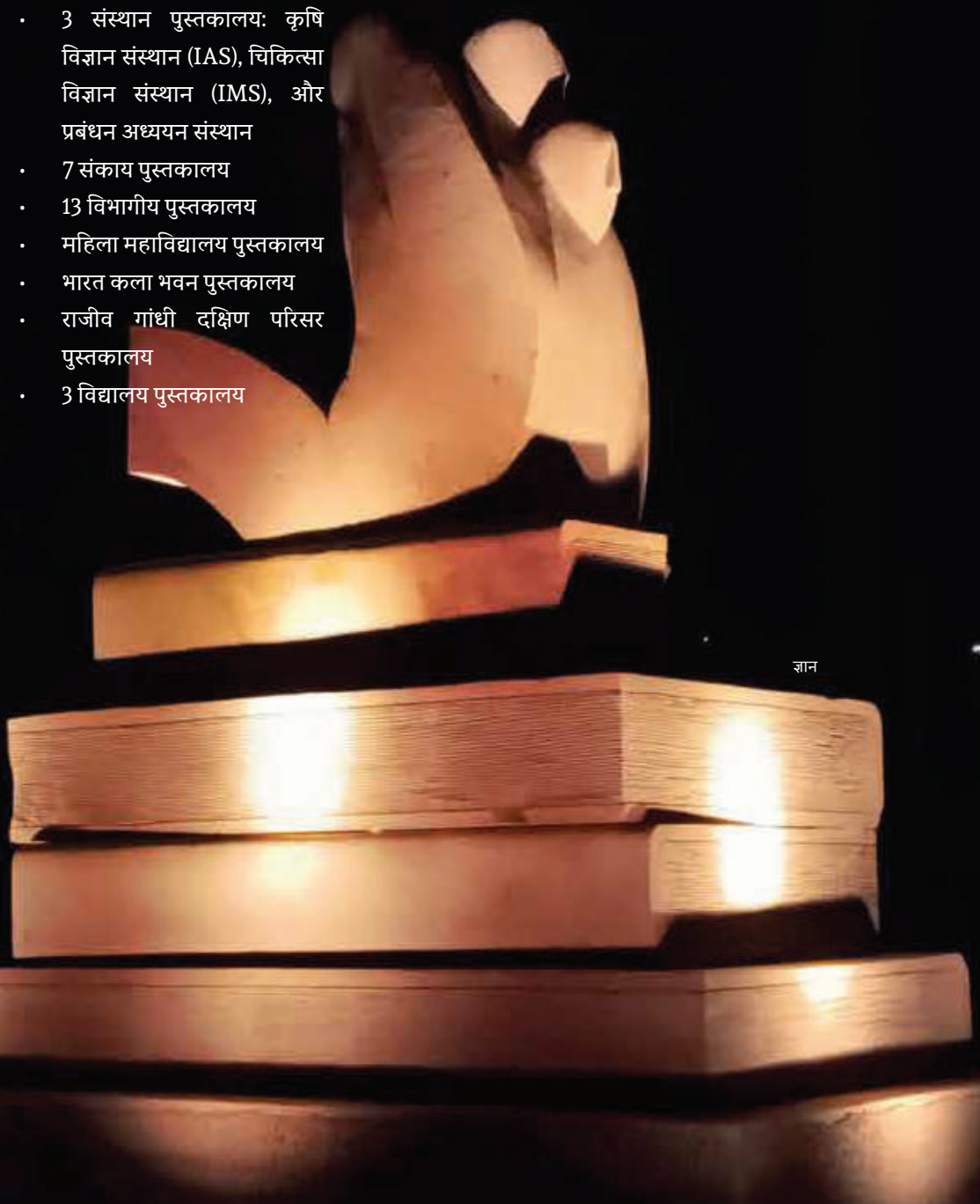
करता है। एशिया के सबसे बड़े आवासीय विश्वविद्यालय बीएचयू का केन्द्रीय पुस्तकालय कई मायनों में बेहद खास है। इसकी कल्पना लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी की तर्ज पर की गई थी।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा 1916 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। उनका सपना था कि भारत में एक ऐसा विश्वविद्यालय हो जो भारतीय संस्कृति के मूल्यों को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित कर सके। इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक समृद्ध पुस्तकालय की आवश्यकता भी अनुभव की गई।

केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना 1917 में कुछ हजार पुस्तकों के साथ की गई। प्रारंभ में यह कमछा स्थित सेंटरल हिंदू कॉलेज में स्थित था। बाद में 1921 में इसे आर्ट्स फैकल्टी के सेंटरल हॉल में स्थानांतरित किया गया और अंततः 1941 में वर्तमान भवन का निर्माण हुआ। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने 1931 में लंदन में आयोजित राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस में शामिल होकर, वापस भारत लौटने के बाद विश्वविद्यालय में वैसी ही लाइब्रेरी की स्थापना करने की परिकल्पना की। इस भवन के निर्माण में महाराष्ट्र के बड़ौदा के महाराजा सयाजी राव गायकवाड़ तृतीय का आर्थिक सहयोग महत्वपूर्ण रहा। इस पुस्तकालय को डॉ. एस.आर. रंगनाथन, प्रोफेसर पी.एन. कौला और श्री एच.डी. शर्मा जैसे प्रतिष्ठित पेशवरों ने भी पोषित किया है।

आज बीएचयू की पुस्तकालय व्यवस्था भारत की सबसे बड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय प्रणालियों में से एक है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित इकाइयाँ कार्यरत हैं:

- 3 संस्थान पुस्तकालय: कृषि विज्ञान संस्थान (IAS), चिकित्सा विज्ञान संस्थान (IMS), और प्रबंधन अध्ययन संस्थान
- 7 संकाय पुस्तकालय
- 13 विभागीय पुस्तकालय
- महिला महाविद्यालय पुस्तकालय
- भारत कला भवन पुस्तकालय
- राजीव गांधी दक्षिण परिसर पुस्तकालय
- 3 विद्यालय पुस्तकालय



ज्ञान

2024 में पुस्तकालय में एक नया एनेक्स भवन जोड़ा गया है, जिसमें भूतल और उसके बाद की पाँच मंजिलें हैं। इसमें रीडिंग हॉल, हिंदी भाषा की किताबों के स्टैक, और पुस्तकालय के चार अनुभाग (अधिग्रहण अनुभाग, पत्रिका अनुभाग, तकनीकी

अनुभाग, पाठ्य पुस्तक अनुभाग) शामिल हैं। यह पूरी तरह से वातानुकूलित और वाई-फाई से सुसज्जित है। पुस्तकालय में रीडिंग हॉल, कंप्यूटर अनुभाग, दुर्लभ पांडुलिपि अनुभाग और एक साइबर लाइब्रेरी स्टडी सेंटर जैसे अनेक विभाग

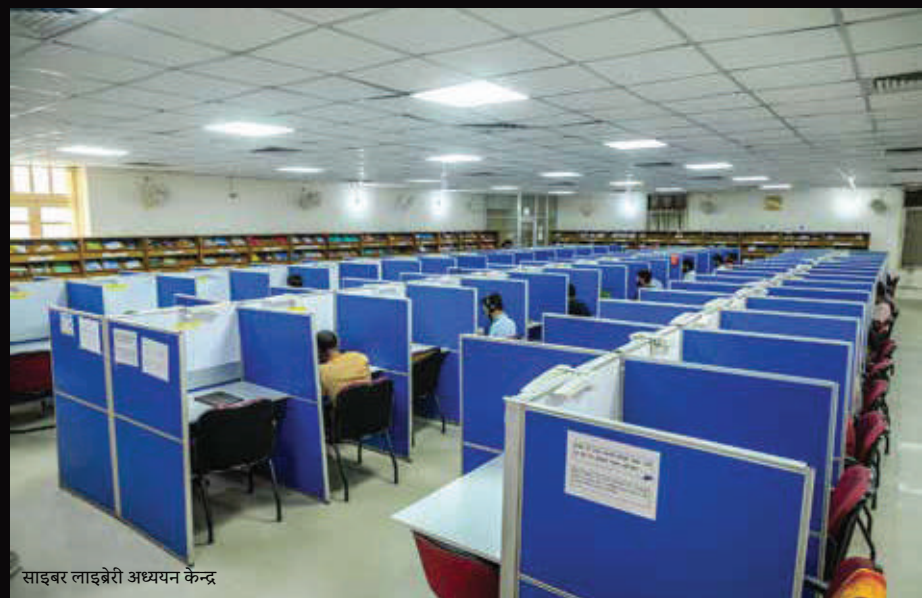
कार्यरत हैं। बीएचयू के प्रत्येक संकाय और विभाग के अपने पुस्तकालय हैं जो केंद्रीय पुस्तकालय से जुड़े हुए हैं। इससे विद्यार्थियों को विषय विशेष की सामग्री सहजता से उपलब्ध हो जाती है।



केन्द्रीय ग्रंथालय का मुख्य रीडिंग हॉल



केन्द्रीय ग्रंथालय में स्थापित महामना की प्रतिमा



साइबर लाइब्रेरी अध्ययन केन्द्र

संग्रह और संसाधन

पुस्तकालय के संग्रह में मार्च 2024 तक की स्थिति:

- 11,52,947 मुद्रित पुस्तकें, थीसिस और बाउंड पीरियोडिकल्स
- 1,36,895 बाउंड पीरियोडिकल्स
- 7,227 पांडुलिपियाँ
- 80109 ई-पुस्तकें
- 13,000 से अधिक ई-जर्नल्स
- 126 वर्तमान पत्रिकाएँ (34 विदेशी + 92 भारतीय)
- 15,000 से अधिक शोध प्रबंध (थीसिस)

इसके अलावा, विशेष संग्रहों में नेहरू संग्रह, गायनका संग्रह, राय बैजनाथ संग्रह, बीएमएस संग्रह, डॉ. भगवती प्रसाद बागची संग्रह आदि शामिल हैं। पुस्तकालय को काफी संख्या में पत्रिकाएँ दान स्वरूप में भी प्राप्त हुई हैं।

परिचालन घंटे

केन्द्रीय पुस्तकालय केवल छह दिन (26 जनवरी, वसंत पंचमी, होली, 15 अगस्त, दशहरा, और दीपावली) छोड़कर, साल में 359 दिन खुला रहता है। पुस्तकालय सामान्यतः कार्यदिवसों में सुबह 9:00 बजे से रात 9:00 बजे तक और रविवार और छुट्टियों में सुबह 10:00 बजे से रात 9:00 बजे तक खुला रहता है। साइबर लाइब्रेरी स्टडी सेंटर कार्यदिवसों में सुबह 8:00 बजे से सुबह 5:00 बजे तक और रविवार और छुट्टियों में सुबह 8:00 बजे से रात 11:00 बजे तक खुला रहता है।

प्रमुख सेवाएँ और सुविधाएँ

अध्ययन कक्ष और बैठने की सुविधा

केन्द्रीय पुस्तकालय में एक साथ लगभग 2500 से अधिक पाठकों के बैठने की व्यवस्था है। अलग-अलग वर्गों में अध्ययन कक्ष, समूह चर्चा कक्ष और स्नातकोत्तर शोधार्थियों के लिए विशेष क्षेत्र निर्धारित हैं।

साइबर लाइब्रेरी स्टडी सेंटर और रीडिंग रूम

वर्ष 2013 में स्थापित साइबर लाइब्रेरी स्टडी सेंटर विद्यार्थियों के लिए एक आधुनिक एवं तकनीकी रूप से सुसज्जित अध्ययन स्थल है। जहाँ लगभग 400 कंप्यूटर उपलब्ध हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थी इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों और इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं। यह दो

मंजिला वातानुकूलित अध्ययन केंद्र विद्यार्थियों को शांत, सुविधाजनक एवं अनवरत अध्ययन का वातावरण प्रदान करता है। कार्य दिवसों में यह केंद्र प्रतिदिन सुबह 8 बजे से अगले दिन सुबह 5 बजे तक (कुल 21 घंटे) खुला रहता है, जबकि प्रातः 5 बजे से 8 बजे तक सफाई कार्य हेतु बंद रहता है। अवकाश एवं रविवार को यह केंद्र प्रतिदिन 15 घंटे के लिए खुला रहता है। यह लंबी अवधि तक खुला रहने वाला केंद्र, विद्यार्थियों की अध्ययनशीलता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विशेष संग्रह और विभाग

दुर्लभ पांडुलिपियाँ: संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रज, अवधी, और प्राचीन हिंदी में दुर्लभ पांडुलिपियों का महत्वपूर्ण संग्रह।

संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन अनुभाग (UN Section): केंद्रीय पुस्तकालय संयुक्त राष्ट्र और उसकी एजेंसियों के प्रकाशनों के लिए एक डिपॉजिटरी लाइब्रेरी रहा है।

सरकार और राज्य सरकार की प्रकाशन सामग्री: सरकारी प्रकाशनों का एक विस्तृत संग्रह।

न्यूजपेपर आर्काइव: तीन दैनिक समाचार पत्रों - आज, द टाइम्स ऑफ इंडिया (TOI), और इकोनॉमिक टाइम्स - का संग्रह।

पांडुलिपि संरक्षण केंद्र (Manuscript Conservation Centre):

केंद्रीय पुस्तकालय में सात हजार से अधिक बहुमूल्य पांडुलिपियाँ संरक्षित हैं। इन अमूल्य धरोहरों के अलावा, विश्वविद्यालय परिसर में भारत कला भवन तथा अन्य कुछ स्थानों पर भी पांडुलिपियाँ संग्रहित हैं। पुस्तकालय का 'पांडुलिपि एवं दुर्लभ दस्तावेज अनुभाग' भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संचालित राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन द्वारा मान्यता प्राप्त पांडुलिपि संरक्षण केंद्र (Manuscript Conservation Centre – MCC) है।

यह केंद्र विशेष रूप से वाराणसी जिले में पांडुलिपियों के संरक्षण, रख-रखाव एवं पुनर्स्थापन के कार्यों के लिए उत्तरदायी है। इस केंद्र का उद्देश्य प्राचीन ज्ञान-संपदा की सुरक्षा सुनिश्चित करना है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भारत की समृद्ध बौद्धिक और सांस्कृतिक परंपरा से लाभान्वित हो सकें।

दृष्टिहीन और दिव्यांग छात्रों के लिए सुविधा

बीएचयू पुस्तकालय ने दृष्टिहीन छात्रों के लिए स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर, ब्रेल किट और विशेष कंप्यूटर स्टेशन स्थापित किए हैं। यह एक समावेशी प्रयास है। पुस्तकालय सुगम्य पुस्तकालय की सदस्यता के माध्यम से 600+ ऑडियो रिकॉर्डेड पाठ्यपुस्तकों के साथ नेत्रहीन विद्यार्थियों की

सेवाकर रहा है। पुस्तकालय किबो स्कैनर के माध्यम से दस्तावेजों को ऑडियो बना रहा है और मुफ्त ब्रेल प्रिंटआउट सेवा प्रदान कर रहा है।

संदर्भ एवं सूचना सेवा

केंद्रीय पुस्तकालय में प्रशिक्षित पुस्तकालय विज्ञान अधिकारी कार्यरत हैं जो विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा संकाय सदस्यों को उनकी अध्ययन और शोध आवश्यकताओं के अनुरूप संदर्भ एवं अन्य प्रासंगिक जानकारी खोजने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। ये अधिकारी उपयोगकर्ताओं को उपयुक्त पुस्तकें, शोध पत्रों, डेटाबेस और अन्य सूचना स्रोतों तक पहुँच सुनिश्चित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे उनके अकादमिक कार्यों को सटीकता और गुणवत्ता प्राप्त होती है।

फोटोकॉपी सुविधा

सेंट्रल लाइब्रेरी में फोटोकॉपी सेवाओं की लगातार भारी माँग रही है। पुस्तकालय में इस विश्वविद्यालय और बाहर के शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ-साथ अन्य पुस्तकालयों से भी माँग को पूरा करने के लिए तीन फोटोकॉपी मशीनें हैं। पुस्तकालय ने वर्ष 2023-2024 में 87,634 एक्सपोजर प्रदान किए।

संयुक्त राष्ट्र एवं सरकारी दस्तावेज अनुभाग

केंद्रीय पुस्तकालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय को संयुक्त राष्ट्र (UN) तथा इसकी विविध एजेंसियों के प्रकाशनों के लिए एक डिपॉजिटरी लाइब्रेरी के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह सुविधा इसे भारत के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में एक अद्वितीय और विशिष्ट स्थान प्रदान करती है क्योंकि ऐसी व्यवस्था देश के अन्य किसी विश्वविद्यालय पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है। इस अनुभाग में संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टें, सांख्यिकी दस्तावेज, विकास कार्यक्रमों से सम्बंधित प्रकाशन एवं वैश्विक नीतिगत दस्तावेज व्यापक रूप से संग्रहित हैं जो शोधार्थियों, अध्यापकों तथा नीति-निर्माताओं के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

कम्प्यूटरीकरण एवं डिजिटल प्रणाली

बीएचयू का केंद्रीय पुस्तकालय पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत हो चुका है और आधुनिक डिजिटल प्रौद्योगिकियों से सुसज्जित है। पुस्तकालय प्रबंधन



पत्रिका अनुभाग

हेतु SOUL 3.0 Integrated Library Management System का उपयोग किया जाता है, जिसके माध्यम से पुस्तकों की कैटलॉगिंग, उपयोगकर्ता पंजीकरण, पुस्तक निर्गमन एवं वापसी, आरक्षण तथा पुस्तक की उपलब्धता संबंधी जानकारी ऑनलाइन सुलभ है।

यह प्रणाली न केवल पुस्तकालय संचालन को सुव्यवस्थित बनाती है बल्कि उपयोगकर्ताओं को त्वरित और सटीक सेवा प्रदान करने में भी सहायक सिद्ध होती है। डिजिटल संसाधनों के एकीकृत प्रबंधन से पाठकों को आधुनिक और दक्ष अध्ययन अनुभव प्राप्त होता है।

OPAC (Online Public Access Catalogue)

विद्यार्थी, शोधकर्ता और शिक्षक अब पुस्तकालय की वेबसाइट या OPAC पोर्टल के माध्यम से किसी भी पुस्तक की उपलब्धता की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह प्रणाली 24x7 उपलब्ध रहती है।

डिजिटल पुस्तकालय और ई-संसाधन

बीएचयू डिजिटल लाइब्रेरी के अंतर्गत हजारों ई-पुस्तकें, शोध पत्र, पत्रिकाएँ और वीडियो लेक्चर उपलब्ध हैं। छात्र JSTOR, Springer, IEEE, Oxford, Elsevier और Sage जैसी प्रमुख प्रकाशन संस्थाओं की सामग्री तक पहुँच सकते हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय ने INFLIBNET जैसी राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी नेटवर्क से भी समझौते किए हैं।



ई-लाइब्रेरी और INFED: उपलब्ध ई-संसाधनों का अभिगम कैम्पस नेटवर्क (आईपी-आधारित पहुँच) के साथ-साथ ऑफ-कैम्पस (बीएचयू ई-लाइब्रेरी और INFED के माध्यम से) से भी अभिगम किया जा सकता है। बीएचयू ई-लाइब्रेरी पोर्टल विश्वविद्यालय के लिए उपलब्ध ई-संसाधनों को आसानी से

खोजने और ऑफ-कैम्पस अभिगम के लिए व्यवस्थित करता है।

रिसर्च सपोर्ट और डेटाबेस एक्सेस

शोधार्थियों के लिए विशेष डेटाबेस जैसे Scopus और UGC CARE journals तक पहुँच की सुविधा है। इससे शोध की गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा में भी सहायता मिलती है।

RFID और स्मार्ट कार्ड

आरएफआईडी (रेडियोफ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन) तकनीक को बीएचयू केन्द्रीय पुस्तकालय में दस्तावेजों की बेहतर सुरक्षा और परिसंचरण सेवाओं के तेजी से प्रसंस्करण के साथ-साथ बेहतर उपयोगकर्ता पहचान के लिए लागू किया गया है। यह तकनीक लागत प्रभावी है। यह बेहतर स्टॉक सत्यापन, इन्वेंट्री प्रबंधन और स्वचालन में भी उपयोगी है। इसके लिए सभी उपयोगकर्ताओं को स्मार्ट कार्ड प्रदान किए जा रहे हैं।

शोधगंगा (Shodhganga)

शोधगंगा थीसिस और शोध प्रबंधों का एक ऑनलाइन भंडार है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय थीसिस की संख्या के मामले में शीर्ष 10 विश्वविद्यालयों में से एक है। वर्तमान में इसमें 9600 से अधिक थीसिस उपलब्ध हैं। 2023-24 में लगभग 3000 इलेक्ट्रॉनिक संस्करण अपलोड किए गए हैं।

संस्थागत भंडार

(Institutional Repository)

केंद्रीय पुस्तकालय काशी हिंदू विश्वविद्यालय संस्थागत भंडार (BHUIR) का रखरखाव कर रहा है जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय के बौद्धिक उत्पादन का एक संग्रह बनाना है। यह भंडार ऑनलाइन <https://dl.bhu.ac.in/ir/home> पर उपलब्ध है।

साहित्यिक मौलिकता जाँच सेवा

(Plagiarism Detection Service)

काशी हिंदू विश्वविद्यालय का केंद्रीय पुस्तकालय पीएचडी शोध प्रबंधों, थीसिस तथा शोध पत्रों की मौलिकता सुनिश्चित करने हेतु DrillBit और iThenticate जैसे उन्नत एंटी-प्लैगियरीज़म सॉफ्टवेयर का उपयोग करता है। यह पुस्तकालय विश्वविद्यालय में साहित्यिक चोरी की जाँच हेतु एक नोडल केंद्र के रूप में कार्यरत है।

इस सेवा के माध्यम से शोधार्थियों और प्राध्यापकों को उनके शोध कार्यों में मौलिकता बनाए रखने तथा अकादमिक ईमानदारी सुनिश्चित करने में सहयोग प्रदान किया जाता है। यह पहल उच्च गुणवत्ता वाले शोध को प्रोत्साहित करती है और विश्वविद्यालय की अकादमिक साख को सुदृढ़ करती है।

प्रमुख उपलब्धियाँ (2020–2024)

• संग्रह में उल्लेखनीय वृद्धि: वित्तीय वर्ष 2023–24 में केंद्रीय पुस्तकालय ने अपने संग्रह में 8,485 नई पुस्तकें (वॉल्यूम) जोड़ी हैं, जिससे पाठकों के लिए विविध और समृद्ध अध्ययन सामग्री उपलब्ध हुई है।

• ई-पुस्तकों की संख्या में बढ़ोतरी: ऑनलाइन ई-बुक्स की संख्या अब 80109 तक पहुँच चुकी है, जिससे डिजिटल अध्ययन संसाधनों की पहुँच में व्यापक विस्तार हुआ है।

• CALIBER सम्मेलन का सफल आयोजन: पुस्तकालयों में डिजिटल परिवर्तन की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए सयाजीराव गायकवाड़ पुस्तकालय और इम्प्लिबनेट सेंटर, गाँधीनगर द्वारा संयुक्त रूप से 17 से 19 नवंबर, 2022 तक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'कैलिबर (CALIBER)' का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का विषय था – "अगली पीढ़ी के शैक्षणिक परिदृश्य हेतु पुस्तकालयों में डिजिटल परिवर्तन की परिकल्पना।"

• सुगम्य पुस्तकालय की पहल: दृष्टिबाधित और दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष अध्ययन कक्ष, ब्रेल पुस्तकें, स्क्रीन रीडर और अन्य सहायक तकनीकों की व्यवस्था कर समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है।

• राष्ट्रीय सम्मान: वर्ष 2022 में केंद्रीय पुस्तकालय, बीएचयू को भारतीय पुस्तकालय संघ



भविष्य की योजनाएं

समस्त पांडुलिपियों और दुर्लभ पुस्तकों का डिजिटलीकरण: भविष्य की पीढ़ियों के लाभ हेतु इस धरोहर को डिजिटल स्वरूप में संरक्षित करना।

मोबाइल एप आधारित पुस्तकालय सेवाओं की शुरुआत: छात्रों को कहीं से भी लॉगिन कर पुस्तकालय सेवाओं तक पहुँच प्रदान करना।

अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालयों से MoU द्वारा सहयोग: साझा ज्ञान भंडारण और अनुसंधान के अवसरों का विस्तार करने के लिए अन्य अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालयों और संस्थानों के साथ सहयोग बढ़ाना।

इनोवेशन सेंटर से जुड़ाव और स्टार्टअप समर्थन हेतु साहित्यिक संग्रह: बीएचयू के नवाचार केंद्रों और स्टार्टअप इनक्यूबेशन सेंटर से जुड़कर नवाचार से संबंधित साहित्य और डेटा संग्रह को समृद्ध करना।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय का केन्द्रीय पुस्तकालय मात्र एक पुस्तक संग्रहालय नहीं है बल्कि ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार का एक जीवंत केंद्र है। यह विद्यार्थियों, अध्यापकों और शोधकर्ताओं को अध्ययन, चिंतन और सृजन की एक सशक्त आधारभूमि प्रदान करता है। यहाँ वे न केवल अपने विचारों को दिशा देते हैं बल्कि वैश्विक शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करने हेतु स्वयं को तैयार भी करते हैं।

पुस्तकालय की सतत प्रगति, नवीनतम तकनीकी संसाधनों का समावेश और उपयोगकर्ता-केंद्रित सेवाएं इस बात का प्रमाण हैं कि बीएचयू अपनी गौरवशाली शैक्षिक विरासत को संजोते हुए, आधुनिकता की ओर भी सशक्त कदम बढ़ा रहा है। डिजिटल, समावेशी और नवाचारपरक दृष्टिकोण इसे भविष्य की लाइब्रेरी का उत्कृष्ट उदाहरण बनाते हैं।

(ILA) द्वारा "सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय पुरस्कार" से सम्मानित किया गया जो इसकी उत्कृष्ट सेवाओं और नवाचार की पुष्टि करता है।

•बैठक क्षमता में अभूतपूर्व विस्तार: विगत चार वर्षों में पुस्तकालय की बैठक क्षमता को 750 सीटों से बढ़ाकर लगभग 2,500 सीटों तक विस्तारित किया गया है जिससे बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को अध्ययन की सुविधा उपलब्ध हो रही है।

•RFID तकनीक का उपयोग: पुस्तकालय में RFID (रेडियो फ्रिक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन)

तकनीक की शुरुआत की गई है जिससे पुस्तक निर्गम और पुनः जमा की प्रक्रिया अधिक तेज, सटीक और स्वचालित हो गई है।

•Weeding-Out नीति का क्रियान्वयन: बीएचयू लाइब्रेरी सिस्टम में Weeding-Out Policy (अप्रासंगिक या जर्जर पुस्तकों की व्यवस्थित निकासी) लागू की गई है जिससे संग्रह का नवीनीकरण और प्रासंगिकता सुनिश्चित की जा रही है।

•नई बहुमंजिला लाइब्रेरी बिल्डिंग का निर्माण: केन्द्रीय पुस्तकालय परिसर में एक नई G+5 (ग्राउंड प्लस फाइव) आधुनिक भवन का निर्माण किया गया है जो अब पूर्णतः कार्यात्मक है। यह भवन एयर कंडीशंड है और आधुनिक सुविधाओं जैसे तेज वाई-फाई, इलेक्ट्रॉनिक संसाधन केंद्र, लिफ्ट और बैठने के बेहतर प्रबंध से युक्त है।

•शोधगंगा में अग्रणी भूमिका: बीएचयू, शोधगंगा पोर्टल पर पी-एच.डी. शोध प्रबंधों की अधिकतम संख्या अपलोड करने वाले शीर्ष 10 विश्वविद्यालयों में शामिल हो गया है जिससे शोधार्थियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लाभ हो रहा है।

डॉ. डी.के. सिंह,
पुस्तकालयाध्यक्ष,
सयाजीराव गायकवाड केन्द्रीय ग्रंथालय,

छात्र कल्याण की एक अनुकरणीय पहल

विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक विकास के लिए छात्र कल्याण प्रकोष्ठ के सार्थक प्रयास

विश्वविद्यालय जीवन को सामान्यतः सबसे उत्साहजनक, स्वतंत्रता से भरा और अनुभवों से परिपूर्ण समय माना जाता है। यह वह चरण होता है जब एक विद्यार्थी अपने जीवन में पहली बार अपने निर्णय स्वयं लेना आरंभ करता है और समाज में अपनी एक पहचान बनाना चाहता है। जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो वह माता-पिता के संरक्षण में एक कोमल पौधे की तरह पनपता और विकसित होता है। उसकी प्रारंभिक परिवार में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जब वह विद्यालय में प्रवेश करता है, वहाँ शिक्षक कुम्हार की तरह उसकी मानसिकता, सोच, आचरण और व्यवहार को आकार देने का प्रयास करते हैं। विद्यालय जीवन में अनुशासन, नैतिकता और मूल्य की नींव रखी जाती है। विद्यार्थी मित्रता को अत्यधिक महत्त्व देने लगते हैं क्योंकि यह वह समय होता है, जब वे भावनात्मक रूप से खुलते हैं और अपने अनुभवों को बाँटना सीखते हैं। महाविद्यालय स्तर पर पहुँचते-पहुँचते यही प्रक्रिया और गहराई प्राप्त कर लेती है। यह जीवन का वह सुखद स्तर होता है, जहाँ सीखने की आज़ादी, सोचने का अवसर, और स्वयं को तलाशने की प्रक्रिया एक साथ चलती है।

विद्यार्थी जीवन को मनुष्य के संपूर्ण जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और आधारशिला रखने वाला चरण माना जाता है। इसी समय व्यक्ति अपने ज्ञान, चरित्र और आत्मबल की नींव रखता है। इसीलिए इसे 'जीवन की स्वर्णिम अवस्था' कहा जाता है, क्योंकि यह अनुशासन, परिश्रम और निरंतर सीखने का समय होता है। महाविद्यालय जीवन में विद्यार्थी किशोरावस्था से निकलकर वयस्कता की ओर क़दम बढ़ाते हैं, जहाँ उनका सामना नए प्रकार की चुनौतियों और अनुभवों से होता है। विश्वविद्यालय का वातावरण उन्हें स्वायत्तता तो प्रदान करता है, लेकिन यह स्वतंत्रता कई बार भ्रम और मानसिक दबाव को भी जन्म देती है। इस चरण में विद्यार्थी नए दोस्तों से मिलते हैं, एक नई जगह पर खुद को ढालते हैं, पढ़ाई के बढ़ते दबाव को महसूस करते हैं, करियर को लेकर अनिश्चितता से गुजरते हैं और रिश्तों की जटिलता को अनुभव करते हैं। दोस्ती, सामाजिक तुलना, आत्म-छवि की चिंता और पहचान की खोज — ये सभी इस समय को संवेदनशील बना देते हैं। हालाँकि विश्वविद्यालय जीवन को बाहर से देखने पर यह अत्यंत चमकदार, मस्तीभरा और उन्मुक्त लगता है, लेकिन इसके पीछे

एक गंभीर सच्चाई भी छिपी होती है। आज के समय में अनेक विद्यार्थी मानसिक तनाव, चिंता, अकेलेपन और अवसाद जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। प्रतिस्पर्धा, सामाजिक दबाव, परिवार की अपेक्षाएँ और डिजिटल दुनिया की तुलना ने इस पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। आत्मनिर्भरता की यह यात्रा जितनी प्रेरणादायक होती है, उतनी ही जटिल और संघर्षों से भरी होती है। कभी-कभी यह स्वतंत्रता विद्यार्थियों को दिशाहीन भी बना देती है, जिससे उनमें असुरक्षा, भ्रम और आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न हो जाती है।

विश्वविद्यालय जीवन वास्तव में एक ऐसी यात्रा है जो केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं बल्कि यह आत्म-खोज, आत्म-विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने की प्रक्रिया भी है। यह समय व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास का होता है, जहाँ विद्यार्थी सिर्फ़ किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला, संबंधों का प्रबंधन, समय का सदुपयोग और मानसिक संतुलन बनाए रखने की कुशलता भी सीखते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि



योग कार्यशाला: महिला महाविद्यालय

इस जीवन-चरण को केवल स्वतंत्रता या मौज-मस्ती का समय न मानकर, इसे अपने भविष्य की बुनियाद रखने का अवसर समझा जाए। सही मार्गदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और सकारात्मक सोच के साथ ही यह जीवन-अवधि वास्तव में स्वर्णिम सिद्ध हो सकती है।

कोविड-19 महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को एक गंभीर संकट में डाल दिया था। यह केवल एक स्वास्थ्य संकट नहीं था, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और शैक्षणिक जीवन पर पड़ा। विशेष रूप से विद्यार्थियों के जीवन में इस महामारी ने गहरा असर डाला, जिससे उनकी शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, दिनचर्या, और भविष्य की योजनाओं पर विपरीत प्रभाव पड़ा। कोविड-19 ने विद्यार्थियों के जीवन में अभूतपूर्व व्यवधान, अनिश्चितता और मानसिक तनाव उत्पन्न किया। कोविड-19 के दौरान स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय लंबे समय तक बंद रहे। इसने विद्यार्थियों की नियमित पढ़ाई को बाधित किया और शिक्षा का स्वरूप पूरी तरह से बदल गया। विद्यार्थियों को अचानक ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में ढलना पड़ा, जिसमें तकनीकी समस्याएँ, इंटरनेट

की असुविधा और डिजिटल डिवाइड जैसे मुद्दे प्रमुख थे। ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को इससे सबसे अधिक कठिनाई हुई। परीक्षाएँ रद्द हुई या ऑनलाइन माध्यम से ली गईं, जिससे मूल्यांकन की विश्वसनीयता पर सवाल उठे। विद्यार्थी अपने शैक्षणिक विकास को लेकर अनिश्चितता महसूस करने लगे।

कोविड-19 महामारी के दौरान अनिश्चित भविष्य, बीमार होने का डर, और परिवार की आर्थिक स्थिति को लेकर चिंता ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया। विद्यालय और कॉलेज सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग होते हैं। इनके बंद होने से मित्रों से दूरी बनी रही, जिससे भावनात्मक संबंध कमजोर पड़े और अकेलापन बढ़ा। खेलकूद, व्यायाम और अन्य गतिविधियाँ लगभग बंद हो गईं, जिनसे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ा। विद्यार्थियों की नींद और भोजन की आदतों में असंतुलन आया, जिससे वे सुस्ती और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का शिकार हुए। कोविड-19 महामारी विद्यार्थियों के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय था, लेकिन इसी दौर ने उन्हें मानसिक रूप से मजबूत, तकनीकी रूप से दक्ष और

आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी दिया।

यह समय कुछ छात्रों के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण व कठिन भी साबित हुआ। यह समय न केवल कठिनाइयों, बल्कि आत्मनिरीक्षण और नवाचार का भी था। लंबे समय तक ऑनलाइन शिक्षा का दौर चला और जब महामारी का प्रभाव कम हुआ तब विश्वविद्यालय ने धीरे-धीरे पुनः ऑफलाइन कक्षाओं की शुरुआत की। लेकिन विश्वविद्यालय में लौटना विद्यार्थियों के लिए सिर्फ एक सामान्य प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह कई मानसिक, शैक्षणिक और सामाजिक चुनौतियों से भरा एक नया अनुभव था।

महामारी के बाद भी संक्रमण का डर पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ था। विद्यार्थी मानसिक रूप से सतर्क रहते थे — मास्क, दूरी, और साफ-सफाई की चिंता उनके मन में बनी रही। लंबे समय तक घर में रहने और केवल वर्चुअल सम्पर्क में रहने के बाद, अचानक भीड़भाड़ वाले माहौल में लौटना कई विद्यार्थियों के लिए असहज अनुभव रहा। कई विद्यार्थ्यों ने महामारी के दौरान परिवार में बीमारी या आर्थिक हानि देखी थी, जिसका प्रभाव उनके

भावनात्मक संतुलन पर पड़ा। ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान सभी विद्यार्थियों को समान रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पाई। कई विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय लौटने पर यह महसूस हुआ कि वे पाठ्यक्रम में पीछे रह गए हैं। महामारी के दौरान सामाजिक संपर्क सीमित हो गया था, जिससे विद्यार्थियों की संवाद क्षमता और आत्मविश्वास प्रभावित हुआ। विश्वविद्यालय लौटने पर उन्हें फिर से अपने सामाजिक दायरे को बनाना पड़ा।

ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान आरामदायक माहौल में पढ़ने की आदत पड़ गई थी। विश्वविद्यालय में लंबे समय तक कक्षाओं में बैठना कुछ छात्रों को थकाऊ लगने लगा। लॉकडाउन के दौरान शारीरिक गतिविधियाँ कम हो गई थीं। जब विश्वविद्यालय दोबारा खुले, तो खेल-कूद और अन्य गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कुछ समय के लिए कम हो गई। कुछ विद्यार्थी आर्थिक रूप से परिवार की सहायता के लिए काम करने लगे थे। विश्वविद्यालय लौटकर उन्हें काम और पढ़ाई में संतुलन बनाना कठिन लगने लगा।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भारत के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक है, जहाँ देश ही नहीं विश्व के अन्य देशों से भी विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने

के उद्देश्य से आते हैं। लेकिन कोविड-19 महामारी के बाद विद्यार्थियों के जीवन में जो बदलाव आए, उसने शैक्षणिक जीवन को ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी गहराई से प्रभावित किया। विशेष रूप से ऐसे युवा विद्यार्थियों के लिए, जो पहली बार घर से दूर होकर नए वातावरण में स्वयं को ढालने की कोशिश कर रहे थे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भी इन चुनौतियों से अछूता न रहा। विद्यार्थियों में अवसाद, अकेलापन, क्रोध, मनोग्रसित-बाध्यता विकार, लत, व्यग्रता, प्रतिस्कन्दन (resilience) में कमी जैसी समस्याएँ देखने को मिलीं। विद्यार्थियों में प्रतिस्कन्दन एवं सहनशीलता प्रभावित हुई, जीवन में लचीलापन व समय परिस्थिति के हिसाब से खुद को ढालना कठिन प्रतीत हो रहा था। विश्वविद्यालय का छात्र जीवन जितना विविधताओं से भरा है, उतना ही चुनौतियों से भी। आज के समय में जहाँ छात्र शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत स्तर पर अनेक मानसिक दबावों से जूझ रहे हैं, वहीं ऐसे वातावरण में विश्वविद्यालय का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वह अपने विद्यार्थियों को एक ऐसा सहायक और सहयोगी ढाँचा प्रदान करे जो न केवल उनकी समस्याओं को सुने बल्कि उन्हें मानसिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में

प्रेरित भी करे। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कल्याणकारी सेवा प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है, जो विद्यार्थियों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण के लिए कार्यरत है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और समग्र कल्याण की आवश्यकता को बहुत पहले ही गहराई से समझ लिया था। विश्वविद्यालय प्रशासन ने यह महसूस किया कि केवल शैक्षणिक सरलता ही पर्याप्त नहीं है, जब तक कि छात्रों का मानसिक और भावनात्मक पक्ष सशक्त न हो। इसी सोच के तहत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU) ने स्टूडेंट वेलनेस सेल (Student Wellness Cell) की आधारशिला रखी।

पुनः सन् 2024 में विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक और भावनात्मक हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए एक समर्पित और सुव्यवस्थित प्रणाली का निर्माण किया गया – 'कल्याण सेवा प्रकोष्ठ', जिससे यह सेवा अधिक संगठित, सुलभ और प्रभावशाली रूप में कार्य कर सके।



आत्महत्या के विरुद्ध जागरूकता हेतु नुक्कड़ नाटक - 04 सितंबर 2024

इस सेवा की संपूर्ण जिम्मेदारी छात्र अधिष्ठाता को सौंपी गई है, जिनके अधीन एसोसिएट डीन ऑफ स्टूडेंट्स, स्टूडेंट्स काउंसलर, पाँच क्लिनिकल साइकोलॉजिकल काउंसलर, तथा विभिन्न संकायों में मनोविज्ञान के 15 डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन फ़ेलो नियुक्त किए गए हैं। यह टीम विद्यार्थियों की मानसिक समस्याओं को समझने, उन्हें उचित मार्गदर्शन देने, तथा जीवन कौशल विकसित करने में सहायक सिद्ध हो रही है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन फ़ेलो की नियुक्ति के उपरांत तीन माह का विशेष प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) दिया गया, जिसमें उन्हें छात्र जीवन की समस्याओं, परामर्श कौशल, संवाद आत्महत्या के विरुद्ध जागरूकता हेतु - शांति मार्च

स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे विद्यार्थियों को परामर्श प्रदान करते हैं। यह समग्र व्यवस्था बीएचयू में विद्यार्थियों के लिए एक संरक्षित, समर्थ और संवेदनशील वातावरण प्रदान करती है।

कल्याणकारी सेवा प्रकोष्ठ (Wellbeing Services Cell) का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को एक ऐसा सहयोगी वातावरण प्रदान करना है जिसमें वे अपनी समस्याओं को बिना झिझक साझा कर सकें और साथ ही साथ अपने आत्मबल और आत्मविश्वास में वृद्धि कर सकें। इसके लिए कल्याणकारी सेवा प्रकोष्ठ (Wellbeing

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की कल्याणकारी सेवा प्रकोष्ठ में दी जाने वाली व्यक्तिगत व सामूहिक काउंसलिंग सेवा विद्यार्थियों के मानसिक और भावनात्मक कल्याण की दिशा में एक अत्यंत संवेदनशील और प्रभावशाली पहल है। इस काउंसलिंग प्रक्रिया की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी पूर्ण गोपनीयता है।

कल्याणकारी सेवा प्रकोष्ठ (Wellbeing Services Cell) इस बात का विशेष ध्यान रखता है कि प्रत्येक विद्यार्थी को ऐसा सुरक्षित और सहायक वातावरण मिले जहाँ वह बिना किसी भय या



तकनीक, तथा संवेदनशील विषयों को समझने में दक्ष बनाया गया। इन्हें विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में इस उद्देश्य से तैनात किया गया है कि छात्र अपने ही विभाग या संकाय में परामर्शदाता की उपस्थिति महसूस कर सकें और जब चाहें, सहज होकर उनसे संपर्क कर सकें।

इस सेवा को और अधिक प्रभावशाली व सशक्त बनाने हेतु पाँच अनुभवी क्लिनिकल साइकोलॉजिकल काउंसलर की भी नियुक्ति की गई है। यह सभी क्लिनिकल साइकोलॉजिकल काउंसलर विश्वविद्यालय में भावनात्मक व मानसिक

Services Cell) नियमित रूप से परामर्श सत्र, सामूहिक चर्चाएँ, व्यक्तिगत काउंसलिंग, सामूहिक काउंसलिंग, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, और विशेष मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान आयोजित करता है। इसके अतिरिक्त, छात्रों की सामूहिक भागीदारी और सामंजस्य को बढ़ावा देने हेतु टीम-बिल्डिंग गेम्स, रचनात्मक प्रतियोगिताएँ, कला एवं अभिव्यक्ति के कार्यक्रम तथा संवादात्मक सत्रों का भी आयोजन किया जाता है, जिससे छात्रों में सहयोग, नेतृत्व, संवाद कौशल और सामूहिकता की भावना विकसित हो सके।

सामाजिक कलंक के अपनी समस्याओं को साझा कर सके। इसी कारण व्यक्तिगत काउंसलिंग सत्र पूर्णतः व्यक्तिगत और निजी रूप से आयोजित किए जाते हैं, जिनकी जानकारी न तो किसी अन्य छात्र को दी जाती है, न ही अभिभावकों या शिक्षकों को—जब तक कि छात्र स्वयं इसकी अनुमति न दे। यह गोपनीयता छात्रों के विश्वास को बनाए रखने का आधार है और यही कारण है कि विद्यार्थी खुलकर अपनी मानसिक, भावनात्मक, शैक्षणिक या पारिवारिक समस्याएँ साझा कर पाते हैं।



साइक्लोथॉन-23 अप्रैल 2025

कल्याणकारी सेवा प्रकोष्ठ (Wellbeing Services Cell) का एक और महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र छात्र-छात्राओं को तनाव-प्रबंधन, आत्म-स्वीकृति, समय प्रबंधन, सकारात्मक सोच और करियर-निर्णय जैसे जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रशिक्षित करना है। यह सभी गतिविधियाँ न केवल विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाती हैं, बल्कि उन्हें भविष्य की प्रतिस्पर्धाओं के लिए तैयार भी करती हैं। इस सेवा के माध्यम से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहा है कि हर छात्र को एक सुरक्षित, सहयोगी और संवेदनशील वातावरण प्राप्त हो जहाँ वह खुलकर सोच सके, संवाद कर सके और संपूर्ण रूप से विकसित हो सके।

इस प्रयास से विद्यार्थियों के भीतर एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। वे अब पहले से अधिक आत्मविश्वास से भर गए हैं। उनका शैक्षणिक प्रदर्शन, सहभागिता और सामाजिक संबंध बेहतर हुए हैं। कई विद्यार्थियों ने साझा किया कि इस जागरूकता अभियान ने उन्हें आत्म-विक्षेपण करने, अपने भीतर की उलझनों को समझने और समय रहते मार्गदर्शन प्राप्त करने की दिशा में प्रेरित किया।

इस पहल में समूह चर्चा, कार्यशालाएँ, पोस्टर

प्रदर्शनी और काउंसलिंग सेशन आयोजित किए गए, जिनमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों के बीच सहयोग, सह-अनुभूति और समझदारी को बढ़ावा दिया। छात्रों ने बताया कि वे अब अपने सहपाठियों की मानसिक समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील हुए हैं, और उन्हें समर्थन देने में सक्षम महसूस करते हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की इस पहल ने छात्रों को न केवल मानसिक रूप से स्वस्थ रहने की प्रेरणा दी, बल्कि उनमें आत्म-जागरूकता, आत्म-संयम और सामाजिक जिम्मेदारी का भी बीजारोपण किया। यह एक ऐसा कदम है जिसने शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखते हुए, जीवन के मूलभूत आयामों से भी जोड़ा है।

इस प्रकार कल्याणकारी सेवा प्रकोष्ठ (Wellbeing Services Cell) आज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय केवल एक सेवा मात्र से कहीं आगे बढ़कर विद्यार्थी कल्याण की एक मजबूत आधारशिला बन चुकी है। प्रकोष्ठ का उद्देश्य केवल समस्याओं का समाधान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को मानसिक रूप से सशक्त आत्म-विश्वासी और जीवन कौशल से युक्त

बनाना है, जिससे वे जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना सकारात्मक रूप से कर सकें। इस क्रम में विद्यार्थी व्यक्तिगत काउंसलिंग, जागरूकता अभियानों और डिजिटल सहायता जैसी सुविधाओं से लाभान्वित हो रहे हैं तथा निरन्तर आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त कर रहे हैं। निःसंदेह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की यह पहल उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए छात्र सहायता प्रणाली का एक प्रेरणादायक और अनुकरणीय मॉडल बन चुकी है।



**प्रो. अनुपम कुमार नेमा,
छात्र अधिष्ठाता**



मालवीय
भवन में पुष्प
प्रदर्शनी का
अनुपम
संयोजन



रंग-बिरंगे फूलों से
सजा मालवीय भवन
प्रांगण





खेल संस्कृति का विकास और विस्तार

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद्

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को आकार देने के प्रमुख उद्देश्यों में से एक था विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास और जब विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की बात होती है, तो उसमें उनकी शैक्षणिक प्रगति के साथ साथ शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का इस बात पर विशेष जोर रहा।

“दूध पियो, कसरत करो, नित्य जपो हरिनामा मन लगाई विद्या पढ़ो, पूरे होंगे सब काम” ॥

महामना का यह कथन विद्यार्थी जीवन में खेलों के

महत्व और आवश्यकता को इंगित करता है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने इस विचार को साकार करने के लिए उल्लेखनीय प्रयास और प्रगति की है और विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् ने इसमें अग्रणी भूमिका निभाई है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर के निर्माण व विकास की प्रक्रिया में महामना ने इस बात का भी ध्यान रखा कि विश्वविद्यालय केवल पुस्तकीय ज्ञान का स्थान बनकर न रह जाए, बल्कि विद्यार्थियों के चौराहा विकास को आकार देने वाला संस्थान बने। इसी क्रम में विश्वविद्यालय परिसर स्थित

छात्रावासों के ठीक सामने खेल के मैदान निर्मित किये गए, ताकि विद्यार्थी अपने शारीरिक विकास को लेकर भी गंभीर, सक्रिय और प्रेरित रहें।

वर्ष 1975 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा यह फैसला लिया गया कि एक ऐसी इकाई का गठन किया जाए जो विद्यार्थियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना कौशल दिखाने का अवसर प्रदान करे तथा उसकी तैयारी कराए। इसी क्रम में विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् की औपचारिक शुरुआत कुलपति डॉ. के. एल. श्रीमाली के संरक्षण में हुई। परिषद् का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रशिक्षित

प्रशिक्षकों और सहायक निदेशकों के मार्गदर्शन में उच्च स्तर का खेल प्रशिक्षण प्रदान करना रहा है, ताकि वे अंतर विश्वविद्यालय, राज्य, राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें। परिषद् महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के उस विचार को चरितार्थ करने का प्रयास है जिसमें महामना कहते हैं कि इस विश्वविद्यालय को विद्यार्थियों के चरित्र व संस्कार के विकास के साथ ही शारीरिक व बौद्धिक विकास को दूरदर्शी विचारों के साथ स्थापित किया जाए। उनके उन्नत विचार में शिक्षा और खेल ही छात्रों में अनुशासन एवं देश प्रेम की भावना को बल देते हैं।

खेल केवल शारीरिक विकास या तंदुरुस्ती का ही जरिया नहीं है, बल्कि यह जीवन मूल्यों, नेतृत्व, अनुशासन, सहयोग और आत्म-विश्वास का निर्माण करने में भी मदद करता है। मसलन कोई भी खेल एकल नहीं होता यह एक टीम वर्क होता है। खेल विद्यार्थियों में खेल भावना और अनुशासन जैसी प्रवृत्तियों को पोषित करता है। क्रीड़ा परिषद् इस के लिए अवसर प्रदान करता है। विभिन्न मौकों पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन कर परिषद् इसमें बखूबी अपनी भूमिका अदा करता है।

आज कल मानसिक तनाव के मामलों में खासी बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। विश्वविद्यालय भी इससे अछूता नहीं है। घर से पढ़ाई के लिए पहली बार बाहर निकलने वाले विद्यार्थी भी इस स्थिति से

रूबरू होते हैं। अपनी दिनचर्या, पढ़ाई, खान-पान, रहने की व्यवस्था, परीक्षा आदि, घर से दूर रह कर सब कुछ अपने स्तर पर करने का एक नतीजा, विद्यार्थियों पर अतिरिक्त मानसिक दबाव के रूप में भी सामने आता है। यह स्थिति कर्मचारियों और शिक्षकों के सामने भी आती है। ऐसे में खेल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। खेल को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने से न केवल शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि मानसिक तनाव से निपटने में भी सहायता मिलती है। प्रतियोगिताओं में भागीदारी से विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल और सामाजिक मेलजोल की भावना विकसित होती है। यह उनके आत्मविश्वास में वृद्धि करता है। क्रीड़ा परिषद् इन सभी पहलुओं के संतुलित विकास की दिशा में नियमित कार्य करता आ रहा है।

खेल के साथ ही हीरे वाली ही स्थिति होती है। जब तक किसी जौहरी की नज़र न पड़े हीरे की कोई कीमत नहीं होती है। सिर्फ नज़र पड़ना ही काफ़ी नहीं होता, इसके लिए आवश्यक होता है हीरे को तराशना। हीरा जितनी कुशलता से तराशा जाता है उसकी कीमत भी उतनी ही अधिक होती है। क्रीड़ा परिषद् विद्यार्थियों के जीवन में उसी जौहरी की भूमिका में है जो उनके खेल कौशल की पहचान कर उनका संवर्धन करता है। परिषद् द्वारा विद्यार्थियों को उचित खेल वातावरण में प्रतियोगिता करने का सुअवसर प्राप्त होता है। प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों की

प्रतिभा को पहचान मिलती है। प्रतिभावान छात्रों को विश्वविद्यालय की तरफ से उच्च प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु अन्य विश्वविद्यालयों के साथ प्रतियोगिता करने के अवसर प्रदान किये जाते हैं। यह उनको अगले स्तर की प्रतियोगिताओं में अपना कौशल दिखाने का अवसर प्रदान करता है। खेल बोर्ड विद्यार्थियों की खेल प्रतिभाओं की पहचान करता है और उन्हें प्रशिक्षित कर उनकी क्षमताओं का संवर्धन करता है। इसके लिए परिषद् द्वारा कोचिंग कैंप, चयन प्रतियोगिताएँ आदि का आयोजन किया जाता है।





इंटर फैकल्टी वॉलीबॉल

एक बार प्रतिभा की पहचान कर ली गई, निरंतर अभ्यास के साथ प्रतिभा को तराश भी लिया जाए तो प्रतिभा दिखाने का अवसर तो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर ही मिलता है। विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् का इस पर विशेष जोर है। यह जोर केवल मंच पर अवसर मिलने का नहीं है अपितु इस बात पर भी है कि प्रतिभागी वहाँ प्रतिस्पर्धा कर सकें। इसके लिए परिषद् द्वारा उचित मार्ग दर्शन हेतु कुशल प्रशिक्षकों के साथ-साथ प्रशिक्षण कैम्प की भी सुविधा मुहैया कराई जाती है। इन्हीं प्रयासों से फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबॉल, क्रिकेट, निशानेबाजी, तीरंदाजी, पावरलिफ्टिंग, बास्केटबॉल एवं कुश्ती सरीखे खेलों में विश्वविद्यालय के कई विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाकर कर लगातार विश्वविद्यालय को गौरवान्वित कर रहे हैं।

खेल नियमों की सीमा के कारण सभी विद्यार्थी प्रतिभागी के तौर पर मैदान पर कौशल तो नहीं दिखा सकते। यह भी संभव नहीं है कि अकेला खिलाड़ी प्रतियोगिता में सफल प्रतिस्पर्धा कर सके, उसके पीछे एक बड़ी टीम होती है। क्रीड़ा परिषद् का ध्यान उस टीम के निर्माण पर भी है जो खेलों का सफल आयोजन और प्रबंधन कर सके। परिषद् द्वारा अंतर छात्रावास, अंतर महाविद्यालय, अंतर विभागीय, अंतर संकाय प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों को नेतृत्व और आयोजन प्रबंधन का प्रशिक्षण भी मिलता है। राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न दिवसों पर भी खेल प्रतियोगिताओं का विशेष आयोजन किया जाता है।

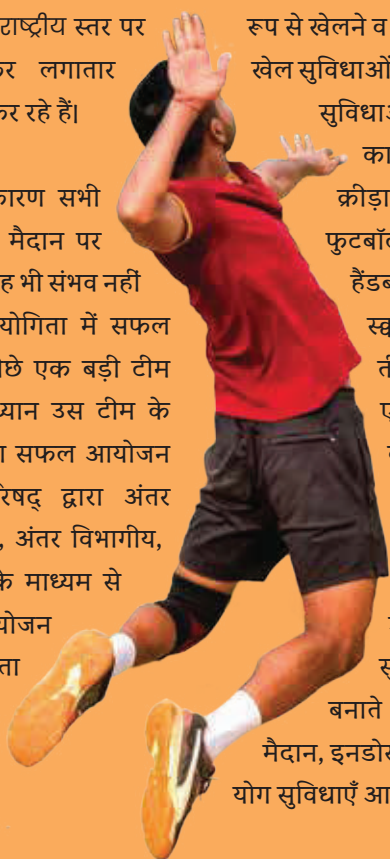
मसलन राष्ट्रीय एकता दिवस पर एकता दौड़, राष्ट्रीय खेल दिवस पर हॉकी, तैराकी, कुश्ती, बैडमिन्टन आदि खेलों की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा महिला दिवस को विशेष खेल महोत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसमें विश्वविद्यालय की सभी महिला शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्राओं को प्रतियोगिता हेतु आमंत्रित किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर क्रीड़ा परिषद् द्वारा प्रत्येक वर्ष योग शिविर लगाया जाता है। विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न खेलों में अंतर महाविद्यालय खेल, अंतर

विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। यह विद्यार्थियों को आयोजन प्रबंधन, नेतृत्व और सहयोग की भावना सिखाने में मदद करता है।

पिछले कुछ वर्षों में विश्वविद्यालय में खेलों के प्रति जागरूकता और अधिक बढ़ी है। विद्यार्थी खेल की नई-नई विधाओं में कौशल हासिल कर रहे हैं। विभिन्न मंचों पर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और सफलता भी पा रहे हैं। विद्यार्थियों के बढ़ते क्रदमों के साथ विश्वविद्यालय भी कदमताल कर रहा है। प्रत्येक वर्ष विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा खेलों को सुचारु रूप से खेलने व प्रतियोगिताओं के संचालन हेतु खेल सुविधाओं को विकसित करने या वर्तमान सुविधाओं को सुव्यवस्थित करने का कार्य किया जाता है। विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा छात्रों को फुटबॉल, हॉकी, क्रिकेट, वॉलीबॉल, हैंडबॉल, टेनिस, टेबल टेनिस, स्क्वाश, तैराकी, निशानेबाजी, तीरंदाजी, बैडमिन्टन, एथलेटिक्स, बीच वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, शतरंज, जूडो, किक-बॉक्सिंग, कराटे, योग, बॉक्सिंग, कबड्डी व खो-खो की सुविधाएँ वर्तमान में उपलब्ध करायी जाती है। खेल सुविधाओं को लगातार बेहतर बनाते हुए परिषद् ने आधुनिक खेल मैदान, इनडोर स्टेडियम, तैराकी पूल, जिम व योग सुविधाएँ आदि विकसित की हैं।

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने हेतु अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इनमें आधुनिक तकनीक से सुसज्जित और अंतरराष्ट्रीय पैमाने से बने हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, बास्केटबॉल, टेनिस, तथा एथलेटिक्स के मैदान, बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, जिम्नेजियम, वेटलिफ्टिंग सरीखे खेलों के लिए बेहतरीन इनडोर स्टेडियम शामिल हैं। नियमित प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं के लिए स्वच्छ और आधुनिक तरण ताल विद्यार्थियों को खेल की एक नई विधा में अवसर प्रदान कर रहा है। खेल में नियमितता और

प्रशिक्षण में संवर्धन के लिए ज़रूरी है- खिलाड़ियों का फिट रहना। इसके लिए विश्वविद्यालय में अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित व्यायामशाला के साथ-साथ विभिन्न जगहों पर निर्मित ओपेन एयर जिम उपलब्ध है। विभिन्न खेलों में विद्यार्थियों की खेल प्रतिभा को निखारने के लिए प्रशिक्षकों द्वारा नियमित अभ्यास एवं प्रशिक्षण सत्र कराये जाते हैं। प्रशिक्षु खिलाड़ियों को प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करने हेतु अंतर संकाय, अंतर विश्वविद्यालय एवं अखिल भारतीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। खेल में प्रतिभावान होने के बावजूद सबसे बड़ी बाधा बनती है आर्थिक विपन्नता। इसके लिए क्रीड़ा परिषद् द्वारा प्रोत्साहन स्वरूप छात्रवृत्ति, प्रमाण पत्र, ट्रॉफी और राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भागीदारी हेतु विशेष सुविधाएँ प्रदान की जाती है। खिलाड़ियों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छात्रावास, प्राथमिक चिकित्सा और फिजियोथेरेपी की उत्तम व्यवस्था मुहैया करायी जाती है।





इंटर-फैकल्टी एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2024-25

क्रीड़ा परिषद् एक व्यवस्थित और संगठित इकाई है। कुलपति इसके अध्यक्ष होते हैं। इसके अलावा उपाध्यक्ष, कुलपति द्वारा नामित वरिष्ठ आचार्य, सचिव (शारीरिक शिक्षा निदेशक/अध्यापक) व विभिन्न खेलों के प्रभारी सदस्य शामिल होते हैं। खेल बोर्ड अपना वार्षिक खेल कैलेंडर तैयार करता है, जिनके आधार पर अंतर-संकाय और विश्वविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। चयन समिति खिलाड़ियों का चयन कर उन्हें प्रशिक्षण, कोचिंग कैंप, खेल किट और यात्रा भत्ता प्रदान करती है। क्रीड़ा परिषद् विश्वविद्यालय की खेल नीति के अनुरूप बजट निर्माण, संसाधनों का प्रबंधन, खेल उपकरणों की उपलब्धता और मैदानों के रख-रखाव की जिम्मेदारी भी निभाता है। इसके अलावा बोर्ड राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए भी आवश्यक समन्वय कार्य करता है।

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् की खेल नीति तीन चरणों पर आधारित है: पहले चरण में अंतर संस्थान/अंतर संकाय प्रतियोगिता का संचालन संकाय अथवा संस्थान स्तर पर किया जाता है। जिसे संकाय/संस्थान के अंतर्गत आने वाले सभी विभागों के विद्यार्थियों के मध्य आयोजित कराया जाता है। दूसरे चरण की प्रतियोगिता अंतर-संकाय प्रतियोगिता कहलाती है, जिस के माध्यम से विश्वविद्यालय की एक टीम चयनित की जाती है,

जो अंतर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धा करने हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करती है। यह प्रतियोगिता पाँच अलग क्षेत्रों (पूर्वी, मध्य, उत्तरी, दक्षिणी एवं पश्चिमी क्षेत्र) में खेली जाती है। तीसरे चरण में अंतर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में क्षेत्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त करने पर विश्वविद्यालय विजेता टीम/खिलाड़ी अखिल भारतीय अंतर-विश्वविद्यालय स्तर पर भाग लेती है एवं 'खेलो इंडिया' प्रतियोगिता में भी प्रतिनिधित्व करती है। विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् द्वारा समय-समय पर अन्य प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है जिसका लक्ष्य सभी विद्यार्थियों को खेल प्रतियोगिता से जोड़ना एवं विद्यार्थियों के मध्य आपसी सामंजस्य को विकसित करना है। खेल बोर्ड विश्वविद्यालय की ओर से निर्धारित खेल नीति का पालन और क्रियान्वयन सुनिश्चित करता है तथा UGC और अन्य खेल निकायों के निर्देशों के अनुरूप कार्य करता है।

इसी क्रम में पैरालम्पिक खेलों की तर्ज पर विश्वविद्यालय में भी दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु प्रत्येक वर्ष पैरालम्पिक खेल आयोजित किये जाते हैं। दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विजुअल क्रिकेट प्रतियोगिता, ब्लाइन्ड क्रिकेट प्रतियोगिता, ब्लाइन्ड शतरंज, आर्थो क्रिकेट प्रतियोगिता, व्हील चेयर रेस, स्लो साइकल रेस, ब्लाइन्ड 50 मीटर रेस, आर्थो रेस, टेबल टेनिस, बैडमिन्टन, रंगोली एवं

रस्साकशी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

प्रमुख प्रतियोगिताएँ एवं आयोजन

इंटर फैकल्टी टग ऑफ वार (महिला) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी वॉलीबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी टेबल टेनिस (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी क्रॉस कंट्री (पुरुष और महिला) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी बास्केटबॉल (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी बैडमिन्टन (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी शतरंज (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी फुटबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी एक्वेटिक्स (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी कबड्डी (पुरुष) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी पावर लिफ्टिंग (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी हॉकी (पुरुष) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी योग (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी एथलेटिक्स (पु. व म.) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी वॉलीबॉल (महिला) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी खो-खो (पुरुष) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी कबड्डी (महिला) टूर्नामेंट
इंटर फैकल्टी हैंडबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
अंतर संकाय हैंडबॉल (पु. व म.) टूर्नामेंट
अंतर संकाय फुटबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला खेलों का आयोजन

क्रीड़ा परिषद् अपने सामाजिक दायित्व का भी निर्वहन करता है। यह संस्था केवल प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ियों के कौशल निखारने में ही अपना ध्यान नहीं देती है, बल्कि खेल के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने का भी कार्य करती है। नशा मुक्ति, स्वास्थ्य जागरूकता, योग, राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों पर खेलों के माध्यम से जागरूकता फैलाने हेतु साइकिल रैली, एकता दौड़, योग शिविर जैसे कार्यक्रम नियमित आयोजित किए जाते हैं। साथ ही समाज में खेलों के प्रति जागरूकता फैलाने और खेल-संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न आउटरीच कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जैसे – फिटनेस ड्राइव, मैराथन, योग शिविर आदि।

विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद् की योजना है कि अंतर विश्वविद्यालय हॉकी, हैंडबॉल और महिला कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित कर विद्यार्थियों को नए अवसर प्रदान किए जायें। साथ ही खेल विज्ञान व परफॉर्मेंस एनालिटिक्स की दिशा में नए प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार कर उसका क्रियान्वयन किया जाए। ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परचम लहरा सकें। क्रीड़ा परिषद् की भविष्य में योजना है कि छात्रवृत्तियों में विस्तार किया जाए ताकि आर्थिक विपन्नता प्रतिभा में अड़चन न बने। तकनीकी रूप से खेल को और समृद्ध बनाने के लिए डिजिटल रजिस्ट्रेशन एवं ट्रेकिंग सिस्टम का भी विकास किया जा रहा है।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय का क्रीड़ा परिषद् केवल एक खेल प्रबंधन इकाई नहीं बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, अनुशासन, नेतृत्व और सहयोग के गुणों को निखारने की प्रयोगशाला है। महामना मालवीय जी के दर्शन के अनुरूप क्रीड़ा परिषद् ज्ञान और स्वास्थ्य के बीच संतुलन को स्थापित करते हुए विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल मानचित्र पर गौरवान्वित कर रहा है।

सत्र 2025-26 की प्रस्तावित प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रम

टर फैकल्टी टग ऑफ वार (महिला) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी वॉलीबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी टेबल टेनिस (पु. व म.) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी क्रॉस कंट्री (पुरुष और महिला) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी बास्केटबॉल (पु. व म.) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी बैडमिंटन (पु. व म.) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी शतरंज (पु. व म.) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी फुटबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी एक्वेटिक्स (पु. व म.) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी कबड्डी (पुरुष) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी पावर लिफ्टिंग (पु. व म.) टूर्नामेंट

इंटर फैकल्टी हॉकी (पुरुष) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी योगा (पु. व म.) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी एथलेटिक्स (पु. व म.) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी वॉलीबॉल (महिला) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी खो-खो (पुरुष) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी कबड्डी (महिला) टूर्नामेंट
 इंटर फैकल्टी हैंडबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
 अंतर संकाय हैंडबॉल (पु. व म.) टूर्नामेंट
 अंतर संकाय फुटबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
 अंतर विश्वविद्यालय हॉकी (पुरुष) टूर्नामेंट
 अंतर विश्वविद्यालय हैंडबॉल (पुरुष) टूर्नामेंट
 अंतर विश्वविद्यालय कबड्डी (महिला) टूर्नामेंट



प्रो. बी. सी. कापरी
 महासचिव, विश्वविद्यालय
 क्रीड़ा परिषद

प्रतिदान

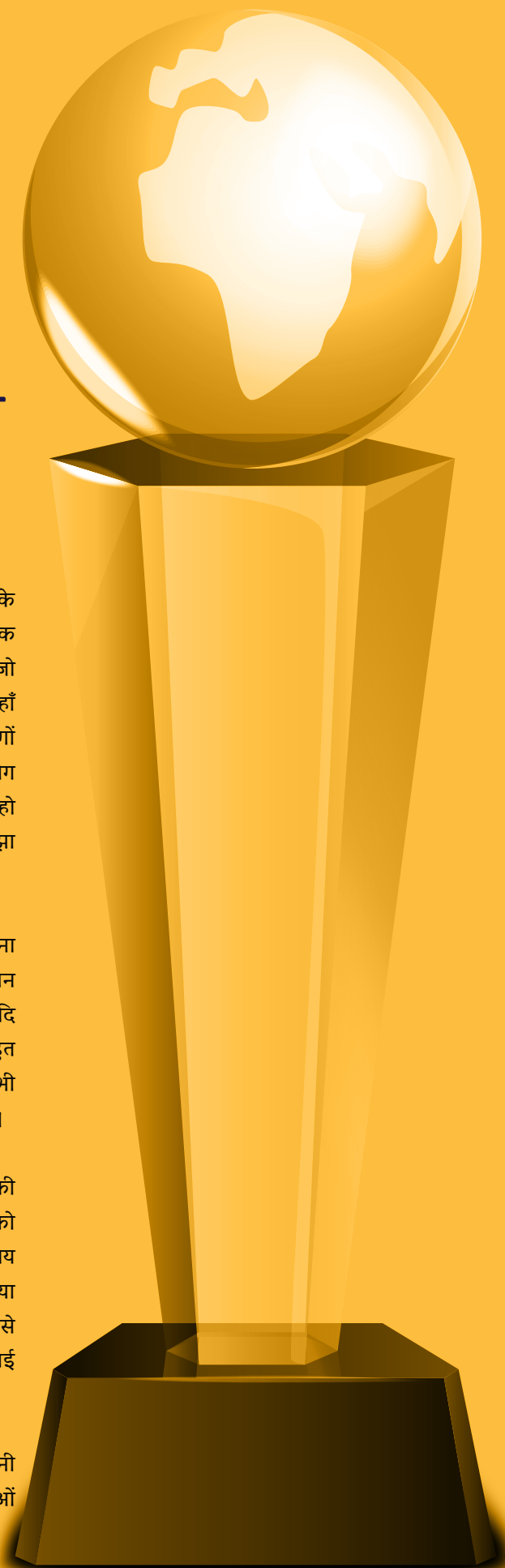
विश्वविद्यालय की विकास यात्रा को गति दे रहा पुरा छात्रों का योगदान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय विश्व का एक ऐसा अनूठा विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना लोगों के सहयोग से हुई। विश्वविद्यालय के दानदाताओं की सूची बहुत लम्बी है। विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी प्रत्येक दानदाता का बहुत आदर करते थे और जिससे जो बन सकता था, बड़े स्नेह व सम्मान के साथ स्वीकार करते थे। बड़े दानदाताओं की सूची में जहाँ राजा-रजवाड़े, उद्योगपति, सेठ, साहूकार, व्यापारी शामिल थे, तो वहीं किसानों, नौकरी-पेशा लोगों समेत समाज के विभिन्न तबके के लोगों ने अपनी क्षमतानुसार विश्वविद्यालय की स्थापना में सहयोग किया। यह सहयोग एवं सहायता राशि संग्रह मालवीय जी के विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण ही संभव हो पाया मालवीय जी देश की जनता को विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों को भली-भाँति समझा पाने में सफल रहे।

विश्वविद्यालय आज अपने गौरवशाली इतिहास के 109 वर्ष पूरे कर रहा है। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर आज तक लाखों विद्यार्थी स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधि अर्जित कर चुके हैं। वर्तमान समय में यहाँ के पुरा छात्र देश और विदेश में सामाजिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। इन पुरा छात्रों की उपलब्धियों को समय-समय पर बहुत सराहा गया एवं विकास की नीति निर्धारण में उनके कार्यों को शामिल किया गया। इन्हीं सभी उपलब्धियों से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय देश एवं विदेश के विश्वविद्यालयों में अग्रणी बना हुआ है।

विज्ञान और तकनीक के दौर में शिक्षा और शिक्षण में प्रौद्योगिकी और नवाचार पर ज़ोर समय की माँग है। ऐसे में सरकार द्वारा प्राप्त आर्थिक सहायता विश्वविद्यालयों की अपेक्षाओं व आकांक्षाओं को साकार करने में प्रायः अपर्याप्त सिद्ध होती है। इस परिस्थिति में दुनियाभर के विश्वविद्यालय वैकल्पिक माध्यमों से संसाधन जुटाते हैं, फिर चाहे वो तकनीकी और नवाचार के माध्यम से हो या आर्थिक माध्यम से। विश्वविद्यालय के पुरातन विद्यार्थी इस पहल में बढ़-चढ़ कर भागीदार होते हैं। ऐसे में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुरातन विद्यार्थियों का समृद्ध समुदाय विश्वविद्यालय को नई ऊँचाई तक पहुँचाने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

आज दुनिया के प्रमुख विश्वविद्यालय एवं संस्थान नवाचार को अपनाकर सैकड़ों वर्ष पुरानी अपनी विशिष्टता एवं गुणवत्ता बनाए हुए हैं। नवाचार को स्थापित करने का श्रेय मुख्य रूप से उन्हीं संरचनाओं के पुरा छात्रों के सहयोग 'प्रतिदान' से होता है।



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रतिदान की परंपरा इसकी स्थापना काल से ही है, परंतु कालांतर में इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है, जिससे 'प्रतिदान' लगभग न के बराबर रह गया।

प्रतिदान की पुनः अवधारणा के साथ पूर्व कुलपति प्रो. सुधीर जैन ने इसको पुनर्जीवित किया। इसके लिए विश्वविद्यालय द्वारा 'महामना वार्षिक निधि' का प्रस्ताव पारित कर इसे कार्यरूप में लेने का निर्णय किया गया।

प्रतिदान का उद्देश्य

1. विश्वविद्यालय के उत्कृष्टता प्रदान करने के प्रयासों को सशक्त बनाना।
2. योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति तथा अन्य सहायता प्रदान करना।
3. शैक्षणिक उत्कृष्टता तथा प्रयोगशालाओं के उन्नयन में सहयोग करना।

प्रतिदान के प्रकार

1. सामान्य निधि : इसमें अप्रतिबंधित कार्यों के लिए दी गई राशि का उपयोग करना होता है। इसका प्रयोग विशिष्ट कार्यक्रम, नवाचार, शोध, छात्रवृत्ति तथा अन्य कार्यों के लिए किया जाता है।

2. लक्षित दान

विद्यार्थी : वित्तीय सहायता, छात्रवृत्तियाँ, पाठ्येतर कार्यक्रम

संकाय सदस्य : अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास एवं अध्येता वृत्तियाँ

कार्यक्रम : वर्तमान अथवा नए कार्यक्रम को वित्तीय सहायता प्रदान करना

अनुसंधान : नवीन एवं प्रभावशाली अनुसंधान को सहयोग एवं पुरस्कृत करना

3. विशिष्ट दान : किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए बड़ी राशि का जैसे-संकाय चेयर/नामित छात्रवृत्तियाँ/ नए केंद्र की स्थापना

The Hindu University

"Oh, let me live in pulses stirred to generosity, for so to live is heaven."

A CRORE OF RUPEES

is the minimum amount required to establish and maintain a fairly good residential and teaching

HINDU UNIVERSITY

. at Benares. Of this sum

50 LAKHS

should be raised before His Most Gracious Majesty the King-Emperor visits India in December next. Of this

25 LAKHS

should be collected as early as may be, before the 30th of September, 1911.

Relying on the grace and guidance of the Source of all good, and on the spirit of self-sacrifice and charity of my Hindu brothers and sisters; and in the name of all that Hindus hold sacred and dear—

I ask for the present for the following subscriptions :

20 donations of Rs. 1 lakh each or more;				
10	"	"	50,000	" "
100	"	"	10,000	" "
200	"	"	5,000	" "
500	"	"	2,000	" "
1,000	"	"	1,000	" "
2,000	"	"	500	" "
10,000	"	"	100	" "
50,000	"	"	10	" "

Besides these I shall ask for 15 special donations.

But of course all donations, however large or small, will be thankfully received, and a record of them will be preserved in the Registers of the First Subscribers to the Hindu University Fund.

I trust that every Hindu who can contribute any one of the sums noted above will remit such sum direct to the Agent, Bank of Bengal, Benares, to be credited to the Hindu University Fund. It is requested that an intimation of every remittance so made should at the same time be sent to me.

A large sum has to be raised within a very short time. Donors are, therefore, requested to be good enough to remit their subscriptions as early as they can.

ALLAHABAD,
July 15th, 1911.

MADAN MOHAN MALAVIYA.

Indian Press, Allahabad.

प्रतिदान के संबंध में विस्तृत जानकारी donate@bhu.ac.in पर प्राप्त की जा सकती है। भुगतान के लिए ऑनलाइन अथवा चेक-बुक का प्रयोग किया जा सकता है।

अमेरिका में रहनेवालों के लिए 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अमेरिका फाउन्डेशन' की स्थापना की गई है। इस फाउन्डेशन में जमा राशि पर अमेरिकी टैक्स नियमों के अनुसार कर में छूट की सुविधा उपलब्ध है। फाउन्डेशन का पता 'बी.एच.यू. अमेरिका फाउन्डेशन 5667, सनसेट क्रीक सी टी, प्लिसेन्टन, सी ए 94567 यू.एस.ए.' तथा ई-मेल आईडी donate@bhu.ac.in है।

महामना वार्षिक निधि में भारत में रहने वाले दानदाताओं को विश्वविद्यालय द्वारा रसीद प्रदान की जाती है। प्रतिदान पर भारतीय आयकर नियमों के अनुसार 100% की छूट मिलती है।

छात्रवृत्ति (Endowment) की राशि पाँच लाख रुपये (₹5,00,000) है, जिससे प्रति छात्र को पच्चीस हजार की छात्रवृत्ति दी जाती है। शेष राशि को मूलधन में जोड़ दिया जाता है ताकि भविष्य में छात्रवृत्ति की उपयोगिता बनी रहे।

स्वर्ण पदक की राशि पंद्रह लाख रुपये (₹15,00,000) है, जिससे स्वर्ण पदक के साथ नकद राशि प्रदान की जाती है।

प्रतिदान के अंतर्गत अनेक संस्थाएँ, औद्योगिक घराने एवं संगठन विद्यार्थियों को वार्षिक पच्चीस हजार रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान कर रहे हैं। इसका मुख्य उदाहरण 'माण्डवा फाउन्डेशन' हैदराबाद है जिसने इस वर्ष 100 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की।

विश्वविद्यालय में प्रतिदान के अतिरिक्त विभिन्न संस्थानों, संकायों एवं महाविद्यालयों में भी पुरा छात्र संगठन हैं। ये संगठन विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में सहयोग करते हैं।

कृषि विज्ञान संस्थान के पुराछात्र संगठन

AABHA (एग्रीकल्चर एसोसियेशन, बी.एच.यू.) ने चार करोड़ से अधिक की राशि इकट्ठा कर एक नए अतिथि गृह के निर्माण का कार्य आरंभ किया। यह निर्माण कुछ महीनों में पूरा कर लिया जाएगा। यहाँ के पुरा छात्र पिता एवं पुत्र श्री बेंकट रमैया जी एवं डॉ. प्रभाकर राव ने एक करोड़ (1,00,00,000) रुपये का सहयोग दिया। इस अभियान में कुल 500 से अधिक छात्रों का सहयोग प्राप्त है।

प्रतिदान कुल 1200 पुरा छात्रों एवं विश्वविद्यालयों के शुभचिंतकों द्वारा किया गया है। यह इस बात को दर्शाता है कि पिछले चार वर्षों में प्रतिदान करने वालों की संख्या बढ़ी है। जिसका प्रमुख कारण प्रतिदान करने वाले छात्रों एवं शुभचिंतकों की सूची तैयार करना तथा उनसे विभिन्न कार्यक्रमों के लिए सहयोग के लिए निवेदन करना है। यह ज़रूर है कि विश्वविद्यालय और पुरा छात्रों के बीच लंबे समय तक संवाद की कमी बनी रही, जिसके चलते यह अभियान उतना प्रभावी नहीं रहा, जितना हो सकता था। आज पुरा छात्र संबंध इकाई की स्थापना के बाद कुल साठ हजार पुरा विद्यार्थियों से बराबर संपर्क किया जाता है। इसके लिए एक समर्पित वेबसाइट बनाई गई जिसमें उन्हें विश्वविद्यालय की गतिविधियों का विवरण दिया जाता है, साथ ही साथ उन्हें विभिन्न प्रकार का संभव सहयोग प्रदान किया जाता है।



प्रतिदान प्राप्ति सारणी

वित्तीय वर्ष 2021-2025 तक का विवरण

वित्तीय वर्ष	प्रतिदान
2021-22	₹59,24,515
2022-23	₹2,70,72,309
2023-24	₹3,82,47,127
2024-25	₹1,49,27,491
कुल योग -	₹ 8,61,72,442

“मरुं पर मांगू नहीं, अपने तन के काज | परमारथ के कारने, मोहिं न आवै लाज ||”

भविष्य की योजना

पुरा छात्रों का विवरण उनके विभाग के पास या संकाय के पास उपलब्ध होता है तथा वे वहाँ के अध्यापकों के संपर्क में भी रहते हैं। पुराछात्र संपर्क व संबंध को और गति देने के लिए विभागाध्यक्ष /संस्थान /संकाय / महाविद्यालय को और सक्रियता से सहभागिता करनी होगी, ताकि विश्वविद्यालय के पुरा छात्र नेटवर्क को और विस्तार दिया जा सके। वर्ष 2021-2025 के परिणाम से स्पष्ट है कि इसे एक अभियान के रूप में लेकर और दान -दाताओं को प्रेरित करके योगदानकर्ताओं की संख्या में इजाफा किया जा सकता है। ऐसा करने से दानकर्ताओं की संख्या, जो फिलहाल कुल पुराछात्रों की संख्या के एक प्रतिशत से भी काफी कम है, को कम से कम 10 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा जा सकता है।

विश्वविद्यालय निधि में 200 रुपये से लेकर अपनी इच्छा और सामर्थ्य के अनुसार प्रतिदान दिया जा सकता है। यह प्रतिदान लक्षित या सामान्य भी हो सकता है। आपका एक सहयोगात्मक कदम विश्वविद्यालय की प्रतिदान की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए बीएचयू को प्रगति व प्रतिष्ठा के पथ पर अग्रसर कर सकता है।

प्रो. रमेश चन्द
सलाहकार, पुरा छात्र संबंध प्रकोष्ठ एवं
पूर्व निदेशक, कृषि विज्ञान संस्थान



ONOS

One Nation One Subscription

वन नेशन,

वन सब्सक्रिप्शन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के मूल में पूज्य महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का एक महान स्वप्न था - ज्ञान को जाति, धर्म और क्षेत्र की सीमाओं से मुक्त कर प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ बनाना। 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' (One Nation, One Subscription – ONOS), भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है, जो इस स्वप्न को 21वीं सदी के डिजिटल युग में एक नया आयाम दे रही है। यह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रत्येक छात्र, शोधार्थी और शिक्षक के लिए विश्वस्तरीय ज्ञान के द्वार खोल रही है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इस ऐतिहासिक आधुनिक "ज्ञान यज्ञ" पहल का एक गौरवान्वित भागीदार है।

सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क (INFLIBNET) केंद्र, अहमदाबाद की निदेशिका प्रो. देविका पी. माडल्ली ने विश्वविद्यालय प्रवास के दौरान अपने उद्बोधन में शोध में ONOS की उपयोगिता पर विस्तृत चर्चा की थी। हाल ही में, विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित एक अकादमिक मंच पर इस विषय पर गहन विचार-विमर्श हुआ जो यह दर्शाता है कि ONOS की गूँज राष्ट्रीय गलियारों से निकलकर अब हमारे विश्वविद्यालय के प्रांगण तक पहुँच चुकी है।

यह पहल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के "जय अनुसंधान" के आह्वान और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के उद्देश्यों से गहराई से जुड़ी है, जिसका लक्ष्य भारत को अनुसंधान और नवाचार में एक वैश्विक महाशक्ति बनाना है। ONOS भारत की अनुसंधान रणनीति में एक वैचारिक परिवर्तन का प्रतीक है। यह ज्ञान को कुछ चुनिंदा संस्थानों की संपत्ति की पुरातन मान्यता के विपरीत एक 'सार्वजनिक वस्तु' (Public Good) के रूप में

स्थापित करती है, जो सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है। यह योजना इस विश्वास पर आधारित है कि जब ज्ञान का प्रकाश सर्वव्यापी होगा, तभी देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

ONOS से पहले का परिदृश्य

1 जनवरी 2025 से पहले, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे बड़े और प्रतिष्ठित संस्थान भी अकादमिक ई-जर्नल्स (शोध पत्रिकाओं) तक पहुँचने के लिए एक जटिल और खंडित प्रणाली पर निर्भर थे। विश्वविद्यालय और देश के अन्य प्रमुख संस्थान e-ShodhSindhu, UGC-INFONET, और INDEST-AICTE जैसे विभिन्न संघों (consortia) के माध्यम से अलग-अलग प्रकाशकों से हजारों ई-जर्नल्स की सदस्यता लेते थे। यह प्रक्रिया कई समस्याओं से ग्रस्त थी:

- **अत्यधिक लागत और दोहराव:** अलग-अलग संस्थान और संघ एक ही ई-जर्नल या प्रकाशक के संग्रह के लिए बार-बार भुगतान करते थे, जिससे सरकारी धन का अपव्यय होता था। एक अनुमान के अनुसार, भारत इस बिखरी हुई व्यवस्था पर सालाना लगभग ₹1,500 करोड़ रुपये खर्च कर रहा था।

- **संसाधनों का असमान वितरण:** जहाँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, IITs जैसे बड़े संस्थान हजारों ई-जर्नल्स तक पहुँच बना पाते थे, वहीं देश के श्रेणी-2 और श्रेणी-3 शहरों में स्थित हजारों कॉलेज और छोटे विश्वविद्यालय वित्तीय बाधाओं के कारण इन मूल्यवान संसाधनों से पूरी तरह वंचित थे। इससे देश में एक गहरा अकादमिक विभाजन (academic divide) पैदा हो गया था, जहाँ कुछ छात्रों के पास ज्ञान का भंडार था, तो वहीं लाखों

छात्र नवीनतम शोध से अनभिज्ञ थे। आज हम ONOS के माध्यम से एक बिखरी हुई और महँगी व्यवस्था से समग्र, समावेशी, आधुनिक और अधिक सस्ती व्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं।

'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' (ONOS) :

इस बिखराव और असमानता को समाप्त करने के लिए, भारत सरकार ने 25 नवंबर 2024 को 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' योजना को मंजूरी दी और इसे 1 जनवरी 2025 से पूरे देश में लागू किया। सरल शब्दों में, ONOS एक केंद्रीकृत राष्ट्रीय सदस्यता प्रणाली है। इसके तहत, भारत सरकार स्वयं 30 से अधिक शीर्ष अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों के साथ एक राष्ट्रीय स्तर का सौदा करती है। इस एक सौदे के माध्यम से, देश के 6,300 से अधिक सरकारी वित्तपोषित उच्च शिक्षा और अनुसंधान संस्थानों के लगभग 1.8 करोड़ छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को 13,000 से अधिक अकादमिक ई-जर्नल्स तक मुफ्त पहुँच प्रदान की जाती है। इसे अकादमिक जगत के लिए "नेटफ्लिक्स" या "अमेज़न प्राइम" जैसा समझ सकते हैं, जहाँ एक राष्ट्रीय सदस्यता के तहत ज्ञान का विशाल भंडार सभी के लिए उपलब्ध है।

इस विशाल योजना के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी एक अनुभवी और सक्षम संस्था को सौंपी गई है। सरकार ने इस कार्य के लिए एक नवीन नौकरशाही ढाँचा बनाने के बजाय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के एक स्वायत्त अंतर-विश्वविद्यालय केंद्र, सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क (INFLIBNET) केंद्र, अहमदाबाद को नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया है।

यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक निर्णय है, क्योंकि INFLIBNET पहले से ही देश के सबसे बड़े पुस्तकालय संघ, e-ShodhSindhu का प्रबंधन कर रहा था। इसका अर्थ है कि उनके पास वैश्विक प्रकाशकों के साथ बातचीत करने, जटिल लाइसेंस समझौतों को संभालने और हज़ारों संस्थानों को तकनीकी सहायता प्रदान करने का वर्षों का व्यावहारिक अनुभव है। इस मौजूदा विशेषज्ञता का लाभ उठाकर, सरकार ने योजना के कार्यान्वयन में आने वाली संभावित बाधाओं और देरी को काफ़ी हद तक कम कर दिया है, जिससे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों के लिए यह परिवर्तन सहज और प्रभावी बन गया है।

ONOS के मुख्य उद्देश्य

इस परिवर्तनकारी पहल के पीछे तीन स्पष्ट और शक्तिशाली उद्देश्य हैं:

1. ज्ञान का लोकतंत्रीकरण

(Democratization of Knowledge):

इसका प्राथमिक लक्ष्य भौगोलिक स्थिति या संस्थागत आकार की परवाह किए बिना, देश के हर कोने में स्थित छात्र और शोधकर्ता को विश्वस्तरीय शोध सामग्री तक समान पहुँच प्रदान करना है। यह विशेष रूप से श्रेणी-2 और श्रेणी-3 शहरों में स्थित संस्थानों के लिए एक वरदान है, जो पहले लगभग हाशिये पर थे।

2. लागत-प्रभावशीलता(Cost-Effectiveness):

सभी संस्थानिक सब्सक्रिप्शनों को एक छत के नीचे लेकर आने से भारत की मोलभाव की शक्ति कई गुना बढ़ गई है। अब प्रकाशकों से पूरे राष्ट्र की ओर से एक साथ बातचीत की जाती है, जिससे न केवल दोहराव समाप्त हुआ है, बल्कि सदस्यता लागत में भी भारी कमी आई है। प्रारंभिक अनुमानों के अनुसार, इससे प्रति उपयोगकर्ता संस्थान लागत में लगभग 50% तक की कमी आ सकती है।



3. अनुसंधान को बढ़ावा(Boosting Research):

आज देश विकसित भारत के सृजन पथ पर

अग्रसरित है। यह योजना प्रधानमंत्री के "जय अनुसंधान" के नारे और 'विकसित भारत@2047' के राष्ट्रीय लक्ष्य को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम है। जब देश के हर शोधकर्ता की नवीनतम वैश्विक ज्ञान तक पहुँच होगी, तो यह स्वाभाविक रूप से भारत में एक मज़बूत, समावेशी और नवाचार-संचालित अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करेगा।

विश्वविद्यालय के शिक्षण समुदाय के लिए ONOS के व्यावहारिक लाभ

यह जानना सबसे महत्वपूर्ण है कि इस राष्ट्रीय योजना का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अकादमिक समुदाय के लिए दिन-प्रतिदिन के जीवन में क्या अर्थ है। ONOS हमारे लिए सिर्फ़ एक और डिजिटल संसाधन नहीं है, बल्कि यह सीखने, सिखाने और शोध करने के तरीके में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है।

स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए (For UG/PG Students)

असाइनमेंट और प्रोजेक्ट्स के लिए विश्वस्तरीय सामग्री: अब छात्रों को अपने असाइनमेंट, टर्म पेपर और प्रोजेक्ट के लिए केवल सामान्य वेब खोजों, विकिपीडिया या लाइब्रेरी की सीमित किताबों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। छात्र भी अब नवीनतम शोध लेखों का हवाला अपने असाइनमेंट, टर्म पेपर और प्रोजेक्ट में दे सकते हैं। फ़र्ज करें कि राजनीति विज्ञान के असाइनमेंट के लिए सीधे 'Taylor & Francis' या 'Sage' के नवीनतम शोध लेखों का उल्लेख किया जाए या अपने इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट के लिए 'IEEE' के कॉन्फ़्रेंस पेपर का उपयोग छात्रों द्वारा हो, आज ऐसी अकादमिक पारिस्थितिकी बनाई जा रही है। ONOS अकादमिक समुदाय को Elsevier, Springer, Wiley जैसे दुनिया के शीर्ष प्रकाशकों के मूल शोध लेखों तक बिना किसी बाधा के सीधी पहुँच प्रदान करता है। इससे न केवल काम की गुणवत्ता में अभूतपूर्व सुधार होगा, बल्कि यह सभी अकादमिक साझेदारों के प्रदर्शन को भी बेहतर बना सकता है।

प्रतियोगी परीक्षाओं और उच्च शिक्षा की तैयारी:

जो छात्र UPSC, NET/JRF या अन्य राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, उनके

निमित्त ONOS गहन और प्रामाणिक अध्ययन सामग्री का स्रोत है। विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए शोध लेख पाठक की समझ को गहरा कर सकते हैं। इन विश्वस्तरीय संसाधनों का उपयोग करके विदेशों में मास्टर्स या पी—एच.डी. के लिए आवेदन करते समय शोध प्रस्तावों (research proposals) और स्टेटमेंट ऑफ़ पर्पस (SOP) को ज्यादा प्रभावशाली और अकादमिक रूप से मज़बूत बनाया जा सकता है, जिससे चयन की अच्छी संभावना बनती है।

अंतरविषय अध्ययन (Interdisciplinary Studies) की स्वतंत्रता:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) बहु-विषयक शिक्षा पर जोर देती है और ONOS इसे वास्तविकता में बदलता है। आज ज्ञान विषयों की संकीर्ण सीमाओं में नहीं बँधा है। विज्ञान का एक छात्र अर्थशास्त्र पर हो रहे नवीनतम शोध को पढ़कर अपने स्टार्टअप आइडिया को परिष्कृत कर सकता है, और कला संकाय का एक छात्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सामाजिक प्रभावों पर हो रहे वैश्विक विमर्श को समझ सकता है। ONOS विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित और चिकित्सा (STEMM) से लेकर मानविकी, सामाजिक विज्ञान, कला और प्रबंधन तक सभी विषयों को समाविष्ट करता है, जिससे शोधार्थी को बहुआयामी जिज्ञासा की स्वतंत्रता होती है।

शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए

एक व्यापक और गहन साहित्य समीक्षा किसी भी अच्छे शोध की नींव होती है। इससे शोध के नये आयामों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है और शोध अंतराल को पहचानने में सुविधा होती है। अक्सर, शोध के दौरान सबसे निराशाजनक क्षण वह होता है, जब एक अत्यंत महत्वपूर्ण शोध पत्र एक 'पे-वॉल' (paywall) के पीछे बंद मिलता है। ONOS इस निराशा को दूर करता है। अब शोधार्थी की पहुँच विषय के लगभग हर प्रासंगिक शोध पत्र तक हो सकती है, चाहे वह किसी भी बड़े प्रकाशक द्वारा प्रकाशित किया गया हो। यह शोध की नींव को अभूतपूर्व रूप से मज़बूत करने और यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि किया गया शोधकार्य मौजूदा ज्ञान पर आधारित है और वैश्विक शोध संवाद में प्रभावी ढंग से योगदान कर रहा है।

अध्यापन में नवाचार (Innovation in Teaching):

शिक्षक अब अपने व्याख्यानों, प्रस्तुतियों और पाठ्यक्रम सामग्री को अपने क्षेत्र के नवीनतम शोध, केस स्टडीज़ और वैश्विक रुझानों से लगातार उन्नत कर सकते हैं। अद्यतन शोध पत्रों पर कक्षाओं में व्यापक चर्चा की जा सकती है, जो अभी कुछ हफ्ते पहले ही प्रकाशित हुए हैं। यह शिक्षण को और अधिक गतिशील, प्रासंगिक और आकर्षक बनाएगा और शिक्षक, विश्वविद्यालय के छात्रों को वास्तव में विश्वस्तरीय शिक्षा प्रदान कर पाएंगे।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग के नए द्वार:

जब शोधार्थियों की पहुँच दुनिया भर में हो रहे नवीनतम शोध तक होती है, तो वे वैश्विक अकादमिक समुदाय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं। नए शोध विचारों की पहचान कर सकते हैं, अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं के साथ सहयोग के अवसर तलाश सकते हैं, संयुक्त परियोजनाओं पर काम कर सकते हैं और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में अधिक आत्मविश्वास के साथ अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। ONOS शोधार्थियों को वैश्विक अकादमिक मंच पर एक सक्रिय भागीदार बनाने में सक्षम बनाता है।

ONOS का उपयोग: चरणबद्ध अनुदेशिका

ONOS का पूरा लाभ उठाने के लिए, यह जानना आवश्यक है कि इसके संसाधनों तक कैसे पहुँचा जाए और उनका कैसे उपयोग किया जाए। अच्छी बात यह है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे बड़े

और सुसज्जित संस्थानों के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत सरल और सुविधाजनक बनाई गई है। ONOS में एक स्मार्ट हाइब्रिड मॉडल अपनाया गया है जो उपयोगकर्ता को कैम्पस के अंदर अधिकतम सुविधा और कैम्पस के बाहर पूरी स्वतंत्रता देता है। इस प्रणाली को इस तरह से विकसित किया गया है कि यह भारत के विभिन्न संस्थानों की अलग-अलग तकनीकी क्षमताओं को ध्यान में रखती है, जो इसकी उपयोगकर्ता-केंद्रित सोच को दर्शाता है।

प्रथम विधि : कैम्पस के भीतर से अभिगमन (On-Campus Access)

यह ONOS के स्रोतों तक पहुँचने का सबसे सहज तरीका है। जब उपयोगकर्ता विश्वविद्यालय कैम्पस के भीतर चाहे जहाँ भी होते हैं लेकिन विश्वविद्यालय के



वाई-फाई या वायर्ड (LAN) नेटवर्क से जुड़े होते हैं, तो उनको ONOS संसाधनों तक पहुँचने के लिए किसी भी लॉगिन या पासवर्ड की आवश्यकता नहीं होती है। यह एक IP-आधारित स्वचालित पहुँच (IP-based automatic access) प्रणाली के कारण संभव है। विश्वविद्यालय का नेटवर्क पहले से ही ONOS प्रणाली में पंजीकृत है। इसलिए, उपयोगकर्ता सीधे किसी भी भागीदार प्रकाशक की वेबसाइट जैसे कि sciencedirect.com (Elsevier), nature.com (SpringerNature), ieeeexplore.ieee.org (IEEE) पर जा सकते हैं, और वेबसाइट उक्त उपयोगकर्ता को स्वचालित रूप से एक अधिकृत

उपयोगकर्ता के रूप में पहचान लेगी। यहाँ सभी सब्सक्राइब लेखों को डाउनलोड करने या पढ़ने का विकल्प दिखाई देगा। यह ऐसा है जैसे आपके लिए ज्ञान के सभी दरवाजे पहले से ही खुले हुए हैं।

द्वितीय विधि: कैम्पस के बाहर से अभिगमन (Off-Campus Access)

यह सुविधा उन सभी छात्रों और शिक्षकों के लिए एक वरदान है जो घर से, अपने गृहनगर से, किसी सम्मेलन में यात्रा करते समय, या फील्डवर्क के दौरान शोध-विषय पर शोध आलेख पढ़ना करना चाहते हैं। यह उनको भौगोलिक सीमाओं से मुक्त करता है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय INDIAN Access Management Federation (INFED) का अधिकृत सदस्य है। INFED ने अधिकृत उपयोगकर्ताओं को प्रमाणित करने और उन्हें किसी भी स्थान से, किसी भी समय ई-संसाधनों तक निर्बाध पहुँच प्रदान करने के लिए शिबोलेथ (Shibboleth) को अपनाया है। शिबोलेथ उपयोगकर्ताओं को एक ही संघीय सिंगल साइन-ऑन (Single Sign-On) ढाँचे के भीतर कई संसाधनों तक पहुँचने की सुविधा प्रदान करता है। इससे अधिकृत उपयोगकर्ताओं को कहीं से भी, कभी भी ई-संसाधनों तक पहुँचने की सुविधा मिलती है। यह एक सुरक्षित प्रणाली है, जिसमें प्रत्येक उपयोगकर्ता को संस्थान की पहचान लॉगिन (उपयोगकर्ता और पासवर्ड) के रूप में समझा जा सकता है। यह एक डिजिटल मास्टर-की है जो ONOS के स्रोतों के ज्ञान भंडार को खोल सकती है। कैम्पस के बाहर से ONOS पोर्टल के उपयोग की चरणबद्ध प्रक्रिया इस प्रकार है:

1. पाठक वेब ब्राउज़र में ONOS के आधिकारिक पोर्टल onos.gov.in पर जाएं।
2. होमपेज पर, ऊपरी दाएँ कोने में 'Login' मेनू पर क्लिक करें और ड्रॉपडाउन से 'User login' चुनें।



3. अब पाठक को संस्थान चुनने वाले पेज पर पुनः निर्देशित किया जाएगा। यहाँ दो ड्रॉपडाउन मेनू हैं:
 - पहले मेनू में अपना राज्य 'Uttar Pradesh' चुनें।
 - दूसरे मेनू में अपने संस्थान का नाम 'Banaras Hindu University' टाइप करना शुरू करें और सूची से इसे चुनें।
4. जैसे ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का चयन करेंगे, एक 'Institutional Login' बटन दिखाई देगा। इस पर क्लिक करें।



5. यह पाठक को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के INFED लॉगिन पेज पर ले जाएगा। यहाँ वही यूजरनेम और पासवर्ड डालना है जो वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ईमेल या अन्य विश्वविद्यालय सेवाओं के लिए उपयोग करते हैं।



6. सफलतापूर्वक लॉगिन करने के बाद, सहमति (consent) के लिए एक पेज दिखाई देता है। इसे स्वीकार करें। अब पाठक ONOS पोर्टल पर वापस आ जाएगा और सभी सब्सक्राइब प्रकाशकों की सूची देख पाएंगे। किसी भी प्रकाशक पर क्लिक करके उनके ई-ई-जर्नल्स तक पहुँच जा सकता है।



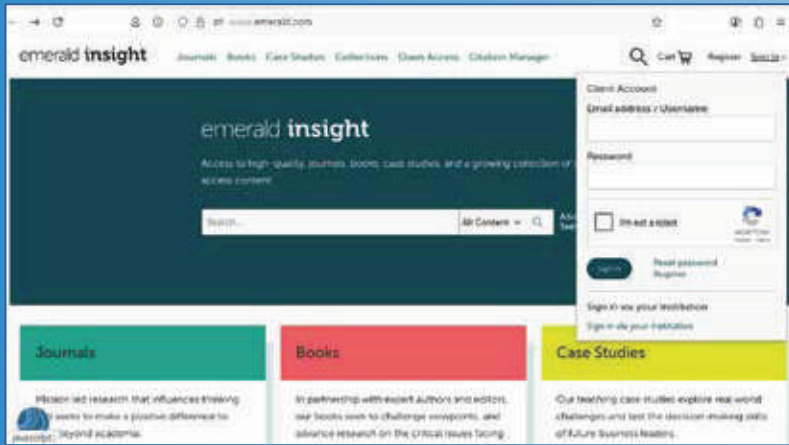
तृतीय विधि:

सीधे प्रकाशक की वेबसाइट से दूरस्थ अभिगमन (Remote Access)

यह एक वैकल्पिक लेकिन बहुत कुशल तरीका है, जिसके द्वारा पाठक सीधा किसी प्रकाशक का ई-जर्नल पढ़ सकता है। इसमें बिना ONOS पोर्टल पर जाए सीधे प्रकाशक की वेबसाइट से ही लॉगिन कर सकते हैं। इसकी चरणबद्ध प्रक्रिया इस प्रकार है:

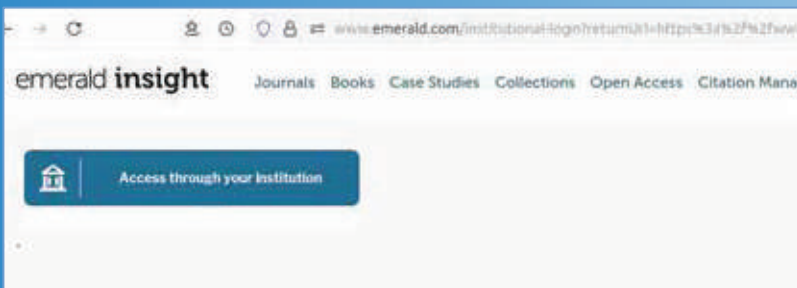
1. किसी भी भागीदार प्रकाशक की वेबसाइट पर जाएँ (उदाहरण के लिए,

<https://taylorandfrancis.com/> या <http://wiley.com/> या <https://www.emerald.com/>)

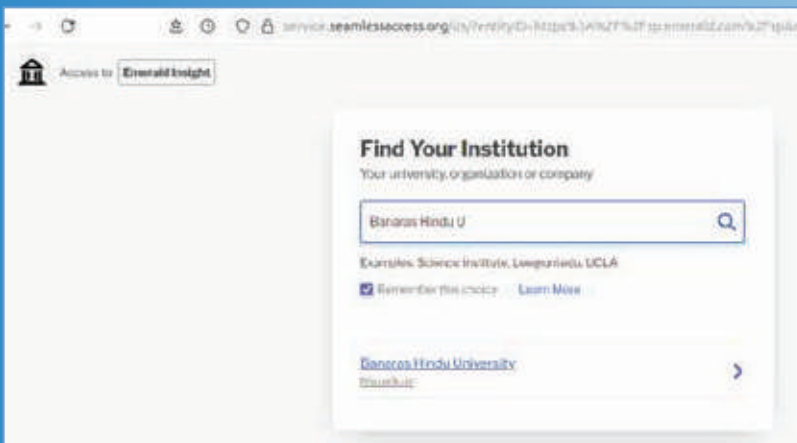


2. वेबसाइट पर 'Login', 'Sign In', या 'Access' बटन खोजें और उस पर क्लिक करें।

3. कई लॉगिन विकल्प दिखाई देंगे या दे सकते हैं (जैसे यूजरनेम/पासवर्ड से लॉगिन)। इनमें से 'Institutional Login', 'Login via Shibboleth', 'Access through your institution' या इसी तरह के किसी विकल्प को खोजें और चुनें।



4. इसके बाद, यह पाठक के सम्बंधित संस्थान को खोजने के लिए कहेगा। सर्च बॉक्स में 'Banaras Hindu University' खोजें और चुनें।



5. यहाँ पाठक से उसके क्षेत्र या फेडरेशन का नाम पूछ सकता है। यदि पूछा जाए, तो 'India (INFED)' चुनें अन्यथा यह स्वयं ही परिलक्षित हो जाएगा

6. यह फिर से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सुरक्षित लॉगिन पेज पर ले जाएगा जहाँ पाठक को वही यूजरनेम और पासवर्ड डालना है जो वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ईमेल या अन्य विश्वविद्यालय सेवाओं के लिए उपयोग करते हैं।



7. सफल लॉगिन के बाद, वे सीधे उस प्रकाशक की वेबसाइट पर लॉग-इन हो जाएँगे और उनके सभी ONOS-सबस्क्राइब कंटेंट का उपयोग कर पाएँगे।



यह दोहरी पहुँच प्रणाली - कैपस में स्वचालित और कैपस के बाहर सुरक्षित लॉगिन - ONOS की एक परिष्कृत और उपयोगकर्ता-केंद्रित विशेषता है। यह सुनिश्चित करती है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय समुदाय को दोनों दुनियाओं का सर्वश्रेष्ठ मिले, कैपस में सहज पहुँच और बाहर लचीली व सुरक्षित पहुँच।

प्रकाशन सहयोग: ONOS का लेख प्रसंस्करण शुल्क या आर्टिकल प्रोसेसिंग चार्ज (APC) निधि

ONOS का सबसे क्रांतिकारी और सशक्त पक्ष यह है कि यह आपको केवल ज्ञान का उपभोक्ता नहीं बनाता, बल्कि ज्ञान का निर्माता बनने में भी सक्रिय रूप से मदद करता है। यह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के लिए एक निर्णायक बदलाव लाने वाला है, जो उनके पेशेवर पक्ष को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकता है यह पहल इस गहरी समझ पर आधारित है कि एक राष्ट्र की

बौद्धिक क्षमता केवल विदेशी ज्ञान का उपभोग करने से नहीं, बल्कि वैश्विक ज्ञान भंडार में सक्रिय रूप से योगदान करने से बढ़ती है।

अकादमिक प्रकाशन की दुनिया में, दो मुख्य प्रकार के ई-जर्नल्स होते हैं: सब्सक्रिप्शन-आधारित और ओपन एक्सेस (OA)। ओपन एक्सेस ई-जर्नल्स का लक्ष्य शोध को सभी के लिए मुफ्त में उपलब्ध कराना है। लेकिन ई-जर्नल को चलाने, विद्वत समीक्षा (Peer review) करने और प्रकाशन की लागत आती है। इस लागत को वहन करने के लिए, कई प्रतिष्ठित ओपन एक्सेस ई-जर्नल्स लेखकों या उनके संस्थानों से एक शुल्क लेती हैं, जिसे लेख प्रसंस्करण शुल्क (APC) कहा जाता है। यह शुल्क अक्सर बहुत अधिक होता है, जो कई भारतीय शोधकर्ताओं के लिए एक बड़ी वित्तीय बाधा बन जाता है, भले ही उनका शोध कितना भी उच्च-गुणवत्ता वाला क्यों न हो। ONOS इस समस्या के लिए एक क्रांतिकारी समाधान देता है, जिसे भारत सरकार के एक अभूतपूर्व कदम के रूप में देखा जा सकता है, जिससे इस प्रकार की वित्तीय बाधा को जड़ से खत्म किया जा सकता है। ONOS योजना के तहत, सरकार ने प्रति वर्ष ₹150 करोड़ का एक विशेष फंड स्थापित किया है। इस फंड का एकमात्र उद्देश्य भारतीय शोधकर्ताओं द्वारा उच्च-गुणवत्ता वाले, विद्वत समीक्षित ओपन एक्सेस ई-जर्नल्स में प्रकाशन के लिए लगने वाले लेख प्रसंस्करण शुल्क का भुगतान करना है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शोध समुदाय के लिए इसका सीधा मतलब है कि अब वित्तीय बाधाओं के कारण किसी शीर्ष अंतरराष्ट्रीय ओपन एक्सेस ई-जर्नल में प्रकाशन के सपने को त्यागने की आवश्यकता नहीं है। यदि शोध पत्र किसी प्रतिष्ठित ओपन एक्सेस ई-जर्नल द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है, तो उसके प्रकाशन का खर्च सरकार द्वारा वहन किया जा सकता है। यह शोध की वैश्विक दृश्यता, पहुँच और प्रभाव को कई गुना बढ़ा सकता है, जो शोधार्थी के अकादमिक करियर, पदोन्नति और भविष्य के अनुसंधान अनुदानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। यह भारतीय शोध को वैश्विक मंच पर स्थापित करने की एक रणनीतिक पहल है, जो देश की मृदुशक्ति (सॉफ्ट पावर) और बौद्धिक पूँजी का निर्माण करती है।

हालाँकि यह एक नई योजना है और इसकी

प्रक्रियाएँ अभी स्थापित हो रही हैं। वर्तमान में, INFLIBNET या शिक्षा मंत्रालय द्वारा लेख प्रसंस्करण शुल्क निधि के लिए आवेदन करने की एक औपचारिक, सार्वजनिक प्रक्रिया या विस्तृत दिशानिर्देश अभी तक जारी नहीं किए गए हैं।

ONOS पर उपलब्ध प्रमुख प्रकाशक और विषय

ONOS के तहत उपलब्ध सामग्री की विशालता और गुणवत्ता वास्तव में प्रभावशाली है। यह केवल कुछ चुनिंदा ई-जर्नल्स का संग्रह नहीं है, बल्कि अकादमिक प्रकाशन की दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित और प्रभावशाली नामों का एक व्यापक भंडार है। यह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रत्येक संकाय और विभाग के लिए प्रासंगिक है।

ONOS के पहले चरण में 30 प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों के 13,000 से अधिक विद्वत समीक्षित (पीयर-रिव्यूड) ई-जर्नल्स शामिल हैं, जिन्हें 27 मुख्य विषय विविध श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है, जिससे किसी संबंधित क्षेत्र से सामग्री खोजना या सरसरी तौर पर देखना आसान हो जाता है। यह एक बहुआयामी और बहुविषयी संग्रह है, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अलावा मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वित्त, कला और चिकित्सा जैसे सभी प्रमुख अकादमिक क्षेत्र हैं। इसमें उपलब्ध सामग्री विश्वस्तरीय है जो प्रसिद्ध और प्रभावशाली प्रकाशकों के द्वारा प्रकाशित हैं, जिनकी पत्रिकाएँ अब सभी शोधार्थियों की पहुँच में हैं। कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशकों के नाम निम्नलिखित हैं:

प्रकाशक (Publisher)

- Elsevier (ScienceDirect सहित)
- Springer Nature
- Wiley
- Taylor & Francis
- IEEE (IEL Online)
- ACM Digital Library

प्रकाशक (Publisher)

- SAGE Publishing
- Oxford University Press
- Cambridge University Press
- American Chemical Society (ACS)
- BMJ Journals
- American Institute of Physics (AIP)

सभी प्रकाशकों की सूची ONOS पोर्टल (<https://www.onos.gov.in/publishers>) पर उपलब्ध है।

ONOS का भविष्य

किसी भी विशाल और महत्वाकांक्षी योजना की तरह, ONOS के सामने भी कुछ चुनौतियाँ और प्रश्न हैं। ONOS का उद्देश्य ज्ञान का लोकतंत्रीकरण करना है, लेकिन इसकी सफलता देश के डिजिटल बुनियादी ढाँचे पर निर्भर करती है। देश के दूर-दराज और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित कई संस्थानों के पास अभी भी विश्वसनीय हाई-स्पीड इंटरनेट और आवश्यक तकनीकी उपकरणों की कमी है। इस डिजिटल विभाजन को भरना आवश्यक है जिससे ONOS का लाभ वास्तव में हर संस्थान तक समान रूप से पहुँच सके।

इस योजना (जो कि अभी **प्रथम चरण** में है) में पहले तीन वर्षों (2025-2027) के लिए सरकार ने ₹6,000 करोड़ का एक बड़ा बजट आवंटित किया है। यह एक गतिशील और विकासशील योजना है। इसके भविष्य के चरण और भी अधिक महत्वाकांक्षी हैं।

द्वितीय चरण : निजी क्षेत्र के उच्च शिक्षा संस्थानों को एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल के तहत शामिल करना।

तृतीय चरण: सार्वजनिक पुस्तकालयों में विशेष पहुँच बिंदु स्थापित करके इसे देश के आम नागरिक तक पहुँचाना, जिससे ज्ञान वास्तव में सार्वभौमिक हो सके।

इस समस्त प्रक्रिया के लिए ONOS की दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता के लिए एक स्थायी मॉडल की आवश्यकता होगी, जिसके लिए भविष्य में वैधानिक अनुमोदन आवश्यक है।

उपसंहार

'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' (ONOS) योजना विश्वविद्यालय के छात्रों, शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए एक अभूतपूर्व और परिवर्तनकारी अवसर है। यह अकादमिक समानता, अनुसंधान उत्कृष्टता और ज्ञान के लोकतंत्रीकरण के एक नए युग का सूत्रपात कर रही है। आज पूरी दुनिया तेजी से ओपन

एक्सेस प्रकाशन मॉडल की ओर बढ़ रही है, देश के नीति निर्माता इस विषय से अवगत हैं। लेख प्रसंस्करण शुल्क फंड का प्रावधान यह संकेत देता है कि भारत एक राष्ट्र के रूप में शोध को लेकर कितना सजग है। यह भारत को केवल ज्ञान के एक आयातक से एक प्रमुख निर्यातक के रूप में स्थापित करने की पहल है। यह वैश्विक मंच पर हमारे शोध और विचारों को प्रस्तुत करने, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान तक पहुँचने और देश की बौद्धिक संपदा के

निर्माण में सीधे योगदान करने का अवसर प्रदान करता है।

साथ ही यह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और इसके पुस्तकालय के लिए एक स्वर्णिम अवसर प्रदान करता है कि इस योजना से संरक्षित वित्त का उपयोग छात्रों के पठन-पाठन के वातावरण को सुविधाजनक, विभागों एवम छात्रावासों में नेटवर्क के लिए अधिक एक्सेस पॉइंट, सुरक्षा निगरानी और

अन्य कल्याणकारी कार्यों में किया जाए।

'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' केवल एक संस्थान या योजना से ऊपर उठ कर भारत को एक ज्ञान महाशक्ति बनाने के राष्ट्रीय मिशन में सभी शोधकर्ताओं को सीधी भागीदारी का एक निमंत्रण है, जहाँ अनुसंधान, अनुप्रयोग, अकादमिक संयोजन और साझेदारी एक ही धरातल पर उपलब्ध हैं।

**प्रो. आदित्य त्रिपाठी,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग**

नृत्य, नाटक और
संगीत से जीवंत
हुआ स्पंदन का
मंच





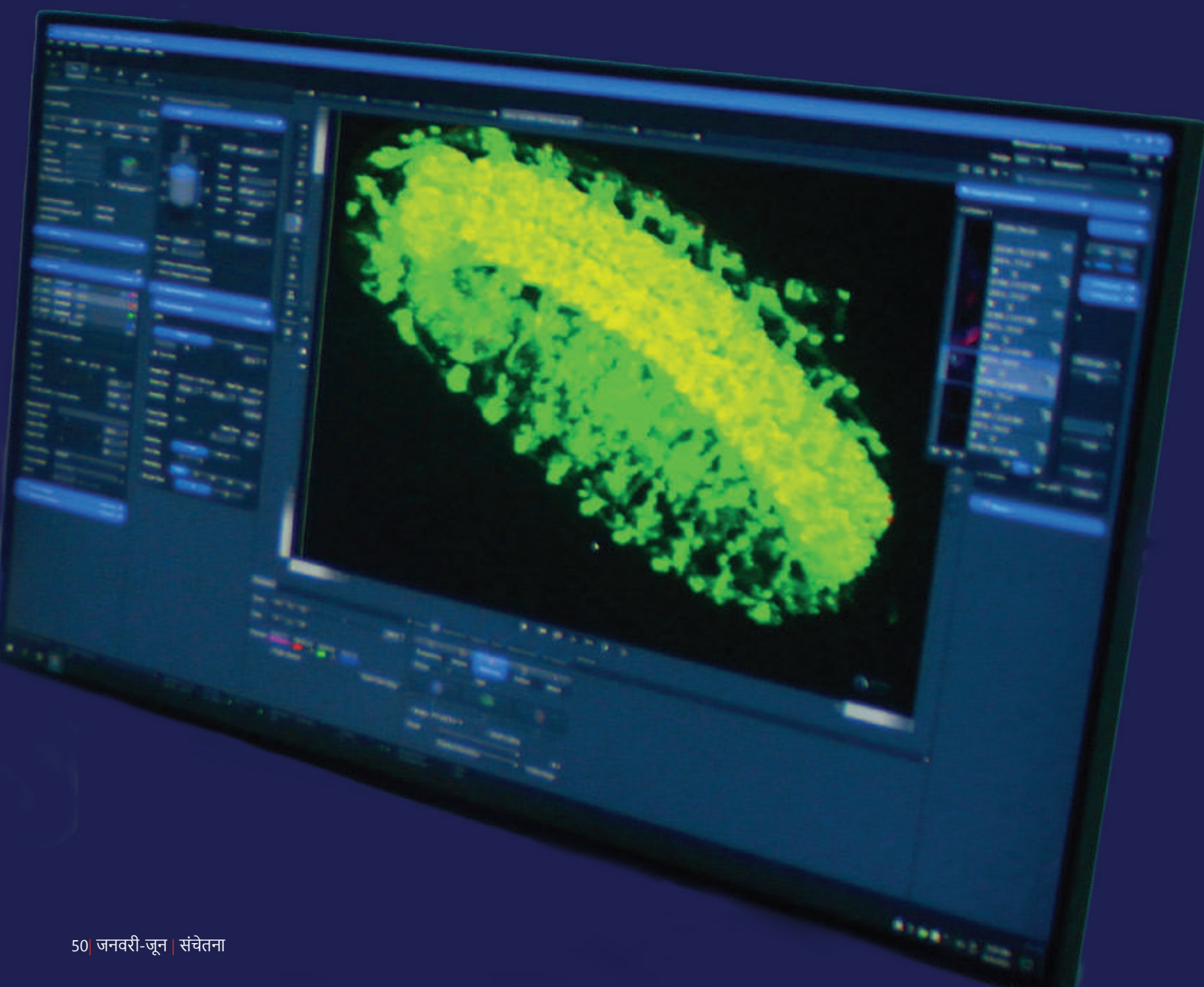
बीएचयू का
सांस्कृतिक पर्व
बना युवाओं
की प्रतिभा का
मंच



युवा ऊर्जा, कला और
परंपरा का अनूठा
संगम - स्पंदन



जन्तु विज्ञान विभाग की साइटोजेनेटिक्स प्रयोगशाला





दृष्टिकोण और क्षेत्रीय योगदान

अनुसंधान एवं उत्कृष्टता के लिए देशभर में विख्यात काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग की स्थापना 1921 में हुई। प्रोफेसर एस.पी. रे चौधरी के नेतृत्व में 1961 से विभाग ने अपने पाठ्यक्रम को आधुनिक दृष्टिकोण से अद्यतन करते हुए आनुवंशिकी जैव-रसायन व अन्य विषयों को सम्मिलित किया। इस विभाग में 1960 के दशक में कोशिकाअनुवंशिकी इकाई (साइटोजेनेटिक्स यूनिट), स्थापित हुई एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा “Center of Advanced Studies” के रूप में इसे मान्यता प्राप्त प्राप्त हुई। इस इकाई के अंतर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर, एवं शोधछात्रों को आनुवंशिकी, कोशिकाअनुवंशिकी, विकास एवं विकासात्मक आनुवंशिकी जैसे आधुनिक विषयों को पढ़ाया और अनुसंधान किया जाता है। 1960 से अब तक इस इकाई ने मानव

कोशिकाओं, चूहों, साँपों, छिपकलियों, टिड्डों और झोसोफिला जैसे मॉडल्स पर काम करते हुए गुणसूत्र, कोशिकाअनुवंशिकी, मानव एवं जनसंख्या आनुवंशिकी विषयों में उल्लेखनीय योगदान दिया है

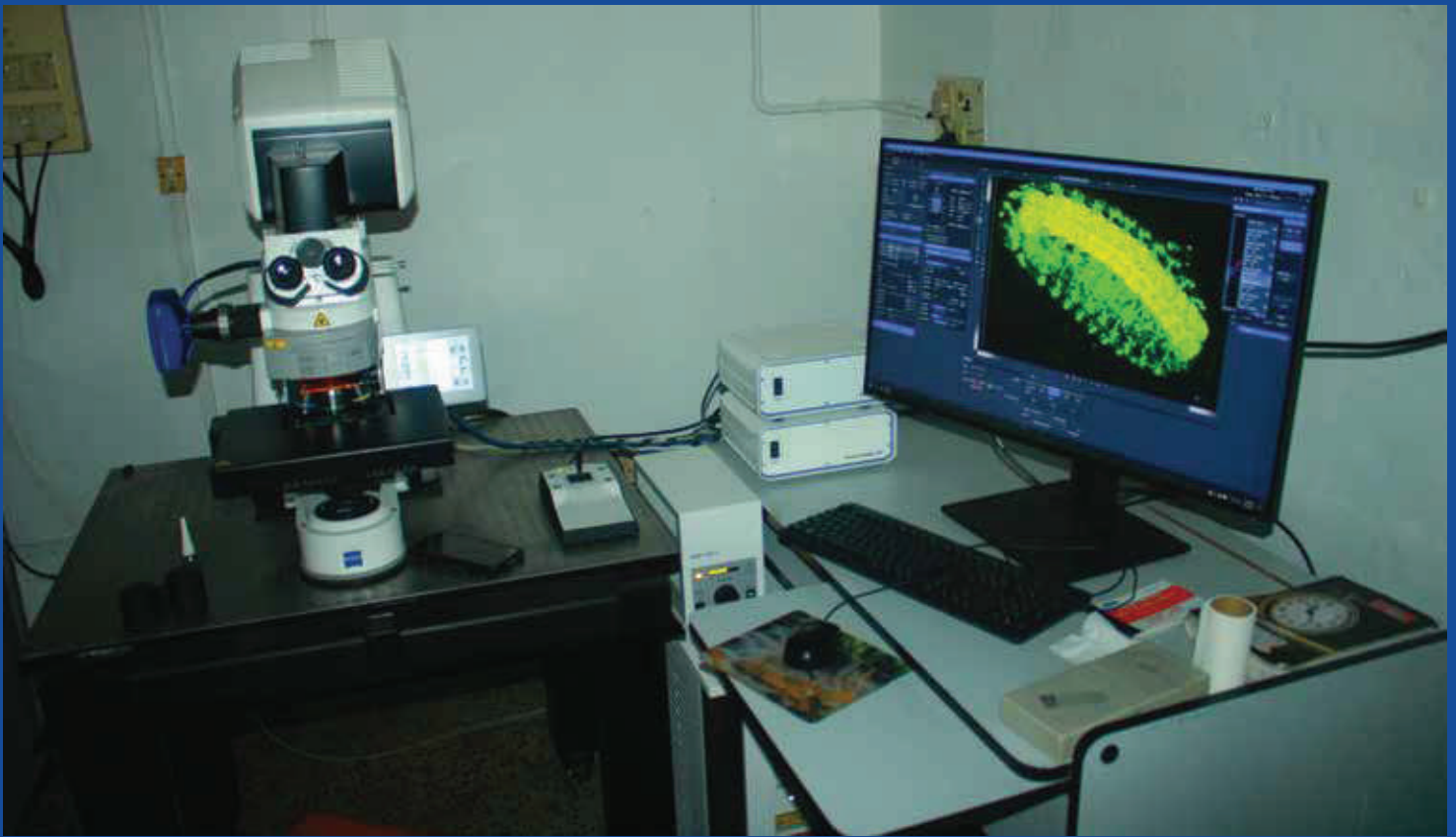
शोध कार्य

जीन नियंत्रण, गुणसूत्रों का विकास, विकिरण का प्रभाव, डीएनए रिपेयर, लिंग निर्धारण और मानव आनुवंशिक विकार के साथ-साथ स्ट्रेस बायोलॉजी, नॉन-कोडिंग आरएनए और आयुर्वेदिक जीवविज्ञान पर इस प्रयोगशाला में शोध कार्य किया जा रहा है। इस प्रयोगशाला का दृष्टिकोण सब को साथ लेकर चलने का है, जहाँ सभी शिक्षक एकीकृत प्रयोगशाला प्रणाली में संसाधनों को साझा करते हुए अनुसंधान कार्यों को सम्पादित करते हैं। इसी विशेषता के कारण व्यक्तिगत रूप से बाहरी संस्थाओं से प्राप्त सुविधाएँ भी सभी शोधार्थियों के लिए

उपलब्ध रहती हैं। लगभग 6 से 10 शिक्षक एवं 25 से 30 शोधार्थी इस साझा प्रयोगशाला के माध्यम से अपने वैज्ञानिक कौशल का विकास करते हैं, जिससे गुणवत्ता युक्त शोध प्रकाशनों का सृजन होता है।

साइटोजेनेटिक्स यूनिट की प्रमुख उपलब्धियाँ

- भारत में पहली बार मानव रक्त कोशिकाओं को कल्चर कर कोशिका विभाजन में गुणसूत्रों का अध्ययन।
- साँपों में लिंग गुणसूत्रों के विकास पर अध्ययन, जिससे Bkm सैटेलाइट अनुक्रम की खोज संभव हुई, जिसका बाद में डीएनए फिंगरप्रिंटिंग में प्रयोग हुआ।
- 1982 में झोसोफिला में पहला लाँग नॉन-कोडिंग RNA और 2000 में नए ‘ओमेगा स्पेकल्स’ का पता लगाया गया।



- 1991 में परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा उच्च स्तरीय उपकरणों के लिए ब्लॉक सहायता की स्वीकृति
- 1990 के दशक के मध्य में भारत के पहले ट्रांसजेनिक ड्रोसोफिला का सृजन
- 2000 में भारत के पहले मल्टीफोटोन कोनफोकल माइक्रोस्कोप की स्थापना |

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में नवाचारात्मक शैक्षणिक कार्यक्रमों के प्रेरणा स्रोत

- 1999 में मॉलिक्यूलर एंड ह्यूमन जेनेटिक्स में एक नवीन एम.एससी. पाठ्यक्रम का प्रारम्भ
- 2004 में स्वतंत्र मॉलिक्यूलर एंड ह्यूमन जेनेटिक्स विभाग की स्थापना
- आनुवंशिक विकारों की आणविक एवं गुणसूत्रीय जाँच हेतु जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) के वित्तीय सहयोग से स्वतंत्र केंद्र की स्थापना
- DBT द्वारा वित्तपोषित ड्रोसोफिला आधारित

शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना

शिक्षकों द्वारा अर्जित विशिष्ट सम्मान

प्रो. एस.पी. रे चौधरी, टी. शर्मा, एस.सी. लखोटिया, राजीव रमन और बी.एन. सिंह सरीखे कई वरिष्ठ अध्यापक भारत के विभिन्न विज्ञान अकादमियों के फेलो चुने गए हैं।

प्रतिष्ठित पुरस्कार

प्रो. एस.सी. लाखोटिया को भारत का सर्वोच्च वैज्ञानिक पुरस्कार शांति स्वरूप भटनागर प्रदान किया गया। साथ ही उन्हें SERB-Distinguished Fellowship से भी सम्मानित किया गया। हाल ही में डॉ. देवान्जन सिन्हा को भारतीय विज्ञान अकादमी, बंगलुरु का एसोसिएट चयनित किया गया।

उल्लेखनीय फेलोशिप

डॉ. बामा चरण मंडल एवं डॉ. ऋचा आर्य को DBT का प्रतिष्ठित रामालिंगा स्वामी फेलो, साथ ही डॉ. मंडल को इंडिया-अलायंस DBT-वेलकम इंटरमीडिएट फेलो चुना गया। वहीं डॉ. देवान्जन सिन्हा को हरगोविंद खुराना इनोवेटिव यंग बायोटेक्नोलॉजिस्ट फेलोशिप प्राप्त हुई।

बाह्य वित्तीय सहायता: प्रयोगशाला के प्रमुख अनुसंधानकर्ताओं को उनके विभिन्न शोध कार्यों के लिए DBT, DBT-वेलकम ट्रस्ट, DST-SERB, CSIR, DAE, UGC एवं ICMR जैसी संस्थाओं से अनुदान प्राप्त हैं।

साइटोजेनेटिक्स प्रयोगशाला के पुरा छात्र दुनिया भर के शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रयोगशाला एवं विश्वविद्यालय का मान बढ़ा रहे हैं।



वैज्ञानिक जिज्ञासा, समग्र शिक्षा और बौद्धिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने वाली यह प्रयोगशाला काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की शैक्षिक परंपरा का रत्न मानी जाती है, जो इसके संस्थापक महमना पं. मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण को साकार करती है।

प्रमुख प्रकाशन:

1. Majhi O, Chhatre A, Chaudhary T, Sinha D (2024)

Superoxide Dismutases maintain niche homeostasis in stem cell populations
eLife 13:RP96446

DOI: 10.7554/eLife.96446.2

2. Maurya D, Rai G, Mandal D, Mondal BC (2024)

Transient caspase-mediated activation of Caspase-Activated DNase causes DNA damage required for phagocytic macrophage differentiation

Cell Reports. May 28; 43(5): 114251

DOI: 10.1016/j.celrep.2024.114251

3. Yadav V, Mishra R, Das P, Arya R. (2024)

Cut homeodomain transcription factor is a novel regulator of growth and morphogenesis of cortex glia niche around neural cells

Genetics. Jan 3;226(1):iyad173

DOI: 10.1093/genetics/iyad173

4. Singh, B.N. (2024)

Hundred years of research on *Drosophila ananassae* has revealed a number of unusual features of this species. Current Science, 127: 14-16

DOI: 10.18520/cs/v127/i1/14-16

5. Lakhotia S.C (2023)

C-value paradox: Genesis in misconception that natural selection follows anthropocentric parameters of 'economy' and 'optimum'

BBA-Advances 4: 100107

DOI: 10.1016/j.bbadv.2023.100107

6. Singh P. P. , Kumar S, Pasupuleti N, Weerasooriya PR, van Driem G, Tennekoon KH, Rai N, Chaubey G, Ranasinghe R. (2023)

Reconstructing the population history of the Sinhalese, the major ethnic group in Sri Lanka

iScience, Volume 26, Issue 10, 107797

DOI: 10.1016/j.isci.2023.107797

7. Singh G Singh A K (2022)

Intra- and interspecific comparison of protein polymorphism to establish genetic differentiation in two sympatric species of *Drosophila*: *D. bipectinata* and *D. malerkotliana*

3 Biotech. Sep;12(9):195.

Doi: 10.1007/s13205-022-03257-5.

8. Tamang R, Mehata AK, Singh V, Muthu MS, Koch B

Sustainable synthesis of *Camellia sinensis*-mediated silver nanoparticles (CsAgNP) and their anticancer mechanisms in breast cancer cells

Biomaterials Advances 166, 214072

<https://doi.org/10.1016/j.bioadv.2024.214072>

9. Ojha S & Tapadia M G.

Nonapoptotic role of caspase-3 in regulating Rho1GTPase mediated morphogenesis of epithelial tubes of *Drosophila* renal system (2021)

Dev. Dyn.

DOI:10.1002/dvdy.437

ऐसी प्रयोगशाला जिसने दुनिया को
दीं **60** से अधिक "नवीन" प्रजातियाँ

साइनोबैक्टीरिया से संवाद

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में स्थित 'साइनोबैक्टीरियल सिस्टमेटिक्स और स्ट्रेम बायोलॉजी प्रयोगशाला', साइनोबैक्टीरियल टैक्सोनोंमी और सिस्टमेटिक्स के क्षेत्र में दुनिया भर में अग्रणी प्रयोगशालाओं में से एक है। बीएचयू के वनस्पति विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रशांत सिंह के नेतृत्व में इस शोध समूह ने *Aliinostoc* (एलिनोस्टॉक) genus का वर्णन किया, जो 1967 के बाद किसी भारतीय समूह द्वारा वर्णित पहला नवीन साइनोबैक्टीरियल genus था। 2017 में स्थापित, इस प्रयोगशाला का उद्देश्य भारत और दुनिया भर के विविध पारिस्थितिकी तंत्रों से इन जीवों की वंशावली का दस्तावेजीकरण, पहचान और वर्गीकरण करना है। इस प्रकार यह शोध कार्य, साइनोबैक्टीरियल विविधता की वैश्विक समझ में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितताओं से इन जीवन रूपों के संरक्षण में भी मदद करता है।

पिछले कुछ वर्षों में 60 से ज़्यादा नई प्रजातियों (species) और 10 नए genera का वर्णन करने के साथ, इस प्रयोगशाला ने एक आधुनिक polyphasic approach का उपयोग करके साइनोबैक्टीरियल टेक्सोनोमी को पुनर्जीवित और पुनर्परिभाषित किया है जिसमें आकृति विज्ञान, पारिस्थितिकी और आणविक जीव विज्ञान का संयोजन है।





इस प्रयोगशाला के कुछ उल्लेखनीय कार्यों में जोहान्सेनिया (Johanseniella) जीनस की खोज शामिल है, जो पूर्वोत्तर भारत से प्राप्त पहला नवीन साइनोबैक्टीरियल genus है, जबकि फुलब्राइटिएला (Fulbrightiella), जिसका वर्णन जम्मू और कश्मीर से किया गया है, जम्मू और कश्मीर क्षेत्र का पहला genus था। हाल ही में, इस शोध समूह ने Ahomia (अहोमिया) genus की भी खोज की, जिसका नामकरण असम के अहोम समुदाय के अभिन्न योगदान के सम्मान में किया गया है। इस शोध कार्य ने एक जैसी दिखने वाली प्रजातियों (जो दिखने में एक जैसी हैं लेकिन आनुवंशिक रूप से भिन्न हैं) की भी पहचान एवं वर्गीकरण को संभव किया है।

इस प्रयोगशाला ने कई अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों और छात्रों की भी मेजबानी की है जो सहयोगी कार्यक्रमों के माध्यम से बीएचयू आए। यह प्रयोगशाला भारत के विभिन्न हिस्सों से आए अनगिनत छात्रों के लिए भी एक लोकप्रिय प्रयोगशाला रही है जहाँ आकर युवा वैज्ञानिकों ने साइनोबैक्टीरियल टैक्सोनामी की बारीकियों को समझने में निपुणता हासिल की है।

डॉ. सिंह की प्रयोगशाला बीएचयू के प्रभावशाली और सार्थक अनुसंधान के दृष्टिकोण को दर्शाती है जो पारंपरिक विज्ञान को आधुनिक उपकरणों और वैश्विक प्रासंगिकता के साथ जोड़ती है।





काशी हिंदू विश्वविद्यालय का दक्षिणी परिसर

विकास की गाथा और भविष्य का समग्र दृष्टिकोण

काशी हिंदू विश्वविद्यालय का राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर विश्वविद्यालय का भौगोलिक विस्तार मात्र नहीं है, बल्कि क्षेत्रीय विकास और ग्रामीण सशक्तिकरण की एक जीवंत गाथा है। उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जिले के बरकछा में विंध्य पर्वत श्रृंखला की गोद में स्थित यह परिसर, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय के उस दूरदर्शी स्वप्न को साकार करने की दिशा में अग्रसर है, जिसमें ज्ञान को केवल नगरों तक सीमित न रखकर देश के कोने-कोने तक पहुँचाने का संकल्प निहित था। लगभग 2700 एकड़ (या 1104 हेक्टेयर) के विशाल भू-भाग में फैला यह परिसर, अपनी स्थापना के समय से ही,

विंध्य क्षेत्र और आसपास के ग्रामीण अंचलों के युवाओं के लिए उच्च शिक्षा का एक प्रभावी केंद्र बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। इसका विकास ग्रामीण और विंध्य क्षेत्र के युवाओं को ज्ञान और रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया है।

वाराणसी स्थित बीएचयू के मुख्य परिसर पर विद्यार्थियों और शैक्षणिक गतिविधियों का बढ़ता दबाव 1970 के दशक की शुरुआत में ही महसूस किया जाने लगा था। विश्वविद्यालय के विस्तार के लिए वाराणसी के आसपास भूमि की अनुपलब्धता

ने एक वैकल्पिक स्थान की खोज को प्रेरित किया। यह तलाश मीरजापुर के बरकछा गाँव में आकर पूरी हुई। 1979 में, काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने भारत मंडल ट्रस्ट से इस विशाल भूखंड को स्थायी पट्टे पर अधिग्रहित किया। अधिग्रहण का उद्देश्य स्पष्ट था, इस क्षेत्र की कृषि और ग्रामीण चुनौतियों को समझते हुए, ज्ञान और तकनीक को 'प्रयोगशाला से भूमि तक' स्थानांतरित करने के लिए एक केंद्र स्थापित करना। यह एक ऐसी पहल थी, जो शैक्षणिक उत्कृष्टता को सीधे सामाजिक समस्याओं के समाधान से जोड़ती थी। प्रारंभिक चरण में यह महत्वाकांक्षी परियोजना कई वर्षों तक उपेक्षा का

शिकार रही। भूमि अधिग्रहण तो हो गया, लेकिन सीमित वित्तीय सहायता और प्रशासनिक सीमाओं के कारण विकास की गति धीमी पड़ गई। तत्कालीन कुलपति प्रोफेसर के. एल. श्रीमाली द्वारा मीरजापुर के लोगों से किया गया वादा कि यह केंद्र ज्ञान और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण का एक स्रोत बनेगा, वांछित गति प्राप्त नहीं कर पाया। परिसर के विकास की दिशा में निर्णायक मोड़ तब आया जब प्रो. वाई. सी. सिम्हाद्री ने वर्ष 1999 में कुलपति के रूप में कार्यभार संभाला। उन्होंने परिसर को विकसित करने की चुनौती स्वीकार की। तत्पश्चात, एक टास्क फोर्स का गठन किया गया, जिसने एक महत्वाकांक्षी योजना का मसौदा तैयार किया। इस योजना में 365 करोड़ रुपये के निवेश का प्रस्ताव था, जिसे कार्यकारी परिषद ने अनुमोदित किया। इस योजना का केंद्रीय बिंदु काशी हिंदू विश्वविद्यालय अधिनियम के तहत इस क्षेत्र के लोगों के लाभ के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शुरू करना था। विकास की इस प्रक्रिया को बाद में गति मिली और वर्ष 2006 में इस परिसर को औपचारिक रूप से राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर के रूप में स्थापित किया गया। परिसर ने अपने शैक्षणिक और आधारभूत संरचनात्मक विकास पर लगातार ध्यान केंद्रित रखा। प्रोफेसर पंजाब सिंह, जिन्होंने बाद में कुलपति का पद संभाला, ने बरकछा परिसर के मुद्दे को एक "शताब्दी चुनौती 2005-15" के रूप में देखा। उनका विजन इस परिसर को इस क्षेत्र के लिए 'विकास के वाहक' के रूप में विकसित करना था, ताकि यह मालवीय जी की दृष्टि को साकार कर सके। इस के बाद विभिन्न कुलपतियों ने अपने कार्यकाल के दौरान परिसर के विकास को ऊर्जा देने के सार्थक प्रयास किये, जिसके परिणामस्वरूप दक्षिणी परिसर आज एक जीवंत, नित फल-फूल रहे कैम्पस के रूप में जाना जा रहा है। आज यह परिसर कई मायनों में अपनी स्थापना के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रगतिशील है। यह प्रगति एक समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है जो क्षेत्रीय आवश्यकताओं और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के बीच सेतु का कार्य करती है।

ग्रामीण और क्षेत्रीय सशक्तिकरण

राजीव गाँधी दक्षिण परिसर की स्थापना के पीछे सबसे बड़ी प्रेरणा विंध्य और पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण युवाओं को आधुनिक, रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करना था। यह परिसर उन छात्रों के लिए आशा की किरण है जो भौगोलिक या आर्थिक कारणों से मुख्य शहर के परिसरों तक नहीं पहुँच पाते। यह परिसर सुनिश्चित करता है कि उच्च शिक्षा का लाभ समाज के सबसे निचले तबके तक पहुँचे।

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में नव प्रवेशी विद्यार्थियों हेतु पांच दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम।



अनुसंधान और कृषि नवाचार

परिसर का एक महत्वपूर्ण विज्ञान कृषि, औषधीय पौधों की खेती और संबद्ध विज्ञान में अनुसंधान पर जोर देना है। चूँकि, इस भूमि में विंध्य की प्राकृतिक और जलवायु विशेषताएँ हैं, यह एक आदर्श फ़ील्ड लेबोरेटरी के रूप में कार्य करती है। यहाँ की अनुसंधान परियोजनाएँ और फार्म कल्टीवेशन गतिविधियाँ सीधे स्थानीय किसानों को लाभ पहुँचाने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। यह 'प्रयोगशाला से भूमि तक' के सिद्धांत को व्यवहार में उतारता है।

रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम

परिसर के शैक्षणिक कार्यक्रमों को कौशल-आधारित बनाया गया है। पारंपरिक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ, यहाँ वोकेशनल स्टडीज, एम.बी.ए., कृषि से संबंधित पारंपरिक और आधुनिक वित्तीय प्रबंधन पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। बी.कॉम. (ऑनर्स.), बी.कॉम. (ऑनर्स.) फ़ाइनेंशियल मार्केट्स मैनेजमेंट, बी.एससी.(ऑनर्स.) कृषि, बी.फार्मा. (आयुर्वेद), बैचलर ऑफ वोकेशनल स्टडीज- विभिन्न विशेषज्ञताओं के साथ, जैसे: खाद्य प्रसंस्करण एवं प्रबंधन, फैशन टेक्नोलॉजी एवं अपैरल डिजाइनिंग, मॉडर्न ऑफिस मैनेजमेंट, रिटेल मैनेजमेंट एवं लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट, हॉस्पिटैलिटी एवं टूरिज्म मैनेजमेंट, मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नोलॉजी, मास्टर ऑफ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन, मास्टर ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशन, मास्टर ऑफ टूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट, मास्टर ऑफ साइंस - विभिन्न विशेषज्ञताओं के साथ, जैसे: पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्लांट बायोटेक्नोलॉजी, कृषि (एग्रोफॉरेस्ट्री), कृषि (मृदा एवं जल संरक्षण), एम.

फार्मा. (आयुर्वेद), मास्टर ऑफ वोकेशनल स्टडीज विभिन्न विशेषज्ञताओं के साथ, जैसे: खाद्य प्रसंस्करण एवं प्रबंधन, फैशन टेक्नोलॉजी एवं अपैरल डिजाइनिंग रिटेल मैनेजमेंट एवं लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट, मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नोलॉजी, हॉस्पिटैलिटी एवं टूरिज्म मैनेजमेंट।

कृषि विज्ञान संस्थान के अंतर्गत आने वाला पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर स्थित एक महत्वपूर्ण संकाय है। वर्ष 2016 में स्थापित यह संकाय विंध्याचल क्षेत्र



(मीरजापुर और आसपास) और पूरे देश के विद्यार्थियों को विश्व स्तरीय पशु चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसका लक्ष्य पशु स्वास्थ्य, पशुधन उत्पादन और सार्वजनिक स्वास्थ्य (रोगों की रोकथाम) के क्षेत्र में विशेषज्ञ तैयार करना है। यहाँ पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन जैसे विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन और अनुसंधान होता है, जो काफी प्रचलित कार्यक्रम भी हैं।

आधारभूत संरचनात्मक उपलब्धियाँ

विशाल भूमि क्षेत्र का उपयोग करते हुए परिसर ने अपनी सुविधाओं में उत्तरोत्तर विकास किया है, जिससे एक दुर्गम क्षेत्र में कैम्पस में सुगम और सुविधाजन्य वातावरण स्थापित हुआ है।

जल प्रबंधन

विंध्य क्षेत्र में पानी की कमी एक ऐतिहासिक समस्या रही है। इस चुनौती का सामना करने के लिए परिसर के भीतर चेक डैम विकसित किए गए हैं। इन संरचनाओं ने भूजल स्तर को बढ़ाने और परिसर की पानी की जरूरतों को पूरा करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। इन संरचनाओं ने भूजल स्तर को बढ़ाने और परिसर की पानी की जरूरतों को पूरा करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

शैक्षणिक भवन और प्रयोगशालाएँ

परिसर में आधुनिक, सुसज्जित कक्षाएँ, विशाल व्याख्यान थिएटर, व्यवस्थित प्रयोगशालाएँ, केंद्रीय पुस्तकालय, साइबर पुस्तकालय, स्मार्ट क्लासरूप आदि पठन-पाठन के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराते हैं। परिसर स्थित उन्नत पुस्तकालय 24/7 वाई-फाई कनेक्टिविटी के साथ विद्यार्थियों को शैक्षिक सहायता प्रदान करता है। यहां स्थित पशु चिकित्सा संकाय के तहत पशुओं के उपचार और छात्रों के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए अस्पताल मौजूद है।

आवासीय और जलपान सुविधाएँ

विद्यार्थियों के लिए उत्कृष्ट छात्रावासों के साथ-साथ कर्मचारियों के लिए आवासीय परिसर भी स्थापित किए गए हैं। सभी छात्रावासों में मेस की सुविधा उपलब्ध है, जहाँ विद्यार्थियों को न्यूनतम शुल्क पर गुणवत्तापरक पौष्टिक भोजन प्रदान किया जाता है। कैम्पस में कैंटीन, चाय की दुकान, जूस कॉर्नर और दैनिक आवश्यक वस्तुओं (ग्रांसरी, स्टेशनरी आदि) की दुकानें भी उपलब्ध हैं।

स्वास्थ्य और चिकित्सा सुविधाएँ

कैम्पस के भीतर एक स्वास्थ्य केंद्र उपलब्ध है जो विद्यार्थियों को प्राथमिक उपचार और ओपीडी देखभाल प्रदान करता है। किसी आपात स्थिति में विद्यार्थियों को बड़े अस्पताल (जैसे बीएचयू का सुंदरलाल अस्पताल) तक पहुँचाने के लिए एंबुलेंस सेवा उपलब्ध है। विश्वविद्यालय की ओर से विद्यार्थियों को हेल्थ कार्ड की सुविधा दी जाती है।

अन्य सुविधाएँ

पूरे कैम्पस, हॉस्टल और शैक्षणिक ब्लॉकों में तेज गति की वाई-फाई/इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है। परिसर मीरजापुर शहर से दूर स्थित है, इसलिए

विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए कैम्पस से वाराणसी (मुख्य कैम्पस) तक आने-जाने के लिए बस सेवा उपलब्ध कराई जाती है। कैम्पस के भीतर एक बैंक शाखा और एटीएम की सुविधा भी उपलब्ध है।

खेल सुविधाएँ

खेलकूद के अंतर्गत आउटडोर खेलों जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल एवं वॉलीबॉल के लिए विशाल स्टेडियम और खेल के मैदान उपलब्ध हैं, वहीं इंडोर खेलों के लिए भी समुचित सुविधाएँ प्रदान की गई हैं। इसके अतिरिक्त परिसर में विद्यार्थियों के शारीरिक विकास हेतु आधुनिक जिम



की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है।

अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर में समृद्ध कैम्पस जीवन के अंतर्गत विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, कार्यक्रमों और उत्सवों का आयोजन किया जाता है। साथ ही, विद्यार्थियों के अकादमिक एवं व्यावहारिक कौशल-विकास को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से शैक्षणिक तथा कौशल-आधारित सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया जाता है।

सामाजिक समावेशन

परिसर के भीतर ही सेंट्रल हिंदू स्कूल की एक शाखा स्थापित की गई है, जिससे कर्मचारियों और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा मिल सके। परिसर ने बरकछा और मीरजापुर के आसपास के क्षेत्रों में रोजगार सृजन, सड़क संपर्क में सुधार और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह परिसर ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच प्रदान करके उनकी सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाता है। साथ ही कृषि और पर्यावरण से संबंधित अनुसंधान सीधे स्थानीय कृषि पद्धतियों को प्रभावित करते हैं, जिनसे किसान लाभान्वित होते हैं।

परिसर की भविष्य की योजनाएँ विविध क्षेत्रों पर केंद्रित हैं, जैसे विशेषज्ञता के केंद्र, विंध्य के प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए खनिज अन्वेषण, सौर ऊर्जा अनुसंधान, और औषधीय पौधों के प्रसंस्करण पर केंद्रित विशिष्ट अनुसंधान केंद्र की स्थापना तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी स्थापित करना।

डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर

स्मार्ट क्लासरूम, उन्नत कंप्यूटर लैब और हाई-स्पीड डेटा कनेक्टिविटी में निवेश करके परिसर को डिजिटल इंडिया के अनुरूप बनाना।

सतत विकास

पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं, जैसे बड़े सौर ऊर्जा उत्पादन सुविधाओं, पर जोर देना ताकि परिसर अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर बन सके।

पिछले दो दशकों में परिसर ने वित्तीय प्रबंधन, नए शिक्षकों की भर्ती और स्थानीय प्रशासन जैसी चुनौतियों के समाधान हेतु दृढ़ संकल्प और दूरदर्शिता के साथ विकास किया है। प्रारंभिक कठिनाइयों के बावजूद, यह परिसर ज्ञान के प्रसार, ग्रामीण सशक्तीकरण और क्षेत्रीय विकास के अपने मूल मिशन पर अडिग रहा है। यह परिसर आज मीरजापुर ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विंध्य और उससे परे के छात्रों के लिए एक शैक्षिक तीर्थस्थल बन चुका है। अपनी विशाल भूमि, प्राकृतिक सौंदर्य और रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों के माध्यम से, न केवल शिक्षा प्रदान कर रहा है, बल्कि हजारों युवाओं के जीवन को बदलने का कार्य भी कर रहा है। यह एक ऐसा केंद्र है जहाँ 'ज्ञान' केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि खेत की मिट्टी में, छात्रों के कौशल में और क्षेत्र के समग्र विकास में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर भविष्य में भी शिक्षा और विकास के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा, जिससे यह साबित होगा कि शिक्षा का प्रकाश देश के हर अँधेरे कोने को रोशन कर सकता है।



साहीवाल संरक्षण: भ्रूण स्थानांतरण एवं लिंग-परिक्षित वीर्य के माध्यम से बीएचयू की नई सफलता।



अंतर्राष्ट्रीय वानिकी दिवस: राजीव गांधी साउथ कैम्पस (RGSC) में विशेष आयोजन की एक झलक।

समावेशी शिक्षा के लिए एक मॉडल के रूप में राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर

काशी हिंदू विश्वविद्यालय का राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर भारत में नियोजित, समावेशी और विकेंद्रीकृत उच्च शिक्षा का एक शक्तिशाली प्रतीक है। एक नवजात विचार से एक फैले हुए, बहु-विषयक केंद्र तक इसकी विकास यात्रा स्पष्टतः मील के पथर से चिह्नित है, जिनमें कृषि विज्ञान केन्द्र की रणनीतिक स्थापना, बड़े पैमाने पर अवसंरचनात्मक निर्माण, और रोजगारोन्मुख तथा विशेष शैक्षणिक कार्यक्रमों की शुरुआत शामिल है।

भविष्य के लिए दृष्टि

उत्कृष्टता केंद्रों के विकास, टिकाऊ बुनियादी ढाँचे के सुदृढ़ीकरण तथा गहन सामुदायिक सहभागिता पर केंद्रित दृष्टि के माध्यम से राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर को केवल एक सहायक परिसर के रूप में नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संस्थान के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य है। यह परिसर एक प्रभावी कार्यशील मॉडल के रूप में उभर रहा है, जो यह प्रदर्शित करता है कि भारत के प्रमुख केंद्रीय विश्वविद्यालय किस प्रकार अपनी शैक्षिक पहुँच का सफलतापूर्वक विस्तार कर सकते हैं, ग्रामीण-शहरी शैक्षिक विभाजन को पाट सकते हैं तथा ऐतिहासिक रूप से कम सेवा प्राप्त क्षेत्रों के समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष



योगदान दे सकते हैं। इस प्रकार, राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर राष्ट्रीय उद्देश्यों में निहित सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है।

प्रो. वी. के. मिश्रा
आचार्य प्रभारी
राजीव गाँधी दक्षिणी
परिसर, बरकछा





शिक्षा और
राष्ट्रनिर्माण के
पुनीत संकल्प का
उत्सव



वसुधैव कुटुम्बकम् की
भावना के साथ बीएचयू ने
मनाया अपना गौरवपूर्ण
स्थापना दिवस



दीक्षांत संबोधन



14.12.2024

माननीय कुलपति, कुलगुरु, कुलसचिव, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, संकाय सदस्य और विद्यार्थियों! वापस अपनी मातृ संस्था में आना और अपनी यात्रा के कुछ विचार तथा अनुभव आपके साथ साझा करना मेरे लिए बहुत सम्मान और प्रसन्नता की बात है। सर्वप्रथम उन विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ, जिन्होंने इतनी मेहनत की और यह डिग्री प्राप्त की। मैं यह देखकर बहुत उत्साहित हुआ कि स्वर्ण पदक विजेता छात्राओं की संख्या इतनी अधिक है। प्रथम श्रेणी प्राप्त करना वास्तव में अद्भुत होता है।

भारत को एक देश के रूप में महिलाओं की शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है और यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है कि इस विश्वविद्यालय में ऐसा हो रहा है। मैं उन परिवारों को भी बधाई देता हूँ, जिन्होंने त्याग किया, कठिन मेहनत की ताकि आप कॉलेज की डिग्री प्राप्त कर सकें। मेरे माता-पिता, जो लघु किसान थे, उन्होंने एक-एक रुपया बचाया ताकि उनके बच्चे स्कूल और कॉलेज जा सकें। मैं उन सभी शिक्षकों को भी बधाई देता हूँ जिन्होंने

परिश्रम किया। उनके सहयोग के बिना आप आज यहाँ नहीं पहुँच पाते। यह स्नातक दीक्षा आपके जीवन की एक बड़ी उपलब्धि है और आपको भविष्य के लिए तैयार करती है।

मेरे पास काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बिताए अपने विद्यार्थी दिनों की बहुत सुंदर यादें हैं। यह खूबसूरत परिसर, ये घाट, लंका में टहलना, पहलवान के यहाँ से लौगलता खाना, और भी बहुत कुछ, आज भी याद है। मुझे विश्वविद्यालय का बोटिंग क्लब बहुत पसंद था। मजेदार बात यह थी कि उसमें शामिल होने के लिए गंगा नदी को तैरकर पार करना पड़ता था, वो सब बहुत ही शानदार यादें हैं।

भारत ने पिछले 10 से 20 वर्षों में बेहतरीन प्रगति की है, यह वास्तव में अद्भुत है। वर्तमान सरकार, जैसे श्री मोदी जी द्वारा की जा रही पहल—डिजिटलीकरण, आधार कार्यक्रम, पेमेंट सिस्टम्स, ये सब शानदार है। एक समय था जब हम सोचते थे कि क्या हम पश्चिम की तकनीक को अपना सकते हैं? अब भारत की

नई तकनीकों के बारे में पश्चिम यह सोच रहा है कि आधार और पेमेंट सिस्टम जैसे मॉडल को कैसे विकसित किया जाए? इस शानदार काम को आगे बढ़ाने के लिए आप ही भविष्य के नेता हैं। आप वे लोग हैं जो इन पहलों को आगे ले जाएँगे और इनको साकार करेंगे। भारत के इस उदय में आपके लिए बहुत अवसर हैं। परंतु, जीवन की हर चीज़ की तरह, आपको भी इन अवसरों को पाने के लिए आगे बढ़ना होगा और उन्हें हासिल करना होगा। आपको मेहनत करनी होगी।

कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मेरी ज़िंदगी हकीकत है या मैं कोई सपना देख रहा हूँ। मेरा जन्म और पालन-पोषण, आप में से कई लोगों की तरह, हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से गाँव में हुआ था। मेरे माता-पिता लघु किसान थे। वास्तव में हमारे घर जब बिजली पहुँची तब तक मैं आठवीं कक्षा पास कर चुका था। मेरी बहन और मैं इस बात पर झगड़ते थे कि मिट्टी के तेल के लैम्प को कौन साफ़ करेगा, क्योंकि पढ़ाई करने का वही एकमात्र साधन था।

मैंने दसवीं कक्षा पूरी की और अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाया। मुझे याद है कि हमारे स्कूल में कुछ छात्र दिन की शुरुआत गाँव के कुएँ से पानी लाकर करते थे ताकि विद्यार्थियों को पीने का पानी मिल सके।

अब भारत अच्छे स्कूल और सुलभ शिक्षा के अवसर उपलब्ध करा रहा है। हो सकता है कि हर गाँव में सर्वश्रेष्ठ स्कूल न हों, पर यह भी सच है कि अच्छे स्कूल उपलब्ध हैं। मुझे याद है कि मेरे प्राथमिक विद्यालय में पाँच कक्षाएँ थीं और दो ही कमरे थे, लेकिन इससे फर्क नहीं पड़ा। आप व्यवस्था को दोष दे सकते हैं या फिर आपके पास जो भी उपलब्ध है उसी का बेहतर प्रयोग कर अपनी राह बना सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं।

मेरे माता-पिता ने लघु किसानों के रूप में कड़ी मेहनत की। मैंने उनसे ईमानदारी, मेहनत और नैतिकता के मूल्य सीखे, जबकि उन्होंने खुद कभी स्कूल नहीं देखा था। लेकिन ये मूलभूत मूल्य मेरे साथ जीवनभर रहे हैं।

स्कूल में, विशेषकर हाई स्कूल में, मेरे कुछ शानदार शिक्षक थे। मुझे आज भी याद है हमारे प्रधानाध्यापक श्री गिरिधरलाल शर्मा, जिन्होंने हमेशा हमारी मदद के लिए आगे बढ़कर प्रयास किये। बीएचयू में भी मेरे बहुत अच्छे शिक्षक थे। इन्हीं शिक्षकों ने मेरी यात्रा की नींव रखी। दरअसल, मैंने यहाँ जीवनभर के मित्र बनाए। मेरे कई सहपाठी आज भी सम्पर्क में हैं और समाज में काफ़ी योगदान दे रहे हैं। मेरा एक सहपाठी, कैलाश, जो मेरे साथ आईआईटी बीएचयू में पढ़ा, जीस्केलर की स्थापना का मुख्य आर्किटेक्ट बना। कॉलेज में बने कुछ दोस्त जीवन भर साथ निभाते हैं—यही सबसे सुंदर मित्रता होती है।

जब मैंने हाई स्कूल पूरा किया, तब मुझे IIT के बारे में कुछ भी नहीं पता था। यहाँ तक कि मेरे शहर के प्रोफेसरों को भी IIT के बारे में जानकारी नहीं थी। एक दिन मेरे प्रोफेसर प्रो. वी. के. वशिष्ठ, जो बहुत अच्छे शिक्षक थे, उन्होंने अपने किसी रिश्तेदार से बात की जो IIT दिल्ली में थे। उन्होंने कहा कि मेरे पास एक अच्छा छात्र है जो हिमाचल यूनिवर्सिटी का गोल्ड मेडलिस्ट है। उनके रिश्तेदार ने पूछा, "

क्या उसने IIT में आवेदन किया है?" मेरे प्रोफेसर बोले, "IIT क्या होता है?" यही से मुझे IIT के बारे में जानकारी मिली, और फिर मुझे बीएचयू आने का मौका मिला।

गाँव से बीएचयू आना, बीएचयू से अमेरिका जाकर मास्टर्स करने से बड़ा क़दम था। यहाँ मुझे बहुत अच्छी शिक्षा मिली। तब बहुत से छात्र उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाते थे, क्योंकि भारत में सीमित अवसर थे। अब तो भारत काफ़ी बदल चुका है। परंतु उस वक्त मैं तभी जा सकता था जब मुझे स्कॉलरशिप मिलती, क्योंकि मेरे माता-पिता फ़ीस नहीं दे सकते थे। मुझे स्कॉलरशिप मिली और मैं बहुत उत्साहित था। पर मुझे यह नहीं पता था कि हवाई जहाज का टिकट भी मुझे ही खरीदना होगा। मेरे लिए लोन हासिल करना भी संभव नहीं था। मैं बहुत निराश हुआ। मैंने पुस्तकालयों में जाकर रिसर्च की और एक दिन मुझे टाटा स्कॉलरशिप के बारे में पता चला—विदेश में पढ़ने के लिए लोन स्कॉलरशिप। मैंने फॉर्म भरा, आवेदन किया और मुझे वह स्कॉलरशिप मिल गई। यह एक तरफ़ा प्लेन टिकट था। उन्होंने मुझे 200 डॉलर दिए और सफलता की शुभकामना दी। उन्होंने कहा, "अगर सफल हो जाओ तो यह पैसा लौटा देना ताकि किसी और छात्र को यह अवसर मिल सके।" टाटा ने मेरी सफलता में बड़ा योगदान दिया।

आपको जीवन में हमेशा अवसर मिलते हैं। अगर आप मेहनत करें, ईमानदारी से काम करें, तो अच्छे परिणाम मिलते हैं। ये भले ही हर बार न हो, लेकिन जो लोग मेहनत करते हैं, 10 में से 9 बार उन्हें अच्छे नतीजे मिलते हैं। आप में से कुछ लोग ऐसा सोच सकते हैं कि उनके पास अमीर लोगों जैसी सुविधाएँ नहीं हैं। मैं समझता हूँ कि ये सोच नहीं होनी चाहिए। कठिनाई भी अद्भुत होती है। कठिनाई आपको रास्ते निकालने की प्रेरणा देती है। मुझे लगता है कि मेरे बचपन की कठिनाई ही थी जिसने मुझे परिश्रमी बनाया, कार्य के प्रति लगन दी, सादगी सिखाई। इस बारे में सोच कर देखिये।

हाई स्कूल में मैं एक अच्छा विद्यार्थी था। हमेशा किताब हाथ में रहती थी, मुझे पढ़ते रहना अच्छा लगता था। जितना ज़्यादा पढ़ते, उतना ज़्यादा सीखते। यह एक चक्र बन जाता है। एक दिन मैंने अपने प्रधानाध्यापक से कहा कि मैंने अपनी कक्षा की सारी किताबें पढ़ ली हैं, मुझे कॉलेज स्तर की किताबें चाहिए ताकि भूगोल और अन्य विषयों के बारे में और सीखूँ और आगे की पढ़ाई कर सकूँ। लेकिन मैं उन्हें खरीद नहीं सकता था। उन्होंने कहा, "जाओ, किताब ले आओ। बुक स्टोर से वो पुस्तक खरीद लाओ जो तुम्हें पढ़नी है, उसे स्कूल के नाम पर खरीद लेंगे और साल भर बाद स्कूल की लाइब्रेरी में रख देंगे।" ऐसी चीज़ें तभी होती हैं जब आप मेहनत करते हैं।





शिक्षा और सीखने से प्रेम करना बहुत महत्वपूर्ण है। मैं जो कुछ भी हूँ, वह शिक्षा की वजह से हूँ। केवल डिग्री के लिए नहीं, बल्कि सीखने की वजह से। ज़ीस्कैलर में हम डिग्री की परवाह नहीं करते, हम टेस्ट लेते हैं। जो अच्छा प्रदर्शन करते हैं, उन्हें नौकरी मिलती है। जिनके पास सिर्फ बढ़िया डिग्री है, कौशल नहीं, उन्हें नहीं। सिर्फ डिग्री से कुछ नहीं होता। सीखने और समझने की चाह ज़रूरी है।

अपनी बैचलर्स डिग्री के बाद मैं अमेरिका गया, जहाँ मैंने मास्टर्स किया। बहुत से अन्य भारतीय विद्यार्थियों की तरह, मैं भी सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट का काम करने लगा। मैं सिनसिनाटी में एक छोटी सी स्टार्टअप कंपनी में काम करता था, जो सॉफ्टवेयर बनाती थी। एक दिन हमारे इकलौते सेल्स इंजीनियर बीमार पड़ गए। मेरे बॉस ने कहा, "यह ग्राहक डेमो है, यह तो तुमने ही बनाया है, क्यों न तुम ही डेमो दे दो?" मैंने पहले कभी ग्राहक को डेमो नहीं दिया था, खासकर अमेरिका में। उच्चारण, भाषा, ये सब मेरे लिए चुनौती थी। लेकिन डेमो बहुत अच्छा गया। जब मैं घर लौट रहा था, तो मैंने सोचा कि मुझे इस डेमो में कितना आनंद आया, यह तो कोड लिखने से कहीं ज़्यादा अच्छा लगा!

वह मेरी ज़िंदगी का एक टर्निंग पॉइंट था। मुझे समझ में आ गया कि मुझे दिनभर कोड लिखने के बजाए ग्राहकों से संवाद करना ज़्यादा पसंद है। इसलिए अपने पैशन को समझना, यह जानना कि

आपको किस क्षेत्र में रुचि है, बहुत ज़रूरी है। लेकिन इसके लिए मेहनत करनी होगी, प्रयास करना होगा, सुधार करना होगा। मुझे यह भी समझ में आया कि ग्राहकों से संवाद के लिए बेहतर कम्युनिकेशन की ज़रूरत होती है।

असल में जब मैं गाँव से बीएचयू आया, तब मेरी अंग्रेजी बहुत कमजोर थी। मेरा व्याकरण ग़लत था और उच्चारण अपने मन से बनाये हुए होते थे। मेरे कुछ मित्र मेरी अंग्रेजी का मज़ाक उड़ाते थे। मैंने एक ऐसे मित्र से संपर्क किया जो कॉन्वेंट स्कूल से पढ़कर आया था लेकिन गणित और रसायन शास्त्र में कमजोर था। हम दोनों ने एक समझौता किया कि मैं उसे गणित और केमिस्ट्री सिखाऊँगा और वो मेरी अंग्रेजी सुधारेगा। हमने मिलकर मेहनत की, और सुधार आता गया।

जब मैं अमेरिका गया, तो मैंने वो सिलसिला जारी रखा। अपनी कमज़ोरियों को पहचाने का और उनमें सुधार करने का। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। बाद में मैं IBM में चला गया। वहाँ मैंने सेल्स का काम सीखा। बिज़नेस की दुनिया समझी। वो बहुत अच्छी कंपनी थी। कुछ और कंपनियों में काम करने के बाद, मेरी ज़िंदगी में अगला बड़ा मोड़ आया और वह था एक स्टार्टअप शुरू करने का निर्णय।

यह समय था वर्ष 1996 के आसपास। तब इंटरनेट की शुरुआत हो रही थी। अमेरिका में नेटस्केप नाम

की एक कंपनी शुरू हुई थी, जो मोज़िला ब्राउज़र लेकर आई। मैंने सोचा, ये तो बेहतरीन है, एक ब्राउज़र से सारी जानकारी हासिल की जा सकती है। यह तो दुनिया को बदल देगा! लेकिन अगर हर कोई इंटरनेट से जुड़ जाएगा, तो साइबर सुरक्षा की ज़रूरत भी होगी। तभी मुझे लगा कि साइबर सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण होने वाली है। नेटस्केप शुरू करने वाला युवक मार्क एंड्रीसन एक इंजीनियरिंग छात्र ही था। मैंने अपनी पत्नी ज्योति, जो आईटी में थी और एमबीए (फाइनेंस) पृष्ठभूमि से थी, से कहा, "अगर ये लड़का स्टार्टअप कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं?" यह एक पागलपन भरा विचार था। मेरे परिवार में कोई उद्यमी नहीं था। हम किसान थे। तो ज़रूरी नहीं कि पहली बार में ही आपका प्लान तैयार हो, आप सीखते हैं, कोशिश करते हैं, अवसरों को पहचानते हैं और उनका लाभ उठाते हैं। लेकिन अगर हम देखेंगे नहीं, पढ़ेंगे नहीं, और बाज़ार को समझेंगे नहीं, तो हम इन सब के बारे में सीख ही नहीं पाएँगे। फिर ज्योति और मैंने स्टार्टअप शुरू करने का फैसला किया। हालाँकि, वो इस के पक्ष में नहीं थी।

मैंने बिज़नेस प्लान बनाया, अटलांटा के वेंचर कैपिटलिस्ट्स से संपर्क किया। उन्होंने पूछा "आपके पास स्टार्टअप का क्या अनुभव है?" मैंने कहा, "कोई नहीं।" तो जवाब मिला "फंडिंग नहीं मिल सकती।" ये थोड़ा निराशाजनक रहा। लेकिन जैसे-जैसे मैंने साइबर सुरक्षा के बारे में रिसर्च किया,

मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया। मुझे ये करना ही था। एक दिन मैंने और ज्योति ने इस पर बात की। इस काम को करने का एक ही तरीका बचा था, अपनी सारी बचत को इस पर लगाया जाए और एक कंपनी शुरू की जाए। यह कठिन निर्णय था। हमने इस पर एक सप्ताह तक विचार किया। फिर हमने सोचा कि इस में सबसे बुरा क्या हो सकता है? कंपनी फेल हो सकती है। "फिर क्या हम दोबारा नौकरी पा सकते हैं?" — जवाब था, "बिलकुल!"

बस वही हमारा निर्णय था। हमारे भीतर से यह करने के लिए आत्मविश्वास आया। जब आप सोचते हैं कि सबसे बुरा क्या हो सकता है, तो कई फैसले आसान हो जाते हैं। चूंकि हमारे पास सीमित संसाधन थे, मैंने ज्योति से कहा, "तुम भी अपनी नौकरी छोड़ दो।" मकसद था, "पीछे कोई पुल नहीं, वापसी का रास्ता नहीं।" जब आप सब कुछ दाँव पर लगाते हैं, तो एक अलग किस्म की ऊर्जा, एक तात्कालिकता आ जाती है। जब आप खुद अपना पैसा लगाते हैं, तब उसका महत्व भी अलग होता है। जीवन में जोखिम उठाने की क्षमता बहुत ज़रूरी है। मैंने कभी पैसा देखा नहीं था, इसलिए शायद उससे कोई लगाव भी नहीं था। पैसा मेरे लिए मायने नहीं रखता था, शायद इसी वजह से यह निर्णय आसान था। और ये अच्छी बात है क्योंकि अगर आप देखें तो पैसे की दौड़ का कोई अंत ही नहीं है।

असल में, प्रसन्नता मन की एक स्थिति है, उसका पैसे से कोई खास संबंध नहीं होता। सोचिए, दुनिया में बदलाव लाइए, जीवन को परिवर्तित करिये। यही चीजें मायने रखती हैं।

जब कंपनी की शुरुआत हुई, वह काफी सफल रही। उसे एक बड़ी कंपनी द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया। मेरे साथ ऐसे बहुत से लोग थे, जिन्होंने कड़ी मेहनत की। तब मैंने सोचा, "स्टार्टअप तो कठिन होने चाहिए, यह तो आसान रहा। शायद यह किस्मत थी। चलो फिर से करते हैं।"

फिर मैंने और ज्योति ने तीन और स्टार्टअप शुरू किए। हमने उन्हें बच्चों की तरह एक या दो साल के अंतर से शुरू किया। यह सब बहुत अच्छा चला, क्योंकि हमारे पास बेहतरीन टीमें थीं, अच्छे लोग थे, कड़ी मेहनत थी, अच्छा समय था। इन सबका मेल ज़रूरी है। जीवन में कोई शॉर्टकट नहीं होता। मुफ्त में कुछ नहीं मिलता। कभी भी शॉर्टकट न खोजें।

खुद से पूछिए, "मैं दूसरों से अलग क्या कर रहा हूँ?" अगर आप वही कर रहे हैं जो बाकी सब कर रहे हैं, तो आप उनसे आगे कैसे निकलेंगे? आप नहीं निकल पाएँगे। सीखने में समय दीजिए।

जब मैं IBM में सेल्स से जुड़ा, तब मैंने महसूस किया कि ग्राहकों से संबंध, नेटवर्किंग, यह सब बहुत ज़रूरी है। वो सब मेरे पास नहीं था। मैं एक सांस्कृतिक अंतर महसूस कर रहा था। जो लोग अमेरिका में ही जन्मे, वहीं पले-बढ़े, उनके पास यह कौशल था, मैं उसकी कमी महसूस करता था। तब मैंने सोचा कि मैं कैसे बेहतर बनूँ? और मेरी ताकत थी—सीखने की मेरी ललक और क्षमता। मैं इसमें काफ़ी कुशल था।



मैंने हर शनिवार को चार घंटे तय किए और यह ठाना कि मैं IBM की प्रणालियों और समाधानों में सबसे अच्छा बनूँगा। छह महीने में मैं सबसे बेहतर बन गया। बाकी लोग मुझसे उनके ग्राहकों को प्रेजेंटेशन देने के लिए कहते।

हमें ये सोचना चाहिए कि हम अतिरिक्त क्या कर रहे हैं? हमें खुद से की जा रही अपेक्षा से अधिक देना सीखना चाहिए। ये बुनियादी तौर पर बहुत ज़रूरी है।

अकसर लोग शिकायत करते हैं कि उन्होंने ये किया लेकिन नतीजे अपेक्षा के अनुरूप नहीं मिल रहे। लेकिन जीवन में दीर्घकाल में वही लोग सफल होते हैं, जो मेहनती, ईमानदार और समर्पित होते हैं। मेरे जीवन का एक और बड़ा सबक था — सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण। जीवन के प्रति सकारात्मक सोच रखना। हम वही बनते हैं जो हम सोचते हैं। हम

जिनके साथ समय बिताते हैं, जो पढ़ते हैं, जो देखते हैं, हमारी सोच भी उसी से प्रभावित होती है। यह सब हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित करता है। हमारे नज़रिये को आकार देता है। यदि आप किसी क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, तो आपको ऐसे दोस्तों के साथ रहना चाहिए जो उसी दिशा में सोचते हों, उसी क्षेत्र में काम करते हों। यह जीवन में आनंद और प्रेरणा लाता है।

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि मैं अब भी क्यों इतनी भागदौड़, इतनी मेहनत कर रहा हूँ, जबकि मैं अपने पहले स्टार्टअप के बाद ही रिटायर हो सकता था। मेरा जवाब होता है कि अगर मैं ऐसा न करूँ, तो फिर क्या करूँ? बीच पर जाऊँ, लेकिन वहाँ भी मैं

कुछ घंटों में ऊब जाऊँगा। मुझे पहाड़ पसंद हैं। मैं हिमाचल में पैदा हुआ हूँ और प्रकृति को पसंद करता हूँ। लेकिन कुछ ही हफ्तों में मुझे फिर से कुछ करने की इच्छा होती है, कुछ ऐसा जो दुनिया में बदलाव ला सके।

हमारा जीवन बहुमूल्य है, ये अद्भुत है। जीवन के बारे में मेरा एक सरल सा सिद्धांत है, अगर आप अपने जीवन से प्यार करते हैं, तो आप अपना समय बर्बाद नहीं करते, क्योंकि जीवन समय से ही बना है। अगर आप समय बर्बाद नहीं करते, तो आप कुछ ऐसा करते हैं जो दुनिया में बदलाव लाए। इसीलिए Zscaler में हम अपने काम को सिर्फ कारोबार की तरह नहीं देखते, उसे एक मिशन समझते हैं और वो है, दुनिया को सुरक्षित बनाना।

जब आप कोई काम करें, तो उसे "काम" की तरह न लें। उसे शौक बना लें। यह एक मानसिक स्थिति है।

अगर आपको कोई काम पसंद नहीं, तो उसे छोड़िए और कोई ऐसा काम खोजिए जिसे आप पसंद करते हैं। जब आप किसी काम को पसंद करते हैं, तो वह काम नहीं लगता, वह आनंद बन जाता है। जब मैं जीस्केलर में काम करता हूँ तो मैं उसे आनंद के रूप में देखता हूँ। शुरुआत में कुछ चीजें कठिन लग सकती हैं, लेकिन जैसे-जैसे आप मेहनत करते हैं, उन्हें साध लेते हैं, वे आसान होती जाती हैं।

एक और महत्वपूर्ण बात — बड़े सपने देखिए। आप वहाँ तक नहीं पहुँच सकते जहाँ का आपने कभी सपना भी न देखा हो। परन्तु केवल सपना देखना काफी नहीं। उसे साकार बनाने के लिए योजना और कड़ी मेहनत की ज़रूरत होती है, नहीं तो वह सपना ही बन कर रह जाता है। अगर आप किसी चीज़ को पाना चाहते हैं, तो उस पर रिसर्च करें, समय दें, आगे बढ़ें। लोगों से मिलें, नेटवर्क बनाएँ, समाधान खोजें। मैंने ZScaler में यही किया। मैंने हर चीज़ का गहन अध्ययन किया, सोचा, सीखा, और सुधारा। चीजें रातों-रात नहीं बदलती, आपको उन्हें आकार देना होता है। ये बातें जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होती हैं।

एक और बात जिसका मैंने हमेशा अनुसरण किया कि पैसे के पीछे नहीं भागना चाहिए। अगर करना ही है तो सकारात्मक परिवर्तन लाने के लक्ष्य को साकार करो। मनुष्य को जो सबसे ज़्यादा प्रेरित

करता है वह है—कुछ हासिल करने की भावना। सोचिए, “मैंने यह किया”, “मैंने इसे संभव बनाया”, यही आत्मसंतोष सबसे सच्ची प्रेरणा है। यह जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।

मेरे जीवन का शायद सबसे बड़ा सबक यही है कि हम आत्मविश्वासी बनें, लेकिन साथ ही आत्मालोचनात्मक भी रहें। आपको आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास चाहिए। आप हमेशा स्वयं पर सवाल नहीं उठा सकते। लेकिन खुद के काम का मूल्यांकन करते रहना हमें वास्तविकता के करीब बनाए रखता है। इससे हम खुद में सुधार करना सीखते हैं।

अगर आप हमेशा उन पक्षों की तलाश में हैं, जिनमें आपको सुधार करना है, तो आप इसमें सफल होंगे और बेहतर करेंगे। ये यात्रा जीवन पर्यन्त चलती है। मैं हर सप्ताह 15 से 30 मिनट इस बात पर गौर करता हूँ कि इस हफ्ते मैंने क्या बेहतर किया, मैंने कहाँ गड़बड़ की, मैं और क्या बेहतर कर सकता हूँ, क्या किया जा सकता है? हमें एक बेहतर इंसान बनने के बारे में सोचना चाहिए। बेहतर पेशेवर, बेहतर पिता, बेहतर माँ, या बेहतर बेटा बनने के बारे में सोचें। ये बातें अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

आज का दिन आपके लिए विशेष है। आपने अपनी

डिग्री प्राप्त की है। यह एक महत्वपूर्ण क़दम है। यह आपके लिए नए रास्ते खोलता है। लेकिन उन रास्तों पर चलकर आप कहाँ पहुँचते हैं, वह आपके हाथ में है। दूसरों को दोष देने के बजाय, यह सोचिए कि आप क्या कर सकते हैं, कैसे और मेहनत से, समझदारी से बदलाव ला सकते हैं।

जीवन निरन्तर बदलता है और ये तेज़ी से बदल रहा है। तकनीक बदल रही है। व्यापार के तरीक़े बदल रहे हैं। AI, ML, जनरेटिव AI के साथ बड़े बदलाव आ रहे हैं। मनुष्य अद्भुत प्राणी है, वह अनुकूलन कर सकता है। आपको भी खुद को समय के अनुरूप ढालना होगा। आपका भविष्य आपके हाथ में है। रास्ते में कई बार कठिनाइयाँ आएँगी। जीवन एक सीधी रेखा नहीं है। उतार-चढ़ाव होंगे, लेकिन इस सबके बीच अनेक अवसर भी आएँगे। जो लोग इन अवसरों का लाभ उठाएँगे, उन पर काम करेंगे, वही आगे बढ़ेंगे।

इसी के साथ, मैं आपको आपके जीवन की आगे की यात्रा के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ आमंत्रित किया, ताकि मैं आपसे अपने विचार साझा कर सकूँ। Alma Mater हमेशा विशेष होते हैं।

धन्यवाद!

श्री जय चौधरी

मुख्य कार्यकारी अधिकारी, अध्यक्ष, तथा संस्थापक
जीस्केलर (क्लाउड सुरक्षा पर विश्व की अग्रणी कंपनी)

जय चौधरी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुरा छात्र हैं। उन्होंने वर्ष 1980 में विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (अब आईआईटी-बीएचयू) से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी की डिग्री प्राप्त की थी। सुरक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्होंने अनेक ऐसे समाधान खोजे हैं, जो उभरती तकनीकों को सुरक्षित रूप से स्थापित करने में उपयोगी साबित हो रहे हैं। अपने महत्वपूर्ण योगदान के चलते वे विश्व की कई प्रमुख कंपनियों में सलाहकार की भूमिका भी निभा रहे हैं।

उन्होंने सिक्योर आईटी (SecureIT), कोरहार्बर (CoreHarbor) साइफर ट्रस्ट (CipherTrust) तथा एयरडिफेंस (Air Defense) जैसी कई सफल कंपनियों की स्थापना की है।

ZScaler, जो 16 मार्च 2018 को एक पब्लिक कंपनी बनी, क्लाउड सुरक्षा में एक वैश्विक अग्रणी कंपनी है। यह कंपनी 185 से अधिक देशों में उद्यमों और सरकारी एजेंसियों को साइबर खतरों और डेटा उल्लंघनों से सुरक्षित करती है। यह कंपनी उपयोगकर्ताओं तथा एप्लीकेशन्स के बीच त्वरित सुरक्षित सम्पर्क

बनाये रखने में मदद करती है भले ही वे किसी भी उपकरण, स्थान अथवा नेटवर्क का प्रयोग कर रहे हैं।

जय चौधरी ने यूनिवर्सिटी ऑफ सिनसिनाटी से एमबीए, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग में एम.एस., तथा इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग में एम.एस. की उपाधियाँ हासिल की हैं। उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एक्जीक्यूटिव मैनेजमेंट प्रोग्राम को पूर्ण किया है। गोल्डमैन सैक्स ने उन्हें 100 सबसे प्रभावी उद्यमियों की सूची में शामिल किया है।



न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

"I do not covet kingdom, neither heaven, nor Nirvana.
The only desire I have is to serve Disconsolate".



प्रकाशक
सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी, उ. प्र. - 221005

E-mail: probhu@bhu.ac.in
Tel...: 91-0542-2368598, 2369608